सितम्बर ९३ मूल्य-१५/-

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

गणपति महोत्सव

गोपनीय विद्या रहस्य रोमांच विशेषांक

अगला प्रधानमंत्री कौन ?

चन्द्रशेखर, आडवानी, वाजपेयी, अर्जुन सिंह, शरद पवार

या कोई और

परम पूज्य गुरुदेव का आवाहन

इस युग का सौभाग्य

यह प्रत्येक युग का सौभाग्य नहीं होता कि वह किसी जाग्रत एवं जीवित सद्गुरु का शिष्यत्व प्राप्त कर सके, और उनके पास घड़ी दो घड़ी बैठ कर ऐसी शीतलता और तृप्ति अनुभव कर सके जो शब्दों में वर्णन से परे है, किन्तु यह इस युग का सौभाग्य है कि उसके समक्ष न केवल एक जीवित जाग्रत और चैतन्य सदगुरु उपस्थित हैं, वरन वे अपने प्राणों की चैतन्यता से सराबोर कर देने के लिए निरन्तर प्रस्तुत भी हैं, और जिन - जिन तक उनकी सदेह प्रस्तुति नहीं है वे उनके आशीर्वाद की ही मूर्तिगंत स्वरूपा पत्रिका **'मंत्र - तंत्र - यंत्र विज्ञान'** द्वारा निरंतर लाभान्वित हो रहे हैं, एक ऐसी जीवित पत्रिका के द्वारा जो अध्यात्म के साथ ही साथ जीवन के सभी पक्षों को लेकर, इसे अपनी विषय - वस्तु बनाकर जन सामान्य के सर्वांगीण विकास की बात प्रस्तुत करती है, इसी अनुरूप योग,दर्शन , आयुर्वेद, रोचक -कथाएं, रहस्यपूर्ण विवरण व शोध सभी को एक साथ समाहित करेके यह निरन्तर सर्म्पूण भारत वर्ष में विस्तारित हो रही है, और जिसके विभिन्न भारतीय भाषाओं में संस्करण निकाले जाने की आवश्यकता भी अनुभव की जा रही है।

नये युग का स्वर

यह केवल आज के लिए और वर्तमान स्थितियों तक अपने आप को सीमित करके चलने वाली एक मासिक पत्रिका ही नहीं, इसका तो प्रत्येक अंक एक लघु ग्रंथ है, जिसमें समाहित ज्ञान भावी युग के स्वागत के लिए नयी सदी की प्रातः में भोर का वह उजाला है जो बस अभी - अभी फूटा है और जिसके स्वागत में गुंजरित हो उठी है समस्त दिशाएं।

एक ऐसी ही मासिक पत्रिका के निरंतर विस्तार के लिए आप सभी का आवाहन है कि आप सब भी आगे बढ़ें और अपने सहयोग से, अपनी क्रियाशीलता से इसका विस्तार कर उस आनन्द के भागीदार बनें जो हमारी '' एको ऽ बहुस्याम'' की भावना और अनिर्वचनीय आनन्द की अनुभूति है, आपका शिष्यत्व इसी में है और यही पूज्य पाद गुरुदेव की आज्ञा भी है, पूज्यपाद गुरुदेव की आज्ञा मिल जाने के बाद, उनके द्वारा आवाहन किये जाने के पश्चात, तो शायद ही कोई शिष्य हो जो अपनी क्षमता भर प्रयास न करे और हमें आपसे ऐसी ही आशा है, आपसे आशा है कि आप साथ में दिये गये प्रपत्र को भरकर भेजेंगे ही, जो प्रकट करेगा कि आप सचमुच शिष्यत्व अपने अन्दर रखते ही हैं और वह प्रपत्र आपकी गुरुदक्षिणा भी होगा, इसी विश्वास के साथ मैं आप सभी का पुनः - पुनः आवाहन कर रहा हूं

पूज्य गुरुदेव का संदेश

इन पंक्तियों को आप इस परिवार की बात भी मान सकते हैं और यदि श्रद्धा पूर्वक विश्वास करें तो यही पूज्यपाद गुरुदेव की आज्ञा है कि चाहे आप युवक हों, चाह व्यापारी , चाहे नौकरी पेशा हों या किसी भी प्रकार से चेतना युक्त या प्रबुद्ध हों, आप में से प्रत्येक जोधपुर के पते पर इस कार्ड को भर कर भेजें और इस पर लिख दे कि मैं पूरे वर्ष भर हर माह पत्रिका मगांऊंगा।, आप अंकित कर दें कि मैं इतनी संखया में पत्रिकाएं निष्ठा पूर्वक वी.पी. आने पर छुड़वा लूंगा और पत्रिकाओं की बिक्री से प्राप्त होने वाली धन राशि से अगले माह की पत्रिकाएं मंगा लूंगा, आप आज ही पत्रिका में प्रकाशित कार्ड को भरकर भेज दें, इस कार्ड को भेजने में किसी प्रकार का डाक - व्यय करने की आवश्यकता नहीं है लेकिन इस बात का ध्यान रखें कि आपकी वी. पी. पी. वापस न लौटे क्योंकि वी.पी. पी. वापस लौटने का तात्पर्य होगा अपने गुरु से छल और कृतघ्नता।

पूज्यपाद गुरुदेव आपको आशीर्वाद देते हैं नयी सदी में छलांग लगाने के लिए, नव युग के निर्माण के लिए, प्रत्येक मानव को पूर्णता देने के लिए, हम सभी गुरुभाई आपके प्रपत्र की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

- मंत्र तंत्र यंत्र परिवार

अजय किशोर उत्तम बी.ए. इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद

आनो भद्रा : क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और
भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

प्रार्थना

धनं धान्य रूपं आरोग्य द्रव्यं
पराक्रमो पुत्र पौत्रो वदान्यै
पत्नी गृहं पूर्ण वैभव प्रयच्छं
सर्वस्व प्राप्त्यं भूतनाथं नमामि।।

हे भूतनाथ, हे श्मशान् वासी! हे सदाशिव! केवल मात्र आपकी साधना से ही धन, धान्य, रूप, आरोग्य,द्रव्य, पराक्रम, पुत्र-पौत्र, पत्नी-सुख और पूर्ण वैभव प्राप्ति संभव है।

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस मंत्र -तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका में प्रकाशित लेखों से संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी स्थान, नाम या घटना का किसी से कोई संबंध नहीं है। यदि कोई घटना नाम या तथ्य मिल जाय तो उसे संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु संत होते हैं अतः उनके पते या उनके बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना संभव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक ,मुद्रक या संपादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बारे में, असली या नकली के बारे में, अथवा प्रभाव या न प्रभाव होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें, सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद - विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ आदि की जिम्मेवारी साधक की स्वयं होगी तथा साधक कोई ऐसी उपासना जप या मंत्र प्रयोग न करे जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पत्रिका में प्रकाशित एवं विज्ञापित आयुर्वेदिक औषधियों का प्रयोग पाठक अपनी जिम्मेवारी पर ही करें। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी, सन्यासी या लेखकों के मात्र विचार होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है, पत्रिका में प्रकाशित सामग्री आप अपनी इच्छानुसार कहीं से भी मंगा सकते हैं। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया है जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री को पुस्तकाकार या अन्य किसी भी रूप में डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली के नाम से प्रकाशित किया जा सकता है। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हो) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस संबंध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस संबंध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है कि वह संबंधित लाभ तुरंत प्राप्त कर सके। यह तो धीमी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस संबंध में किसी प्रकार की कोई आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस संबंध में किसी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

विशेष तंत्र रक्षा कवच

एक महत्वपूर्ण और आपके जीवन के लिए आवश्यक एवं सौभाग्यदायक योजना
जीवन में रोजमर्रा की कठिनाइयों के साथ - साथ कुछ अन्य कठिनाइयां भी होती हैं

- सारी मेहनत के बाद पर्याप्त धन का आगमन न होना
- दुकान पर ग्राहकों का न आना, व्यापार बंध जाना
- घर में सदस्यों के बीच लड़ाई झगड़े की स्थितियां बनते रहना
- पति या पत्नी का किसी अन्य स्त्री या पुरुष में आसक्त हो जाना और सभी प्रयासों के बाद भी आपसी मतभेद तीव्र
- स्वयं का अथवा परिवार के किसी सदस्य का रहस्यमय बीमारी से ग्रस्त होना और डॉक्टरों की समझ में कोई उपाय न आना
- परिवार में रहस्यमय ढंग से मृत्यु होना

स्त्री के स्वस्थ होने के बाद भी बार - बार गर्भपात हो जाना, डिप्रेशन, सही किया गया कार्य भी उल्टा पड़ जाना, आकस्मिक संकटों का बराबर आते रहना • जीवन की अनेक ऐसी विपदायें होती हैं जिनका कोई भी सही कारण समझ में नहीं आता और तब इसका सीधा सा अर्थ है कि

कहीं आप पर किसी ने तंत्र प्रयोग तो नहीं करवा दिया

तो

क्या कोई उपाय संभव है?

निश्चित रूप से, तांत्रिक प्रयोगों की पूर्व रक्षा एवं ऐसा प्रयोग हो जाने के बाद उसके निराकरण के लिए तो बस एक ही निश्चित उपाय है

विशेष तंत्र रक्षा कवच

जो संस्थान में विद्वान,तांत्रिक,मन्त्रज्ञाता पंडितों द्वारा पीड़ित व्यक्ति विशेष के लिये सिद्ध किया जाता है,यह कार्य वास्तव में जनहितार्थ आवश्यक परिस्थितियों में ही किया जाता है --

- न्यौछावर (अनुष्ठान खर्च) - ११,००० रुपये मात्र
- धनराशि अग्रिम बैंक ड्राफ्ट या मनीआर्डर से भेज दें
- इस कार्य हेतु नीचे दिये संस्थान के दिल्ली कार्यालय अथवा जोधपुर केन्द्र पर व्यक्तिगत भेंट भी कर सकते हैं।

विशेष :- इस संबंध में पत्रिका के प्रथम पृष्ठ पर छपे सभी नियम मान्य होंगे।

सम्पर्क : - दिल्ली: - ३०६, कोहाट इन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली- ३४ , फोन : ०११ - ७१८२२४८
जोधपुर :- मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.), फोन : ०२९१ - ३२२०६

विषय - सूची

रहस्य - रोमांच

सद्गुरुदेव

स्थायी - स्तम्भ

मंथन

दीक्षा

साधना

आयुर्वेद और योग

पितृ - पक्ष

सम्पादकीय

आज भारत की प्रायः सभी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में तंत्र-मंत्र विषयक रुझान, लेखन व चिन्तन का क्रम आरम्भ हो चुका है, केवल यदा - कदा लेखन ही नहीं विशेषांकों की कड़ियां भी आरम्भ हो चुकी हैं, समस्त भारत में अपनी प्राचीन विद्याओं के प्रति सम्मान और अभिरुचि का वर्धन हुआ है। इस स्थिति में खटकने वाली बात केवल इतनी ही है कि अनेक पत्रिकाओं द्वारा लेखन का उद्देश्य केवल अपने पाठकों को नये प्रकार का रोमांच देना होता है। भूत-प्रेत (या सही संज्ञा दें तो इतर योनि वर्ग) के प्रभावों, उपद्रवों की चर्चा करने, उनसे पीड़ित कुछ व्यक्तियों का इन्टरव्यू लेने से ही,इस विषय का अध्ययन सम्पूर्ण नहीं होता। **मृत्यु के पश्चात का संसार क्या है, मानव योनि से भिन्न इतर योनियां क्या हैं और कौन-कौन सी हैं, उनका मानव जीवन पर क्या प्रभाव है**, मृतआत्माएं क्यों दूषित, पीड़ित और व्यथित सी भटकती रहती हैं, उनकी मुक्ति का क्या उपाय है -- ये कुछ एक ऐसे विषय हैं जिन पर प्रायः चर्चा नहीं की जाती, जबकि इन पर चर्चा होना ही प्राथमिक व अत्यावश्यक है। इस स्थिति में हमारे लिये यह आवश्यक हो गया था कि हम अपने पाठकों को इस विषय में वस्तुस्थिति से परिचित कराएं। सांगोपांग अध्ययन करके क्रम - बद्ध ढंग से इस क्षेत्र का सम्पूर्ण ज्ञान उनके समक्ष रखें, इसी चिन्तन का प्रमाण है यह **''रहस्य रोमांच विशेषांक''**। इस क्षेत्र की कतिपय साधनायें अपनी पद्धति में अलग ढंग और शैली की होने के कारण, उन्हें श्मशान भूमि में ही सम्पन्न किये जाने के कारण भय वश और भ्रम वश समाज के सम्पर्क में कभी भी नहीं आ सकीं और रही सही कसर तथाकथित अघोरी वर्ग ने अपने अटपटे आचरण से पूरी कर दी। इस तरह से एक श्रेष्ट ज्ञान जो मानव जीवन के लिए अत्यन्त लाभप्रद हो सकता था, वह गोपनीय और दुर्लभ हो गया। **भूत-प्रेत एवं इसी प्रकार की अन्य योनियां केवल भय और विनाश की ही हेतु नहीं हैं, इनके रचनात्मक उपयोग भी संभव हैं, इस बात को हमने तथ्यों,विवरणों एवं प्रामाणिक साधनाओं के माध्यम से स्पष्ट किया है इसी अंक में . . . . . .**

वर्तमान में यह विश्वव्यापी विषय हो गया है। विद्वानों ने परामनोविज्ञान के माध्यम से पहले ही इस क्षेत्र में कार्य आरम्भ कर दिया था, जिसे वैशिष्ट्य मिला, "ऑकल्ट सांइस" के अन्तर्गत किये जाने वाले अध्ययनों एवं परिणामों के माध्यम से। रोमांचक एवं मनोरंजक साहित्य के साथ ही साथ शोध परक साहित्य के रूप में पाश्चात्य विद्वानों ने इस क्षेत्र में इतना अधिक साहित्य रच डाला है कि केवल उन्हीं से एक पृथक व विशाल पुस्तकालय की स्थापना की जा सकती है। कुछ पुस्तकें तो अपनी रोचकता और यथार्थ वर्णन के कारण समस्त विश्व के विद्वानों व आलोचकों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर चुकी हैं।

वस्तुतः इस विषय की विशदता के समक्ष पत्रिका का कलेवर अत्यंत लघु है, फिर भी हम ने क्रम बद्ध रूप से स्पष्ट किया है कि किस प्रकार से पुनर्जन्म,मृत्योपरान्त जीवन, भूत-प्रेत योनि, उनकी अतृप्तावस्था, जीवन के उपरान्त सद्गति अथवा दुर्गति - सब एक ही विषय के अनेक पक्ष हैं, जो कहीं परामनोविज्ञान के विषय बने तो कहीं ऑकल्ट सांइस के। आपकी समालोचना की तो हमें सदैव प्रतीक्षा रहती है, इस बार आपसे संबंधित अनुभूतियों की भी प्रतीक्षा रहेगी।

आपका अपना

नन्दकिशोर श्रीमाली

अगला प्रधान मंत्री कौन ?

चन्द्रशेखर श्री राव आडवानी शरद पवार विजयाराजे सिंधिया वी.पी. सिंह अर्जुन सिंह

भा रत के इतिहास में यह पहली बार हुआ है कि जब चुनावों के बाद केन्द्रीय सरकार बनी तब वह अल्प मत में थी और दूसरे दलों की सहायता से चल रही थी और आज भी वह अल्प मत में है और चल रही है।

भारत के घटना क्रम को देखते हुए यह आवश्यक हो गया है कि ज्योतिष की दृष्टि से यह देखें कि अगला प्रधान मंत्री कौन हो सकता है। इस समय हमारे सामने कई नाम उभर कर आ रहे हैं। श्री राव, अर्जुन सिंह, शरद पवार, चन्द्रशेखर, अटल बिहारी बाजपेयी, लालकृष्ण अडवानी या इसके अलावा भी कोई हो सकता है।

मैं तो यहां ज्योतिष के विवेचन के आधार पर ही स्पष्ट कर रहा हूं कि आने वाले समय में देश का नेतृत्व इनमें से ही कोई करेगा या कोई अन्य होगा। हो सकता है कि इनमें से ही कोई हो पर यदि कामराज जैसे धुरंधर राजनीतिज्ञ के सामने मामूली सी लड़की इन्दिरा गांधी सब के ऊपर छलांग लगाकर प्रधान मंत्री बन सकती हैं राजनीति में बिना रूचि क़े भी हवाई जहाज चलाने वाले पायलेट राजीव गांधी प्रधान मंत्री बन सकते हैं और सर्वथा राजनीति से सन्यास का विचार किये हुए श्री राव प्रधान मंत्री बन सकते हैं।

श्री चन्द्रशेखर

श्री चन्द्रशेखर एक बार प्रधान मंत्री बन चुके हैं और अगर इनकी जन्म कुण्डली का विवेचन किया जाय तो १२.१०.६४ तक इनको बुध की दशा में राहु का अन्तर चलेगा। इसके बाद में बृहस्पति गतिशील होगा। ज्योतिष की दृष्टि से राजनीति में सफलता के लिए राहू का प्रबल होना जरूरी होता है, इनकी कुण्डली में राहू और मंगल दोनों बुध के घर में है और बुध स्वयं कमजोर है, आने वाले समय में भी राहू बहुत अधिक प्रबल नहीं बनेगा पीछे के समय में जब राहू और मंगल का पारस्परिक संबंध बना था तभी ये कुछ समय के लिए प्रधान मंत्री बन गये थे और ज्यों ही यह दृष्टि संबंध हटा त्यों ही इनको उस पद से हटना पड़ा।

बु गु सू ९ चं ८ शु ७ श ६ ५ १० के ४ रा ११ १ ३ १२ मं २

(श्री चन्द्रशेखर)

१२ अगस्त ६३ को तुला में गुरु आयेगा और वह लग्न को देखेगा, यह स्थिति व्यक्ति को स्वयं को प्रधान मंत्री नही बना सकती, यह अलग बात है कि मार्च ६४ से अगस्त ६४ के बीच में ये उस निर्णायक स्थिति में आ जायेंगे जो प्रधान मंत्री बनाता है और ये जिसके पक्ष में भी होंगे वही प्रधान मंत्र बन सकेगा। पर साथ ही साथ इनका जन्मकुण्डली में सूर्य उच्च का होकर लग्न में है, ये और

केतु भाग्य स्थान में महत्वपूर्ण है, अतः राजनीति के क्षेत्र में ये अत्यधिक लोक प्रिय हो सकेगें आनेवाले समय में जब केतु की महादशा चलेगी तो प्रसिद्धि सम्मान, यश की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ होंगे और जय प्रकाश नारायण, गांधी जैसी लोकप्रियता अर्जित कर सकेंगे । यह सात वर्ष इनके जीवन के सर्वाधिक महत्वपूर्ण होंगे।

लाल कृष्ण आडवानी

पिछले तीन चार वर्षों में लाल कृष्ण आडवानी भारतीय जनंता पार्टी में सर्वाधिक महत्वपूर्ण व्यक्ति बने है और बंगलोर अधिवेशन के बाद तो भारतीय जनता पार्टी का सारा उत्तरादायित्व इनके कंधो पर है।

इनकी जन्म कुण्डली का अध्ययन किया जाय तो ऐसा प्रतीत होता है कि जब-जब राहू और शनि की युति या दृष्टि संबंध हुआ है अथवा इन दोनों से मंगल का तादात्म्य बना है, इनको अधिकार या मंत्री पद मिला है, पर इसके बाद ही इनको जेल जाना पड़ा है या संघर्ष करना पड़ा है।

निकट भविष्य में बृहस्पति तुला का आयेगा और शनि, कुंभ राशि का होने के कारण गुरु की उस पर पूर्ण दृष्टि रहेंगी यह गुरु, शनि के प्रभाव को कमजोर ही करता है।

इनका अनुकूल समय फरवरी ९५ से आता है और उस समय ये कुछ समय के लिए प्रधान मंत्री हो सकते हैं, परन्तु उस पद पर ज्यादा समय तक नहीं टिकेंगे और स्वास्थ्य अथवा पार्टी संघर्ष के कारण, किसी और के लिए प्रधान मंत्री पद छोड़ना पड़ेगा।

यद्यपि आने वाला समय इनके स्वास्थ्य के लिए थोड़ा कमजोर है, पार्टी संघर्ष बढ़ेगा पर फिर भी यदि इनके जीवन मे राहू की प्रबलता बन जाय तो निश्चय ही ये काफी समय तक प्रधान मंत्री रह सकते हैं, अन्यथा सम्भावना नहीं के बराबर है।

यों मैं अगले किसी अंक में जब मध्यावधि चुनाव के बाद जो राजनीतिक स्थिति बनेगी उसका विवेचन करूंगा तब इनके बारे में ज्यादा स्पष्ट कर सकूंगा।

श्री वी. पी. सिंह

मुझसे कई बार पूछा गया है कि क्या वी.पी. सिंह पुनः प्रधान मंत्री बनेंगे, मैंने उनकी जन्मकुण्डली का अध्ययन किया है, उनकी सम्भावना है ही नहीं। नवम्बर ९३ के बाद उनको किडनी और मूत्राशय से संबंधित समस्या बढ़ेगी और इस वजह से ये ज्यादा गतिशील नहीं हो सकेंगे ऐसा ज्योतिषीय दृष्टिकोण से प्रतीत होता है।

श्री ज्योति बसु

कुछ ने ज्योति बसु के बारे में भी प्रधान मंत्री होने की भविष्यवाणी की है पर उनकी कुण्डली में मंगल नीच राशि में है और राहू, गुरु की युति होने के कारण वे बंगाल में ही सिमट कर रहेंगे। यद्यपि प्रधान मंत्री को बनाये रखने में इनका सहयोग रहेगा परन्तु ये स्वयं देश के प्रधान मंत्री बने, ऐसी सम्भावना नहीं है।

राज माता सिंधिया

विजयाराजे सिंधिया की जन्मकुण्डली का मिथुन लग्न है और इस समय शनि की दशा में मंगल का अन्तर चल रहा है। कुछ समय बाद गुरु, तुला में आयेगा और वह लग्न पर दृष्टि रखेगा। अतः यह स्थिति इनके लिए अनुकूल प्रतीत नहीं होती अगले चुनावों में इनका कार्य महत्वपूर्ण होगा। भारतीय जनता पार्टी के लिए ये बहुमूल्य सिद्ध होंगी परन्तु आने वाले समय में बुध की महादशा आ रही है और बुध, शुक्र के घर में है अतः इनके प्रधान मंत्री बनने के आसार लगभग नहीं के बराबर है।
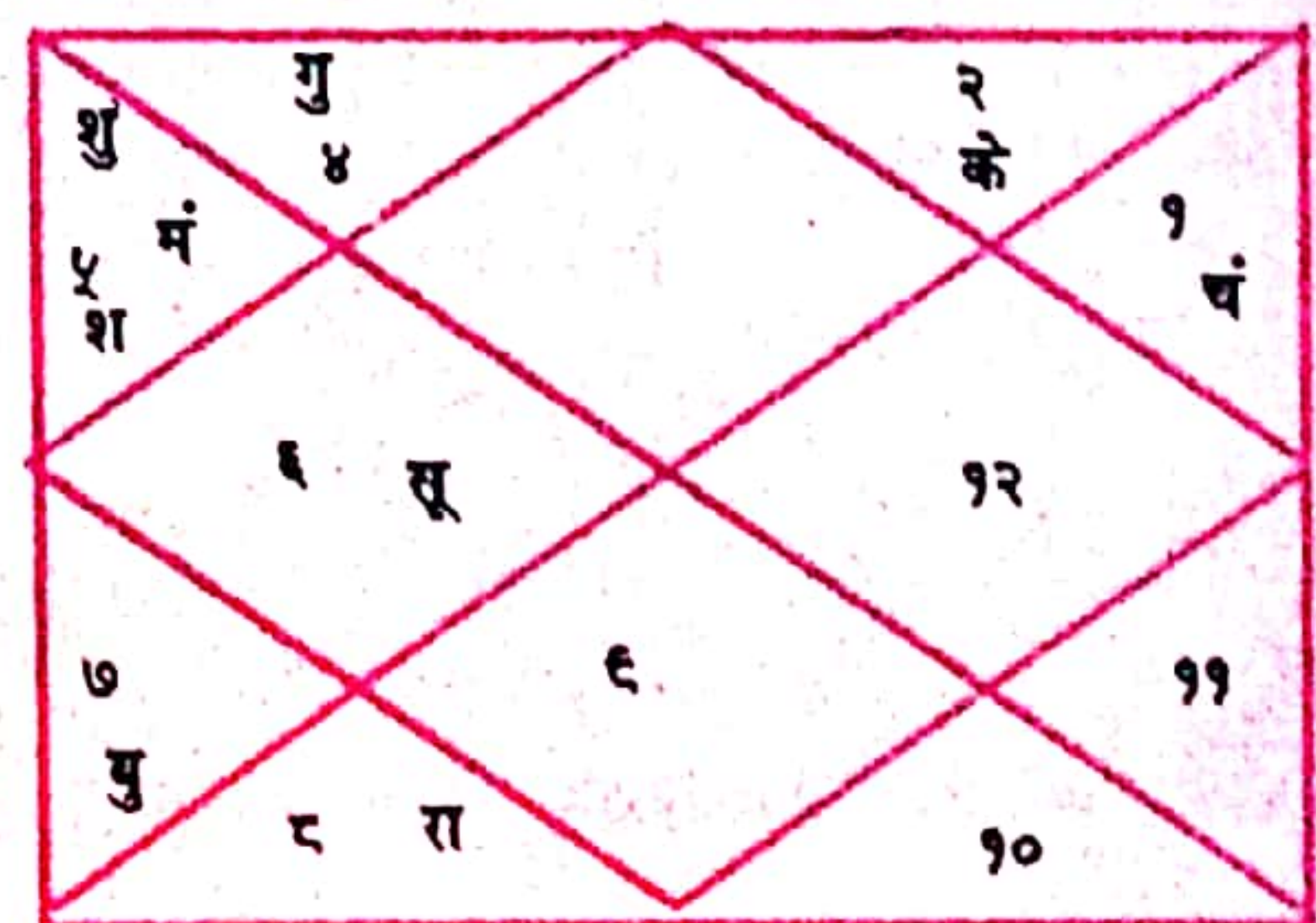
(राज माता सिंधिया)

अगले अंक में दो - तीन और नामों का विवेचन कर यह स्पष्ट कर दूंगा कि आने वाले समय में **भारत का प्रधान मंत्री कौन होगा?**

--शेष अगले अंक में

--दिव्य चक्षु

अद्भुत और रोचक विवरण मिलने लग जाते हैं कहीं भी भूत - प्रेत का नाम लेते ही और कैसे कहें कि मृत्यु के उपरान्त व्यक्ति समाप्त हो जाता है . . . फिर भी भूत - प्रेत तो भूत प्रेत ही हुए, प्रश्न शेष रह जाता है कि . . .

क्या भूतों का अस्तित्व होता है?

यदि आप किसी गांव के हैं और बचपन में किसी पोखरे में नहाने जाते रहे हों या बांसों की झुरमुट में लुका- छुपी खेलने जाते रहे हों तो आपको याद आता रहा होगा कि आपके घर के बड़े - बूढ़े आपको रोकते रहे होंगे -- अमुक स्थान पर मत जाओ, उस पेड़ के नीचे मत खेलना, और आप समझ नहीं पाते होंगे कि ऐसा क्यों? यदि आप शहर के हों तो भी आपने अखबारों में पढ़ा होगा कि अमुक मकान में कोई किरायेदार एक माह से अधिक नहीं रह पाता या किसी घर में अचानक आग लग जाने की घटनाएं पढ़ी होंगी, तो कभी पत्थरों की वर्षा की बात पढ़ी होंगी, कहीं पूरे-पूरे परिवार का एक साथ दुर्घटना में मर जाने का समाचार पढ़ा होगा। मुख्य प्रश्न यह नहीं है कि क्या भूतों का अस्तित्व होता है या नहीं? प्रश्न यह है कि आखिर क्या कारण है इन विचित्र घटनाओं और भयप्रद बातों का।

भारतीय जनमानस सदैव से यह मानता रहा है कि जिस व्यक्ति की अकाल मृत्यु हो, वह मरने के बाद भूत बन जाता है अथवा **जिस व्यक्ति का मरणोपरांत उचित रूप से संस्कार न किया जाय, तो वह भी अतृप्त भटकता रहता है।** भारतीय मानस में छाई यह बात सर्वथा निराधार नहीं है। इसके पीछे तथ्य है, निश्चित रूप से इतर योनियां होती ही हैं चाहे वह भूत की हो, प्रेत की हो, राक्षस की हो, या ब्रह्म राक्षस की। अन्तर यह होता है कि जहां मनुष्य पंचभूतात्मक होता है, वहीं इतर योनियां चतुर्वर्गात्मक या त्रिवर्गात्मक होती हैं, उनमें भूमि तत्व का अभाव होता है, भूमि तत्व का अभाव होने से ही उनकी गति और क्षमताएं असीम हो जाती हैं। भूमि तत्व के अभाव से ही वे दृष्टि गोचर भी नहीं होती हैं।

अपूर्ण इच्छाएं, वासनाएं ही कारण होती हैं, व्यक्ति को इन योनियों में भटकाने की। प्रायः किसी दुर्घटना वश अथवा हत्या आदि से व्यक्ति की असमय मृत्यु हो जाती है और ऐसे में जो मोह अपने परिवार के प्रति अथवा अपनी वासनाओं के प्रति समाप्त नहीं हुआ होता, वह उसे विवश कर देता है कि वह भूत-या प्रेत योनि में जा पड़े। ऐसे परिवारों में जिनमें कोई असामयिक मृत्यु हो गयी हो उनमें बहुधा इस तरह की बातें सुनने या देखने को मिलती हैं कि उस परिवार का कोई सदस्य विभ्रमित हो जाय, पागल हो जाय अथवा असामान्य व्यवहार करने लग जाये। इसका सीधा सा कारण है कि मृत आत्मा परिवार के सबसे कोमल वृत्ति वाले सदस्य को अपना माध्यम बना लेती है और इसके द्वारा जहां एक ओर परिवार में रहने की अपूर्ण इच्छा पूरी करती है, वहीं ऐसी योनियों में गये व्यक्तियों के लिए मर्यादा का कोई बंधन नहीं रहता। उनकी कामेच्छा बढ़ जाती है, जिसकी पूर्ति वे किसी को भी माध्यम बना कर करते हैं। ऐसे योनियों में गये व्यक्तियों के लिए मां,बहन,बहू-बेटी कोई रिश्ते अर्थ नहीं रखते और वे अपनी काम संबंधी इच्छाएं तथा भोजन संबंधी इच्छाओं की पूर्ति करने के लिए कुछ भी करने को तैयार रहते हैं।

इसी से भारतीय धारणा सदैव से यही रही है कि व्यक्ति अपने को तृष्णाओं से मुक्त रखे।

भूतों के अस्तित्व के संबंध में पूरे विश्व में शोध चल रहे हैं और सत्य तो यह है कि तथा कथित आधुनिक व विकसित माने जाने वाले पश्चिमी देशों में भूत-प्रेत संबंधी विश्वास हमारे समाज से कहीं अधिक दृढ़ हैं। **जितनी रहस्यात्मकता, विचित्रता पश्चिम के देशों में जुड़ी है, उसके सामने तो भारत की घटनाएं नगण्य हैं।** इसका एक कारण यह भी है कि जहां विदेशों में वहां के निवासियों ने इसे मात्र कौतूहल व रोमांच समझ कर अपने जीवन में स्थान दिया, वहीं भारत में विवेचन किया गया, यह समझने का प्रयास किया गया कि क्या कारण होते हैं कि जो व्यक्ति को मृत्यु के उपरान्त ऐसी योनियों में ढकेल देते हैं, ऐसी योनियों का चरित्र क्या होता है, ऐसी योनियों में जाने पर क्या कष्ट होता है और व्यक्ति ऐसी योनियों में न जा पड़े, इसके लिये क्या उपाय किये जाने चाहिए? इसके साथ ही साथ ऐसे क्या उपाय किये जांय कि कोई व्यक्ति इन योनियों से बाधा ग्रस्त न हो। हमारे यहां इसको मात्र सनसनी पूर्ण कथाओं का विषय नहीं बनाया गया।

भारतीय परम्पराओं में गर्भाधान संस्कार से लेकर अन्त्येष्टि संस्कार तक विधान रचे गये, और अन्त्येष्टि संस्कार के उपरान्त भी मृत व्यक्ति को विस्मृत नहीं किया गया, वरन उसकी वार्षिक श्राद्ध एवं वर्ष में पितृ पक्ष के नाम से एक पूरा पक्ष ही पूर्वजों के प्रति सम्मान व उनको तृप्ति देने के लिये रचा गया। यह सब व्यवस्थाएं केवल पुरोहित वर्ग के जीवन यापन हेतु नहीं रची गयीं वरन इसके पीछे सूक्ष्म चिन्तन थे। इसके पीछे चिन्तन था कि व्यक्ति जिस पिण्ड से निर्मित हुआ है और जिस पिण्ड की सूक्ष्मता उसके शरीर में विद्यमान है, उसे वह सदैव तृप्त रखे, जिससे उसे सूक्ष्म रूप से निरन्तर परिपुष्टि मिलती रहे। पिण्ड दान आदि इसी का बाह्याचार है। **अपने पूर्वजों के प्रति तर्पण, दान आदि करते रहने से जहां एक ओर उन्हें सूक्ष्म जगत में तृप्ति मिलती है और वे मुक्त होते हैं, वहीं अपने वंशजों के प्रति कृपालु हो उठते हैं।** यह भी व्यवस्था है कि कोई व्यक्ति मृत्यु के उपरान्त ऐसी इतर योनियों में न जा गिरे। ऐसी योनियों का संसार अत्यंत ही पीड़ादायक है। **यह संसार जो छल कपट से भरा है और जिससे ऊबकर व्यक्ति प्रायः आत्महत्या कर लेता है, वह यह नहीं जानता कि इस जगत से परे जो जगत है, उसमें इससे भी ज्यादा व्यभिचार, छल-कपट हिंसा है।** इतर योनियों के संसार को समझा जाय तो वे मानव से ज्यादा मुक्ति के लिए छटपटाती हुई योनियां हैं। मानव के पास तो तब भी यह शरीर है, अपनी बहुत कुछ गतिविधियों को संचालित करने हेतु, किन्तु उनके पास तो वह भी नहीं।

निरन्तर अपनी मुक्ति के लिए छटपटाती हुई अपनी अपूर्ण वासनाओं की तृप्ति के लिए भटकती, कभी इसको माध्यम बनाती हुई तो कभी उसको माध्यम बनाती हुई, योनि का ही नाम है **"भूत"**। ■

प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का एक पत्र !

मृत आत्माओं की उपस्थिति को स्वीकार करता एक रोचक विवरण

राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली
३ जनवरी, १९५५

प्रिय श्री ....,

आत्म विज्ञान संबंधी पश्चिमी देशों में भी आजकल बहुत अनुसंधान हो रहा है। मैंने जो स्वयं देखा और अनुभव किया है उसका थोड़ा जिक्र कर देना अच्छा होगा... एक सज्जन हैं जिनके माध्यम से कोई महान आत्मा आकर संदेश दिया करती है और वे संदेश अद्भुत रीति से आते हैं, जिनको किसी तरह से धोखा या इन्द्रजाल नहीं कहा जा सकता....... देखते- देखते पेंसिल उठ कर खड़ी हो जाती है और कागज पर चक्कर लगानी शुरु हो जाती है, तथा कागज कुछ देर के बाद उलट जाता है, अगर संदेश पूरा नहीं हुआ रहता तब या तो कागज फिर कुछ देर के बाद स्वयं उलट जाता है और उस पर पेंसिल लिखती है या फिर कागज नहीं रहा तो फिर पेंसिल नहीं उठती, फिर दूसरा कागज रख दिया जाता है और उस पर पेंसिल उठती है और संदेश लिख देती है, संदेश समाप्त हो जाने पर पेंसिल फिर नहीं उठती। यह स्वयं मैंने कई बार अपने आंखों से देखा है। वहां बैठे - बैठे सामने कुछ चीजें स्वयं आकर टपक पड़ती है या आस-पास में पायी जाती है। जैसे मूंगा, छोटे - छोटे यंत्र, ताबीज और कभी- कभी मणि भी जैसे - नीलम, पुखराज इत्यादि ....

यह सब चूंकि मैं जानता था अतः मेरी दिलचस्पी इस पुस्तक में हुई ....

आपका - **राजेन्द्र प्रसाद**

(-- "भटकती आत्माएं" लेखक- डॉ. ब्रज मोहन, पुस्तक से साभार)

तुम जीवित कैसे हो?

वहां तो जो कभी भूले से ही चला भी गया तो

फिर आठ-दस दिन से अधिक जी ही नहीं सका

भूत

एक अविश्वसनीय सी लगती

लेकिन सत्य घटना . . .

तो मेरे घर का सारा काम काज करते हैं

मेरी आयु १८-१६ वर्ष के मध्य रही होगी और तभी विश्वविद्यालय की ओर से एन.सी.सी. क्लाइम्बिंग (पर्वतारोहण) टीम में मेरा भी चुनाव हो गया। मैं बेहद खुश था क्योंकि जहां एक ओर मुझे अपना मनपसंद विषय मिला था, वहीं पहाड़ों पर घूमने का मौका भी। हम लोगों की टीम के लिए जो जगह निर्धारित की गयी वह थी नैनीताल। कुमायूं का एक स्थान जो कि अपनी खूबसूरती के लिए "पहाड़ों की रानी"कहा जाता है, और सचमुच जहां की पहाड़ियां बस मिट्टी की ढेर नहीं, प्रकृति के कई रंगों को समेट कर दुल्हन सी लजीली बनी हैं, ऐसी ही पहाड़ियों से घिरी नैनीताल नगरी में वहां के भीड़-भाड़ और पर्यटकों के कोलाहल से थोड़ा हटकर कालाढूंगी की ओर जाने वाली सड़क के पास जहां खड़ी चट्टानों की बहुतायत है, वहीं पर हम सभी का 'रॉक क्लाइम्बिंग कोर्स' शुरू हुआ। प्राकृतिक सौन्दर्य से भरी उस घाटी नुमा जगह में लगता ही नहीं था कि थोड़ी ही दूर पर आकर्षक वेश- भूषा और भौतिकता के वातावरण में डूबे पर्यटकों की भीड़ से भरा नैनीताल है। पूरी तरह से ऐसा रहस्यात्मक वातावरण जैसा कि रोमांचक घटनाओं की किताबों में पढ़ा था। दो तीन दिन बाद ही अचानक मेरा पांव एक चट्टान से फिसल जाने के कारण उसमें हल्की सी मोच आ गयी, यद्यपि मै कोई विशेष घायल नहीं हुआ था फिर भी मेरे इंस्ट्रक्टर ने मुझे आगे भाग लेने से मना कर दिया और जब तक पूरी तरह से स्वस्थ न हो जाऊं तब तक आराम करने को कहा।

वहीं से थोड़ी दूर पर एक होस्टल नुमा भवन में हम लोगों का दल टिका था,जहां का चौकीदार चन्दनसिंह वयोवृद्ध होते हुए भी मेरा मित्र बन गया था। मेरा समय उसके साथ पहाड़ की घटनाएं सुनने में एक - दो दिन तो आराम से कटा, तीसरे दिन मैं आस - पास घूमने निकल गया। सामने की घाटी वहां मिलने वाली बिच्छूघास और विचित्र प्रकार के ऐसे पेड़ों से भरी थी कि जो देखने में फन उठाये सर्प जैसे लगते थे। घरेलू पशु भी उस घाटी में जाने से हिचकते थे, लेकिन मैं अपने भारी जंगल बूट पहन कर उधर चला गया। कुछ देर तक तो मैं आसपास घूम कर फूलों आदि के नमूने एकत्र करता रहा फिर अचानक मेरे मन में आया कि क्यों न मैं घाटी के उस पार पर्वत के पीछे जाकर देखूं कि वहां से नैनीताल का सौन्दर्य और झील का आकार कैसा लगता है। मैंने लौटकर चन्दन सिंह से यह बात कही और उससे कहा कि यदि मेरे दल का कोई सदस्य मुझे ढूंढता हुआ आये तो उसे बता देना कि मैं सामने वाले पर्वत शिखर तक जा रहा हूं, न जाने क्यों यह बात सुनते ही उस बूढ़े चौकीदार का मुंह उतर गया और वह मुझसे हठ करने लगा कि मैं उधर न जाऊं। मैंने यह समझा कि शायद वह उस घाटी में भरी जहरीली घासों और बिच्छुओं की संख्या अधिक होने से मुझे रोक रहा होगा और मैं उसकी बातों को सुनी-अनसुनी कर उधर ही बढ़ गया था। चढ़ते-चढ़ते मुझको लगभग एक बज गये थे। गर्मी के दिन थे और चढ़ाई पर

चढ़ने के कारण मुझे हल्का पसीना भी आ गया, तब तक मैं पर्वत की चोटी पर पहुंच ही चुका था, सोचा कि क्यों न थोड़ी देर रुककर आराम कर लूं फिर आगे चलूं। अपने किट बैग को संभाल, पसीने को पोंछ जब मैंने अपने वाटर बैग को देखा तो उसमें बस एक बार पीने भर का ही पानी शेष बचा था। मेरे लिए आवश्यक हो गया था कि मैं अपनी बोतल को जल्दी से जल्दी पुनः भर लूं और मैंने चोटी की ओर बढ़ने के बजाय बगल से जाती हुई पगडन्डी पर अपने पांव बढ़ा दिये। पगडन्डी से आभास हो रहा था यह कभी मार्ग रहा है और इस पर आगे जाकर कोई बस्ती या पहाड़ी सोता भी मिल सकता है। थोड़ी दूर जाने पर मैंने देखा कि अत्यन्त सुन्दर पुरानी शैली की काटेज चमक रही है धूप की किरणों में, जहां चहल-पहल भी दिखाई पड़ रही थी। मैंने उस ओर तेजी से अपने कदम बढ़ा दिये।

पास जाने पर देखा कि एक अधेड़ आयु का भव्य व्यक्तित्व लिये व्यक्ति कुर्सी पर बैठा है, जिसने कुर्ता और चूड़ीदार पैजामा पहन रखा है, उसकी वेश-भूषा, उंगलियों में पड़ी बहुमूल्य रत्नों की अंगूठियां, कानों में कुण्डल सभी कह रहे थे कि हो न हो यह कोई राजवंश से संबंधित व्यक्ति है, उसके चेहरे पर अत्यन्त सौम्य मुस्कान और रोबदाब झलक रहा था। वह बेफिक्री से पाइप पी रहा था और एक व्यक्ति उसके कंधों को दबा रहा था। मेरे पास जाने पर वह मुस्कराया, जैसे मेरा स्वागत कर रहा हो। मैंने पास जाकर उसका अभिवादन किया और उससे कहा कि मैं थोड़ा पानी चाहता हूं। उसने अपने एक नौकर को कुर्सी लाने की आज्ञा दी और मुझसे अंग्रेजी में बैठने के लिए कहा। तब तक उसका एक नौकर चाय लेकर आ गया। बातचीत में उन्होंने स्वयं बताया कि वे यहीं से थोड़ी दूर पर स्थित एक पहाड़ी रियासत के राजा हैं। राजा तो नाम मात्र के रह गये, अब तो केवल प्रिवीपर्स से उनका जैसे- तैसे गुजारा चल रहा है। वह प्रतिवर्ष गर्मियां बिताने के लिए यहीं चले आते हैं।

बातचीत में वे राजा साहब, जिन्होंने अपना नाम कुंवर चन्द्रवदन सिंह बताया, अत्यन्त स्पष्ट और खुले हुए थे। बातचीत करने में उन्हें विशेष आनन्द आ रहा था, बातचीत में वह एक बात का सिलसिला दूसरी बात से ऐसे जोड़ देते कि सामने वाले को बोलने का मौका ही नहीं मिल सकता था। उस दिन तो सामान्य से परिचय के बाद मैंने उनसे विदा ली, क्योंकि मुझे लौट कर फिर अपने कैम्प तक जाना था। राजासाहब की इच्छा नहीं थी और मुझे भी उनकी बातों में रस आ रहा था फिर भी शाम हो जाने के कारण मुझे पहुंचने की जल्दी थी, नहीं तो इन्स्ट्रक्टर मेरे विरुद्ध अनुशासन की कार्यवाही कर सकता था। दूसरे दिन मैं सुबह उनके पास जल्दी आकर बैठने का वायदा करके उठा। उन्होंने अपने एक वृद्ध सेवक को मेरे साथ कर दिया, जिससे मैं कहीं रास्ता न भटक जाऊं। पहाड़ों में वैसे भी शाम का झुटपुटा चार बजे तक उतर ही आता है और वह उनका बूढ़ा और विचित्र सी आकृति वाला सेवक मेरे साथ मौन चलने लगा। रास्ते में मैंने उससे बातचीत करनी चाही लेकिन वह कुछ नहीं बोला, मैंने राजा साहब के बारे में भी जानकारी प्राप्त करनी चाही लेकिन उसने पूरे मार्ग में एक बार भी अपना मुंह नहीं खोला, केवल संकेतों से मुझे मार्ग दिखाता रहा। जब मैंने अपने कैम्प के पास आ जाने पर धन्यवाद देकर उससे विदा ली तो वह सीधा - सपाट चेहरा लिये पीछे मुड़ा और देखते -देखते ही जाकर पीछे मार्ग में खो गया। मैं हतप्रभ सा देखता रह गया, फिर सोचा कि शायद वह पहाड़ी व्यक्ति है, इसी से इतनी तीव्रता से उन रास्तों पर चढ़ गया होगा। दूसरे दिन सुबह होते ही और अपनी टीम के निकल जाने के तुरंत बाद ही मैंने उस घाटी का रुख पकड़ा। कुंवर चन्द्रवदन सिंह अपनी उसी मुद्रा में बैठे थे। उन्होंने उत्साह से मेरा स्वागत किया और बातचीत में खो गये। बातचीत के सारे विषय उनके ही पास थे, मैं तो बस श्रोता था। वह भी ऐसा श्रोता पाकर धन्य हो गये थे। अपनी रियासत के किस्से, अपनी बहादुरी के किस्से, अपने पूर्वजों की शौर्य गाथाएं, रनिवासों के रंगीले किस्से, ब्रिटिश अधिकारियों की रास लीलायें -- सभी कुछ उनके खजाने में भरीं थीं। एक बात मैंने विचित्र देखी कि राजा साहब के परिवार का तो कोई व्यक्ति नहीं दिख रहा था लेकिन उनके अनुचरों की संख्या लगभग पन्द्रह व बीस के आस - पास थीं, कहने के लिए वह एक दुर्गम घाटी थी, लेकिन वहां पर भी सारी सुख सुविधायें इस प्रकार थीं कि जैसे कि आम सड़क के किनारे बना कोई मकान हो। दूध के लिए पशु भी पले थे, तो सब्जियां भी उगा रखी थीं, और सबसे आश्चर्य की बात तो यह कि उनकी कॉटेज इस तरह चमक रही थी कि जैसे अभी - अभी बनाकर खड़ा किया हो। उनके सारे अनुचरों के चेहरे एक दम पत्थर जैसे और विचार शून्य थे। वे यंत्रवत् इधर से उधर चल रहे थे।

पुरानी शैली की कॉटेज, जैसे अभी ही बना कर खड़ी की गई हो, धूप की किरणों में चौंध मारती, जबकि आस-पास जीवन का कोई चिन्ह ही नहीं . . .

(शेष पृष्ठ २२ पर)

पूज्यपाद गुरुदेव हमारी सबसे अमूल्य धरोहर जो आज आपके पास हैं

एक प्रश्न जो जीवन के प्रारम्भ में ही निर्धारित हो जाना चाहिए, जिसकी सुस्पष्ट धारणा हमारे मानस में रच-पच जानी चाहिए, वह यह कि हमें जीवन में आध्यात्मिक होने की आवश्यकता ही क्या है? क्यों हम दीक्षा लें और जीवन में गुरु को महत्व दें? यह तो नितांत सत्य है कि व्यक्ति यदि जीवन में ऐसे प्रश्नों के हल नहीं प्राप्त करता तब भी जीवित रहता है और प्राप्त कर लेता है तब भी,किंतु दोनों स्थितियों में जीवन जीने की शैली में अंतर होता है। जो इन प्रश्नों के उत्तर प्राप्त कर लेता है उसको जीवन में तृप्ति, निश्चिंतता और निरन्तर छलछलाता हुआ आह्लाद मिल जाता है।

यह संक्षिप्त विवेचन आवश्यक था क्योंकि इसके अभाव में साधक 'गुरुत्व' की महत्ता समझने में असमर्थ रहता है। जो अपने को करुणा से सम्पृक्त कर लेता है, वही वस्तुतः योगीपद का अधिकारी है और वही जीवन के इन प्रश्नों का उत्तर समझकर 'गुरुपद' को हृदय में सम्मान पूर्ण स्थान दे सकने का पात्र भी। गुरुदेव केवल इन प्रश्नों के हल बताने में सहायक व्यक्तित्व ही नहीं होते, गुरुदेव केवल ईश्वर प्राप्ति की दशा में सहायक कोई व्यक्तित्व नहीं होते, गुरुदेव ईश्वर-तुल्य होते हुये भी उनसे अलग हैं, क्योंकि वे इस ब्रह्माण्ड के सजीव और गतिशील ऐसे व्यक्तित्व हैं, जिनमें हृदय की धड़कन है, स्मित हास्य है और अपनी धड़कनों से अपने शिष्यों की धड़कनों को भी स्पंदित कर देने की कला है। **योगीजन के मध्य जो महायोगी होते हैं, जिनके अंदर यह विराटता होती है कि वे सहर्ष दूसरे के विष को ग्रहण कर उसे अमृत-तत्व छका सकें, वे ही सद्गुरु होते हैं। जिनके समक्ष फिर शिव भी एक लघु तथ्य रह जाते हैं, उनकी एक कला मात्र रह जाते हैं और शिव ही क्यों समस्त देवी-देवता भी तो। ऐसे ही 'पुरुषोत्तम' समय-समय पर सिद्धाश्रम द्वारा इस धरा पर उपहार स्वरूप भेजे जाते हैं।** जिन्हें फिर वहां 'उपहार' में मिलती है आलोचना, द्वेष, छल और घटियापन। ऐसे दिव्य व्यक्तित्वों के भेजने में न तो सिद्धाश्रम का कोई स्वार्थ होता है और न उन व्यक्तित्व का जिनको कि प्रकृति का संतुलन बनाये रखने को भेजा जाता है।

संभवामि युगे - युगे

इस युग में यह विष पीने के लिए हम लोगों के मध्य से जिस व्यक्तित्व को पूज्यपाद परमहंस दादा गुरुदेव जी ने चुना, वे हैं **"परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी"** जो इस धरा पर **"डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी"** के रूप में आपके मध्य विराजमान हैं-- हम लोगों के हृदय के स्पंदन, हम लोगों की श्वासों के आधार। आप नहीं समझ सकते कि किस प्रकार से एक दिव्य व्यक्तित्व के रहने से समस्त वातावरण चैतन्य और पुलकित रहता है। यह जो आप सभी के आह्लादित और निश्चिंत चेहरे हैं,उसके पीछे केवल और केवल उनकी तपस्या का ही प्रभाव है। हम सभी सिद्धाश्रम स्थित शिष्यों व साधकों की सूक्ष्म दृष्टि आप सभी गृहस्थ शिष्यों व साधकों पर प्रतिक्षण -- प्रतिपल लगी ही रहती है, क्योंकि **परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी** जैसे अद्वितीय युगपुरुष के संग होने से स्वयमेव आप गौरवशाली हो उठे हैं। हम लोगों के लिए ईर्ष्या व अवलोकन के विषय हो उठे हैं, किंतु जब हम लोग गृहस्थ शिष्यों की अमर्यादा और हेठी देखते हैं तो अपने चित्त पर ठोकर अनुभव करते हैं। मैं शब्दों में नहीं बता सकता कि उस समय हम सभी सिद्धाश्रम स्थित गुरुभाई - बहनों के हृदय पर क्या बीतती है। पता नहीं यह निखिलेश्वरानंद जी की प्रबल माया है कि आप लोग उनके अचिन्त्य रूप को निहार नहीं पा रहे या आपकी आंखों पर ही स्वार्थ, मलिनता व वासना के इतने मोटे-मोटे चश्मे लगे हैं, मद की चर्बी इतनी छा गई है कि उनके अलौकिक देव स्वरूप को निहार नहीं पा रहे। फिर भी निखिलेश्वरानंद जी,निखिलेश्वरानंद जी ही हैं। उनके समक्ष हम लोगों ने दबे स्वर में यह तथ्य प्रकट किया तो उन्हें सह्य नहीं रहा। वे इतना ही कह सके- **"तुम्हारे समान ये भी मेरे पुत्र हैं।"**

इनके पास तो चर्म चक्षु है, सामान्य दृष्टि है जो अहंकार के पानी में डूबी हुई है, इन आंखों की कोरों में वासना की पंक्तियां ही अंकित हैं इनकी पलकों पर संदेह के मोटे-मोटे बंधन पड़े हुए हैं, फिर इस सामान्य नजर से आपके स्वरूप को कैसे देख सकते हैं. . .

गुरु कुम्हार शिष कुम्भ है

कैसा है आपका यह संसार, जिसमें गुरु आपको खींच -खींच कर अपने पास ला रहा है, अपने हृदय का समस्त प्रवाह आप में उड़ेल देना चाह रहा है, और आप अपनी ही क्षुद्र दुनियां में, क्षुद्र स्वार्थों में, पद और सम्मान के लालच में खोये जा रहे हैं। मैं इतना कुछ कहना नहीं चाहता था। काश! कभी आप शुद्ध चैतन्य होकर उनके दिव्य स्वरूप को निहार पाते, उनके होकर उस दिव्य देह की एक झलक पाइए तो ज्ञात होगा कि आप किसके शिष्य हैं, लेकिन आपको बहुत-बहुत त्याग करना होगा, बहुत अधिक निर्मलता लानी होगी। इन चर्म चक्षुओं से वह स्वरूप नहीं दिखेगा, वह तो दिव्य चक्षुओं की विषय वस्तु है।

पूज्यपाद गुरुदेव का ही एक स्वरूप जो पन्नों पर झलका है, जिस रूप से वे आपके समक्ष एक अन्य माध्यम से प्रतिबिम्बित हुए हैं, वह है **"मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान"** पत्रिका का प्रकाशन। शायद आपको पता नहीं होगा कि उन्हें इस कार्य को संचालित करने के लिए कितना अधिक प्रयास करना पड़ा है, किस प्रकार से सिद्धाश्रम के योगियों की आलोचना का सामना करना पड़ा है, किन्तु उनका दृढ़ निश्चय था कि मैं अपने आप को उनके बीच में होने का अर्थ यों ही नहीं रख सकता, यदि मैं उनके मध्य ज्ञान की चेतना नहीं फैला सकता तो मुझे भेजने का अर्थ ही क्या रहा? इनके हठ को सिद्धाश्रम के योगी एक बार पहले भी देख चुके हैं, जबकि पूज्यपाद गुरुदेव ने चुनौती पूर्वक नया सिद्धाश्रम ही रच डालने की बात कही थी। सांसारिक रूप से उन्हें इस कार्य में जो घात-प्रत्याघात व रुढ़िवादी वर्ग की आलोचना सहनी पड़ी, वह तो एक अलग गाथा है। उन्होंने शिविर के माध्यम से नवीन चिंतन दिया कि यदि प्यासा कुंए के पास नहीं आ रहा तो क्यों न मैं ही प्यासे के पास चल कर पहुंचूं। पत्रिका के प्रकाशन के साथ पूज्य गुरुदेव का हठ था कि मैं भारतीय ज्ञान-विज्ञान, जो अपनी गोपनीयता के कारण समाज में संदिग्ध दृष्टि से देखा जाने लगा हैं, हेय समझा जाने लगा है,उसको मिटाकर ही दम लूंगा और ऐसा उन्होंने संभव करके भी दिखा दिया। उन्होंने यह दिखा दिया कि ज्ञान के प्रचार-प्रसार में कुछ भी बाधा नहीं बन सकता और वास्तव में बाधा बनती भी है तो केवल हमारी ही संदेहशीलता, हमारा ही उहापोह और हमारी ही बांटने की प्रवृत्ति का अभाव।

(शेष पृष्ठ ७१ पर)

क्या ऽऽऽ

क्या पुनर्जन्म होता है ...?

मृत्यु में कितना आनन्द होता है, इस तथ्य को जिस व्यक्ति ने भरपूर मस्ती के साथ जिया वह थे "कबीर दास" और यह सत्य भी है, जिस व्यक्ति को गुरु कृपा से वस्तु - स्थिति का बोध हो जाता है, उसके लिए मृत्यु भय का नहीं, आनन्द का विषय रहती है, उसके लिए मृत्यु महामिलन का क्षण होता है लेकिन सामान्य व्यक्ति जो इस भावभूमि पर नहीं है उसके लिए तो मृत्यु उस काली रात की तरह है, जिसके घुप अंधेरे में उसे कुछ सुझाई नहीं देता। पुनर्जन्म, भूत-प्रेत की घटनाएं, मृत्यु के उपरान्त अनुभव कई ऐसी बाते हैं, जिससे व्यक्ति जीवन की नई आशा ढूंढ लेता है और उसे लगता है कि वह मृत्योपरान्त किसी अंधेरी सुरंग में नहीं खो जायेगा।

भारतीय चिन्तन का आधार है -- पुनर्जन्म की अवधारणा। प्राचीन काल से हमारे ग्रंथों में पुनर्जन्म - वाद के सूत्र मिलने लग जाते हैं। यद्यपि आज जिस अर्थ में पुनर्जन्म की घटनाएं हम लेते हैं, हमारे ग्रंथों में ठीक उसी प्रकार से नहीं लिया गया है। हमने पुनर्जन्म का अर्थ लगाया है कि पुनर्जन्म की अवस्था में व्यक्ति को पूर्व जन्म की कई बातें याद रहती हैं और किसी अबोध बालक या किसी युवती द्वारा अपने पूर्व जन्म की बातें बताने के जो वृतांत पत्रिकाओं में अथवा अख़बारों में प्रकाशित होते हैं, वहीं तक पुनर्जन्म को सीमित कर दिया है पुनर्जन्म भारतीय संदर्भों में एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, क्योंकि व्यक्ति का जीवन कड़ियों में बंधा है और प्रत्येक कड़ी दूसरी कड़ी से जुड़ी है, इसी से एक जन्म के कार्यों का प्रभाव दूसरे जन्म के कार्यों पर पड़ता है। इस जन्म के संस्कार सूक्ष्म रूप से हमारे अंदर प्रविष्ट होकर अगले जन्म तक साथ जाते हैं। जिस प्रकार से हम कई जानी-अनजानी प्रवृत्तियों को अपने साथ लेकर इस जीवन में चल रहे होते हैं।

अपनी पूर्व जीवन की स्मृति सूक्ष्म रूप में प्रत्येक व्यक्ति के मानस में रहती ही है, भले ही वह उसके सामने कभी निद्रावस्था में स्वप्न के माध्यम से प्रकट हो या जाग्रतावस्था में ही बैठे-बैठे उसके मानस में किसी विचार अथवा किसी बिम्ब के माध्यम से प्रकट हो। प्रायः साधकों ने इस बात को अनुभव किया है कि उन्हें जाग्रतावस्था में भांति-भांति के दृश्य और भांति-भांति के विचार आकर घेर लेते हैं। उनके पीछे, जहां एक ओर व्यक्ति के मन में वर्तमान में चल रहा कोई द्वंद्व होता है, वहीं इनका एक सूत्र पूर्व जीवन में भी छुपा होता है। प्रायः साधकों को विचित्र-विचित्र अनुभव होते हैं कभी उसे स्वप्न में बार-बार उफनती नदी का दृश्य दिखता है, किसी को हथकड़ी दिखती है, तो किसी को कोई स्थान विशेष दिखता है। यह असहज नहीं है, इनके पीछे तथ्य हैं, कभी किसी जन्म में किसी व्यक्ति ने कोई दुष्कर्म किया होगा और उसकी स्मृति में उसके साथ हथकड़ी चलती रहती है, कहीं किसी जन्म की आत्महत्या की स्मृति व्यक्ति के साथ कभी रस्सी के रूप में तो कभी नदी के रूप में चलती रहती है।

इन सब तथ्यों से स्पष्ट होता है कि व्यक्ति का पूर्व जन्म होता ही है, उससे जुड़ी स्मृतियां और संस्कार भी साथ चलते रहते हैं। ध्यान की पद्धति ऐसी स्थितियों के लिए श्रेष्ठतम स्थिति है, जिसके माध्यम से व्यक्ति जहां अपने पूर्व जन्म को स्पष्ट करता है, वहीं अपने आप को संयोजित कर सकता है, और जिन सूक्ष्म संस्कारों की समष्टि उसके साथ चलती रहती है उनमें संशोधन कर सकता है, यही जीवन की सही अवस्था होती है।

इन्हीं पूर्व स्मृतियों का स्पष्ट उदाहरण और प्रमाण प्रायः देखने को मिल जाता है, किसी बच्चे के रूप में अथवा किसी किशोरावस्था की स्त्री में। नित्य अखबारों में इस तरह के उदाहरण आते ही रहते हैं, जिनकी जांच करने पर पूर्ण प्रामाणिकता पाई गई है। इन्हीं घटनाक्रमों से बाध्य होकर विज्ञान को अपनी धारणाओं में परिवर्तन करना पड़ा और परामनोविज्ञान की स्थापना की गई। परामनोवैज्ञानिक, शोध करने के उपरान्त इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि ऐसे विवरणों में प्रायः सत्यता अस्सी प्रतिशत से भी अधिक होती है, यद्यपि कुछ एक विवरण अतिरंजित भी पाये गये और धोखाधड़ी की बातें भी प्रकाश में आईं, लेकिन निष्कर्ष के रूप में यह माना गया कि व्यक्ति का पुनर्जन्म होता है। पुनर्जन्म की घटनाओं से चौंक कर वैज्ञानिक इस खोज के लिए उत्प्रेरित हुए कि आखिर कौन सा तत्व है जो मृत्यु के उपरान्त इस शरीर से निकल जाता है और जिसके द्वारा पुनः व्यक्ति एक नये रूप, आकार में आ जाता है। दूसरे शब्दों में कहा जाय तो हमारे शास्त्र युगों पूर्व जिसको "आत्मा" की संज्ञा दे चुके हैं, उसे वे अपने ढंग से वैज्ञानिक माप - दण्डों में बांध कर समझने का प्रयत्न कर रहे हैं।

पुनर्जन्म की अवस्था में व्यक्ति द्वारा अनेक रोचक तथ्य बताये जाते हैं। कई एक ऐसी घटनाएं मिली हैं जहां किसी बच्चे ने न केवल अपने पूर्व जीवन का विवरण ज्यों का त्यों दिया, उसने कई गोपनीय रहस्य भी खोले।

उत्तर-प्रदेश के कानपुर नगर में एक विशाल तापीय विद्युत परियोजना है। वहीं कार्यरत एक कर्मचारी का चार वर्षीय पुत्र दिन में जब सायरन की आवाज सुनता तो एकदम बैचेन हो जाता और बाहर की ओर निकल पड़ता। जब उसे कई दिन ऐसा करते देखा गया तो उसकी मां ने उससे पूछा कि आखिर तू कहां चल देता है। उसने अस्पष्ट सी भाषा में जो कुछ बताया, उससे उसके परिवार वाले हतप्रभ रह गये। उसके कहने का तात्पर्य था -- "लंच का समय हो गया है, घर पर मेरी पत्नी और दोनों बच्चे मेरे साथ खाना-खाने के लिए बैठे होंगे!!" चार वर्ष का वह बालक स्थान तो भली-भांति नहीं बता पाया, लेकिन वह ज्यों-ज्यों बड़ा होता गया त्यों-त्यों परिवार के विषय में और अधिक चिंताएं प्रकट करता गया। छः वर्ष तक उसकी यह अवस्था हो गयी कि वह घर छोड़कर निकल जाता था। उसकी मृत्यु कैसे हो गयी यह उसे स्पष्ट याद नहीं रह गया था। इस द्वंद्वात्मक स्थिति में उसका मानसिक विकास अवरुद्ध होने लगा था, तभी उस क्षेत्र के एक प्रख्यात तांत्रिक ने किन्हीं विशिष्ट उपायों से उसे पूर्व जीवन का विस्मरण कराया, तब जाकर वह सहज जीवन अपना सका।

कई एक ऐसे उदाहरण मिलते हैं, जबकि कोई बच्चा अचानक अनजानी भाषा बोलने लगता है या लिखना आरम्भ कर देता है। आश्चर्य तो यह कि उसका लेखन या सम्भाषण पूर्ण परिष्कृत होता है। यह एक प्रबल प्रमाण है कि व्यक्ति के संस्कार उसके साथ ही साथ अगले जीवन तक जाते हैं। **पूज्य पाद गुरुदेव के निर्देशन में साधना करने के उपरान्त अनेक साधकों ने भी पूर्व जीवन को भली भांति देखा है। वह स्थान जो कि उन्हें साधना के दौरान दिखाई दिया है, उन्होंने उस स्थान पर जाकर पुष्टि करनी चाही तो उन्हें प्रमाण भी मिले हैं।** पूर्व जन्म का ही एक अन्य आयाम है-- व्यक्ति के आत्मगत संबंध। जब तक व्यक्ति अपने पूर्व जन्म को नहीं देख लेता और अपने वास्तविक संबंधों को नहीं जान लेता तब तक वह साधना में भी आगे बढ़ नहीं पाता।

पूर्व जन्म की विचित्र व रोचक घटनायें देखने में आती हैं, ऐसी ही कई घटनायें पायी गई हैं, जब किसी व्यक्ति ने अचानक कोई खास अवसर पर कोई ऐसा कार्य कर दिया हो जिसकी कि उसे जानकारी ही न हो या उसके आयु को देखते हुए उसके द्वारा ऐसा करना असंभव लगता हो। प्रायः इस तरह की घटनायें प्रकाश में आती हैं जब कि किसी अल्प वयस्क बालक ने गीता, रामायण पर प्रवचन देना आरम्भ कर दिया हो अथवा संगीत या शिक्षा के क्षेत्र में आश्चर्य जनक रूप से चमत्कार पूर्ण प्रदर्शन किया हो, यह सब पूर्वजन्म के संस्कारों से ही संभव होता है। ■
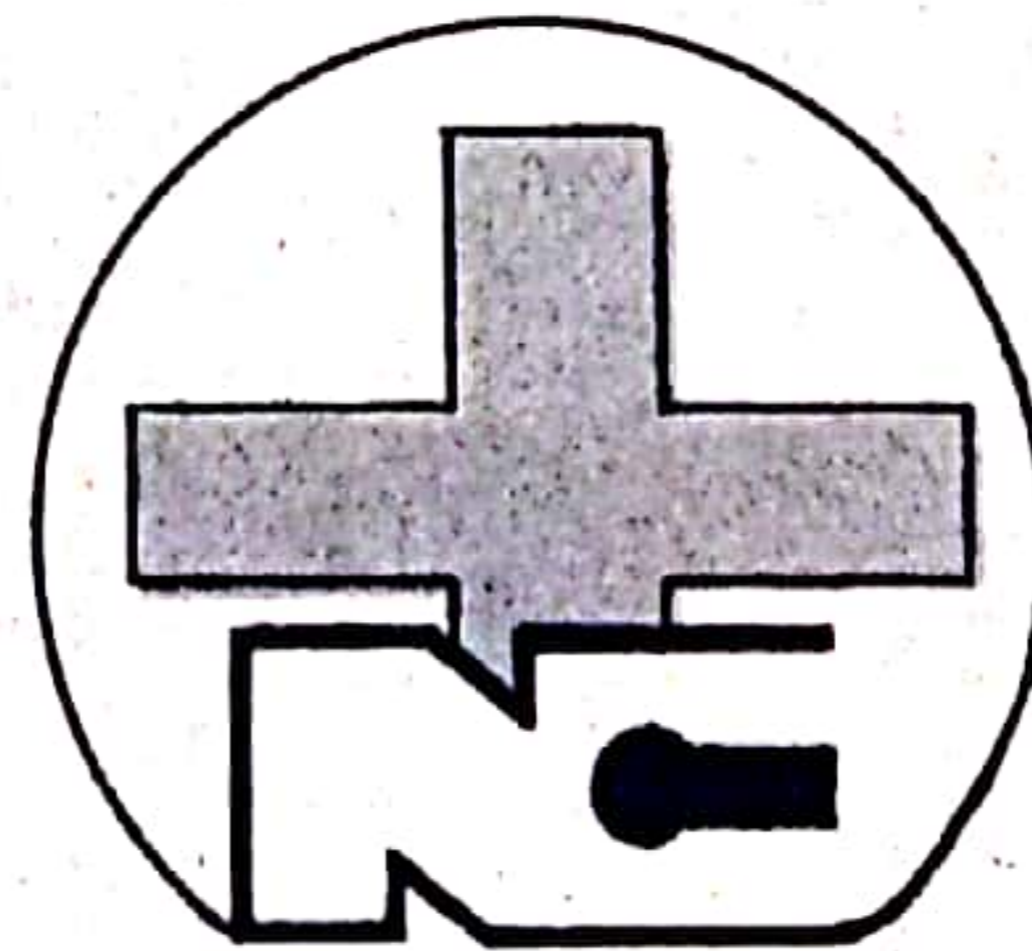
भूतनी मेरी पत्नी बनी और आठ वर्षों तक मेरे साथ गृहस्थ रही

भूतों के दिखाई पड़ने से संबंधित कथायें तो बहुत सी पढ़ी होंगी, उनके उत्पात और विध्वंस की बहुत घटनायें भी आपने सुनी होंगी, लेकिन क्या कभी यह सुना है कि कोई भूतनी साधारण स्त्री के रूप में आकर न केवल पत्नी बन जाय बल्कि सात-आठ वर्षों तक साथ रह कर गृहस्थ जीवन भी व्यतीत करे? एक ऐसी ही घटना मुझे सुनने को मिली अपने मित्र श्री सदानंद पाण्डे से, जो एक बीमा निगम के सहायक प्रशासनिक अधिकारी के पद पर कार्यरत थे।

श्री पाण्डे जी और मैं कानपुर में साथ-साथ एक ही ब्रांच में कार्यरत थे, तभी श्री पाण्डे जी का स्थानान्तरण कलकत्ता हो गया। सदानंद जी अपने नाम के ही अनुरूप सदा आनन्द में मगन रहने वाले मस्त और कुंवारे व्यक्ति थे। वह अपने चिरपरिचित वातावरण को छोड़कर कलकत्ता जैसी अजनबी जगह जाने के इच्छुक नहीं थे, लेकिन हमारे ही कार्यालय में कार्यरत एक अधीनस्थ कर्मचारी एस. सी. सेनगुप्ता ने उनकी यह समस्या भी सुलझा दी, जब उसने उन्हें कलकत्ता में अपने रिश्तेदार का पता देकर कहा कि आपको वहां जाने पर इनसे पर्याप्त मदद मिल जायेगी और अकेलापन भी नहीं लगेगा। उसके बाद फिर मेरी कुछ दिन तक तो पाण्डे जी से चिट्ठी - पत्री होती रही, बाद में धीरे-धीरे दोनों लोग अपनी-अपनी व्यस्तताओं और अपने - अपने जीवन में खो गये। अभी पिछले ही दिनों जब पटना में हमारी जोनल मीटिंग हुई, तब हम लोगों को मिलने का अवसर मिला। मीटिंग के बाद हुई व्यक्तिगत बातचीत में उन्होंने जो कुछ अपने विगत आठ-दस वर्षों के जीवन के बारे में बताया उससे मैं स्तब्ध रह गया।

पाण्डे जी ने अपनी जो आपबीती सुनाई वह उन्हीं के शब्दों में प्रस्तुत करने जा रहा हूं---

"कानपुर से निकल कर मैं सेन गुप्ता के बताये पते पर कलकत्ता में जाकर, उनके रिश्तेदार से मिला, उन लोगों का व्यवहार मेरे साथ अच्छा रहा और जब तक मुझे घर नहीं मिला, तब तक उन्होंने मुझे अपने घर रोके रखा। कुछ दिन बाद मेरे लिए उन्होंने एक अच्छी सी बस्ती में फ्लैट ढूंढ निकाला, जिसके मकान मालिक कोई गुहा थे, जो आसाम में व्यापार करते थे और उनका यह मकान बंद पड़ा था। सेनगुप्ता के रिश्तेदारों के कहने पर उन्होंने मुझे वह फ्लैट देना स्वीकार कर लिया और उसकी चाबी उन्हें सौंप कर वापस गौहाटी चले गये। एक प्रकार से सेनगुप्ता के रिश्तेदार ही मेरे मकान मालिक थे, क्योंकि श्री गुहा से मेरी कोई सीधी भेंट नहीं हो सकी थी। मैं तो तुरंत ही उस मकान में चला जाना चाहता था, लेकिन उन लोगों ने अनुरोध कर तीन -चार दिन बाद ही जाने दिया। तब तक उन लोगों ने सफाई और रंगाई करा

दी थी। यह मकान कलकत्ता के दूसरे उपनगर में था। मैं उस मकान में जाकर जम गया। आस - पास की बस्ती अभिजात्य वर्गीय थी और वहां का प्रत्येक परिवार अपने ही आप में सिमटा रहने वाला था, जैसा कि आजकल महानगरों में होता है। आस - पास घिरे बड़े-बड़े और आलीशान बंगलों के बीच में कहां क्या चल रहा है, इसकी कोई खोज - खबर रखने वाला नहीं था। मैं भी अपने आप में मस्त रहने के कारण ऐसे ही वातावरण को पसंद करता था। मैंने अपना सामान जमा लिया और अपनी दिनचर्या प्रारंभ कर दी। तीसरे या चौथे दिन की बात है, जब मैं ऑफिस से लौट कर अपने फ्लैट में लेटा हुआ था, तभी दरवाजे पर एक दस्तक सुनाई दी। मैं हैरान रह गया --

-- यहां मुझे कौन जानने वाला आ गया, सेनगुप्ता की बुआ का परिवार तो यहां तक आने से रहा। मैंने आश्चर्य से भरकर दरवाजा खोला तो सामने भरे - पूरे बदन की एक २०-२२ वर्षीया लड़की खड़ी थी। उसने मुस्करा कर मुझसे भीतर आने की अनुमति चाही। मैंने कुछ सहमते और झिझकते हुए उसे अन्दर आने के लिए कहा। वह इस तरह अधिकार पूर्वक चलती हुई मेरे कमरे में आकर सीधे बाथरूम में जाकर घुस गयी, जैसे वह घर के कोने-कोने से परिचित हो। मैं उसके आचरण से कुछ नहीं समझ सका और वह बाहर निकल कर मुझसे बोली . . .

-- शायद आप आश्चर्य चकित होंगे, मैं भी कैसी निर्लज्ज हूं, आपके यहां इस तरह से घुसी जा रही हूं, पर आपको पता नहीं होगा कि मैं इस मकान के मालिक श्री गुहा की बड़ी पुत्री हूं, मेरा नाम अंजली गुहा है। मुझे तो यही पता था कि श्री गुहा का एक ही लड़का है, जो उनके साथ गौहाटी में उनके व्यापार में सहयोगी है और वह वहीं रहता है, उससे यही बात बतायी तो वह खिलखिला कर हंस पड़ी। उसने कहा . . .

-- यह सच है, किंतु मैं भी उनकी पुत्री हूं। मैं यह रहस्य समझ नहीं सका, मैंने सोचा कि शायद जल्दी-जल्दी में मुझे ही समझने में कुछ भूल हुई होगी। मैंने उससे पूछा कि . . .

-- यदि आप उनकी पुत्री हैं तो आप उनके साथ क्यों नहीं रहती हैं? उसने मुझे बताया कि वह यहां से कुछ दूर अपनी नानी के घर में उनके अकेले और वृद्ध होने के कारण, उनके ही साथ रहती है। मुझे उसकी व्यक्तिगत बातों से या श्री गुहा के परिवार के विषय में कोई रूचि नहीं थी, अतः मैंने आगे कोई बात नहीं पूछी। उसने ही बात छेड़ी कि . . .

-- अब तो यह घर खाली नहीं रहा, क्या वह यहां आ सकती है और मुझसे मिल सकती है ? उसके ही पिता के घर में उसे ही कैसे रोक सकता था, मैंने सिर हिला कर हामी भर दी। दूसरे दिन मैंने पाया, कि मेरे लौटने से पहले ही वह वहां आकर बाहर बगीचे को संवार रही है। धीरे-धीरे उसके आने का सिलसिला बढ़ता गया।

उस फ्लैट में श्री गुहा ने दो कमरे अपने व्यक्तिगत उपयोग के लिए बंद रख छोड़े थे, जिसमें से एक कमरे को उसने उपयोग में लेना शुरू कर दिया। लगभग दो महीने बीतने के बाद उसने एक दिन बताया. . .

-- मैंने एक विजातीय लड़के से प्रेम किया था। तब मेरी अल्हड़ उम्र थी, मेरे मन में कोई पाप नहीं था, और न ही उस लड़के के मन में, लेकिन समाज के नियमों और अपने अभिजात्य वर्ग के मान्यताओं में पिस कर हम लोगों को अलग-अलग तो होना ही पड़ा था, साथ ही उससे पिताजी को ऐसा आघात लगा कि यह कलकत्ता से अपना व्यापार समेट कर गौहाटी चले गये . . .

तब मुझे समझ में आया कि क्यों सेनगुप्ता के रिश्तेदारों ने अंजली का नाम जान बूझकर नहीं लिया था। अंजली ने मुझे यह भी बताया कि वह इस घटना के बाद से अपनी नानी के घर में रह रही है, लेकिन अपनी पैतृक घर के प्रति उसका मोह खत्म नहीं हुआ था, इसी से वह एक दिन घर को खुला पाकर चली आयी और मेरे बहाने वहां रहने लगी, क्योंकि अकेले न तो वह उसमें प्रवेश कर सकती थी और न ही रहने की कोई संभावना थी।

उसकी कहानी सुनकर और उसकी आंखों से झांकती सच्चाई देखकर, मुझे उस पर सहानुभूति हो गई। उसकी आंखों में प्रेम की लालसा झलक रही थी, जैसे कह रही हो कि . . .

-- काश ! कोई तो मुझे गलत न समझे और मुझसे प्रेम करे। और तब मैंने शायद पहली बार भरपूर निगाहों से उसकी ओर देखा। उसके चेहरे और सारे बदन पर सलोनापन ही सलोनापन छाया था।

. . . देह से भले ही वह २०-२२ की हो गयी हो, लेकिन उस पर छाई मादकता उसे १८ वर्ष का बता रही थी। खूब घने काले और लम्बे बाल, जिन्हें उसने कस कर जूड़े के शक्ल में बांध दिया था, कानों तक खिंचती सी लगती आंखें और पतले होंठ मासूमियत समेटे हुए, खूब गठे हुए वक्षस्थल -- मांसल कमर और गठा हुआ अधोदेश, शारीरिक सौष्ठव से भी ज्यादा हावभाव में मादकता और कामुकता। धीरे- धीरे कब मैं उसके आकर्षण में बंध गया और आकर्षण के आगे की सीमाओं को भी तोड़ कर चलता चला गया, कुछ पता ही नहीं लगा। हम लोगों की घनिष्ठता इतनी बढ़ चुकी थी कि विवाह में बंधना ही एक मात्र उपाय रह गया था।

सामाजिक भय की वजह से न तो मैंने किसी को आमंत्रित किया और न ही उसके परिवार और समाज से कोई व्यक्ति सम्मिलित हुआ। कुछ दिन बाद मेरा स्थानान्तरण कलकत्ता से खड्गपुर हो गया। यहां पर हम दोनों के लिए कोई भी सामाजिक बंधन नहीं था। हम दोनों खुल कर एक दूसरे में खो गये . . .

-- एक विचित्र सी बात थी कि अंजली की कामेच्छाएं साधारण स्त्री की अपेक्षा अत्यधिक बढ़ी- चढ़ी थीं। कामुकता तो जैसे उसमें उफनती रहती थी। उससे भी अधिक विचित्र बात थी कि जब-जब उससे मैं मां बनने की बात करता तो वह फुंफकार उठती थी, जैसे मैंने उसे गाली दे दी हो। दो वर्ष तक तो वह मुझसे छुपाकर ऐसे उपाय करती रही

कि वह मां ही न बन सके, यह बात संयोग वश मेरे पारिवारिक डॉक्टर ने मुझे बतायी। मैंने उनके सहयोग से उसके गर्भ- निरोधक उपायों को बिना बताये ही समाप्त कर दिया। उसकी मां बनने की स्थितियां बनीं, लेकिन एक दिन वह कब जाकर गर्भपात करवा आयी मुझे पता ही नहीं लगा। मैं उसके इन व्यवहारों से बुरी तरह खिन्न हो गया था। साथ ही ज्यों-ज्यों दिन बीत रहे थे त्यों-त्यों उसकी वासनायें भड़कती ही जा रही थीं। उसकी आंखों की चमक जो कभी मुझे आकर्षित करती थी, वह मुझे पाशविक सी लगने लगी।

उसके हाव - भाव और उसके प्रदर्शन, निर्लज्जता की सीमा तोड़ने लग गये थे। मैंने देखा कि वह किसी बलिष्ठ पुरुष को देखकर एक विचित्र सी चमक अपनी आंखों में भर लेती थी। तभी मेरा स्थानान्तरण अन्यत्र हो गया। मैंने उसे अपने साथ चलने को कहा, लेकिन वह नहीं मानी . . .

-- मुझे बाद में पता चला कि मेरे जाने के बाद उसका मेरे ही कार्यालय के दो कर्मचारियों से शारीरिक संबंध बन गया। यह सब जानकर मैंने अपना स्थानान्तरण फिर उसी स्थान पर करवाया, जिसका फल यह हुआ कि शारीरिक सुख में बाधा पड़ने से वह हिंसक बन गयी। नित्य कलह और सामान की उठा - पटकी में धीरे-धीरे करके आठ वर्ष व्यतीत हो गये। तभी मुझे कार्यालय से कलकत्ता, कुछ कार्य - वश भेजा गया

मैंने वहां जाने पर सेन गुप्ता की बुआ से मिलना उचित समझा क्योंकि उनका घर छोड़ने के बाद वह मुझसे एक - दो बार ही मिली थीं, फिर तो मैं अंजली के रूप जाल में और उसके बाद नित्य की कलह में ऐसा भटक गया कि मेरा कोई सामाजिक जीवन ही नहीं रह गया था।

मध्य प्रदेश की आदिवासी जनजातियों के अनुष्ठान और क्रिया कलाप अपनी रहस्यमयता के लिए प्रसिद्ध हैं और उनकी शैली अचूक होती है। ऐसी ही एक जन-जाति है साबरा। इस जन - जाति की जो कुंवारी लड़की पुजारिन बनाई जाती है उसके बारे में विश्वास किया जाता है कि उसका कम से कम एक भूत प्रेमी अवश्य होगा और उसका विवाह भी उसी से करने की रस्म की जाती है, साथ ही उसका दूसरा विवाह किसी जीवित मानव के साथ भी किया जाता है।

कहते हैं कि ऐसी पुजारिन लड़कियों के समक्ष प्रेतात्मायें भी भयानक स्वरूप में नहीं बल्कि सुंदर सजीले पुरुष का रूप धारण करके आती हैं. . . . . .

सेनगुप्ता के परिवार से मिलने पर, मैंने साधारण बातचीत के बाद अंजली की चर्चा छेड़ी तो आश्चर्य से सब एक दूसरे का मुंह देखने लगे। कुछ देर सन्नाटा छाया रहने के बाद उनके बड़े लड़के ने मुझसे पूछ ही लिया . . .

"आप अंजली को कैसे जानते हैं?" मैंने उनसे बताया वह तो मेरी पत्नी है, हमने छुप कर विवाह कर लिया, तो उन सबके चेहरों पर हवाईयां उड़ने लगीं, आखिर उनका बड़ा लड़का मुझे घर के बाहर ले गया और मुझसे बताया कि गुहा परिवार की जिस लड़की की मैं बात कर रहा हूं उसने आज से लगभग १३-१४ वर्ष पूर्व अवैध प्रेम संबंधों में गर्भवती हो जाने पर आत्महत्या कर ली थी और उनका परिवार उसी बदनामी से कलकत्ता छोड़कर चला गया था।

अब तो मेरे चेहरे पर हवाईयां उड़ने की बारी थी . . .

तुरंत ही मैं और सेनगुप्ता के परिवार के सभी लोग खड्गपुर आये, किन्तु वहां पर अंजली का कोई पता नहीं था। सामने एक चाय की दुकान वाले ने बताया कि उसने कल शाम को अंजली को एक लड़के के साथ जाते हुए देखा। मेरे पास उसके फोटोग्राफ और अन्य कई निशानियां थीं, जिनसे सन्देह की कोई बात ही नहीं बचती थी। सेनगुप्ता परिवार के उस पुत्र ने अंजली की फोटो और वस्तुओं को पहचान कर उसकी पुष्टि भी की।

आज भी उसका असामान्य व्यवहार, उसकी रोम-रोम से फूटती कामुकता, उसके मां बनने की बात पर फुंफकार उठना, सब कुछ मेरी आंखों के सामने चलचित्र की तरह घूम जाता है. . .

. . . वह अतृप्त आत्मा थी या भूतनी या कोई अन्य योनि पता नहीं. . .

. . . लेकिन उसने मुझे तोड़ कर रख दिया था। आज भी उसके साथ बीते क्षणों को याद कर जहां मैं एक ओर यह सोच कर कांप उठता हूं कि **एक भूतनी मेरी आठ वर्षों तक अंकशायिनी रही,** वहीं उसकी प्रचंड कामुकता से मेरे मन में उबकाई आ जाती है। ■

गुरु मंत्र बना रक्षा कवच

गुरुदेव जी के साक्षात् दर्शन के दिन से आज तक मैंने जितनी भी साधनाएं की सभी साधनाओं में पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रदत्त गुरु मंत्र का प्रमुख स्थान रहा है। मेरा नित्य का क्रम रहा है कि ब्रह्ममुहुर्त में उठकर, स्नान कर पूर्ण विधि-विधान से तांत्रोक्त ढंग से गुरु पूजन करना एवं गुरु मंत्र की कम से कम पांच माला जप करना। इसी साधना क्रम में मुझे फैजाबाद से **श्री हरिराम चौधरी** का पत्र मिला, जिसमें उन्होंने मुझे सामूहिक रूप से सम्पन्न होने वाली श्मशान साधनाओं में भाग लेने के लिए बुलाया था। मैं उनका पत्र पाकर फैजाबाद पहुंचा जहां मेरे अतिरिक्त अन्य समीप के नगरों से भी लगभग २५ साधक एवं साधिकाएं एकत्र हुए थे। कृष्ण पक्ष की अष्टमी से प्रारम्भ होने वाली इस साधना में **डॉ. श्यामल कुमार बनर्जी** जैसे वरिष्ठ गुरु भ्राता भी सम्मिलित हुए। अयोध्या का सरयू तट स्थित महाश्मशान साधना स्थली था। श्मशान के लिए हम सभी साधक नित्य रात्रि को १० बजे के बाद प्रस्थान करते थे। सरयू के विशाल लंबे पुल के नीचे से जब हम लोगों की श्मशान भूमि तक यात्रा आरम्भ होती थी तो मेरे शरीर का तापक्रम अत्यधिक बढ़ जाता था। हम सभी सरयू में स्नान के पश्चात ही साधना में बैठते थे, जहां सभी एक - दो डुबकी लगा कर जल्दी-जल्दी तैयार हो जाते थे, वहीं मैं दस-दस मिनट तक सरयू के जल में पड़ा रहता था।

हम लोगों को **श्मशान जागरण प्रयोग** सिद्ध करना था। सर्वप्रथम पूज्य गुरु देव का पूर्ण अघोर विधि से आवाहन एवं पूजन किया गया। रक्षा विधान किये गये तथा रक्षा चक्र खींचकर हम लोगों ने श्मशान जागरण मंत्र का जप प्रारम्भ कर दिया। सबके साथ मैंने भी उस विशिष्ट मंत्र का जप प्रारम्भ किया। लगभग १५ या २० बार के मंत्र उच्चारण के बाद ही मुझे तेज शोरगुल सुनाई देने लगा। मैंने पास बैठे गुरु भाइयों को देखा लेकिन शायद उन्हें कोई शोरगुल सुनाई नहीं दे रहा था, फिर मैंने अपने बांये खाली पड़ी श्मशान भूमि की ओर देखा तो पाया कि सामने जमीन फाड़-फाड़ कर वीभत्स आकृतियां खड़ी हो रही हैं और अपनी आकार को आकाश तक लम्बा कर - कर फिर छोटी हो रही हैं सारे वातावरण में तेज दुर्गन्ध फैल रही थी। पांच मिनट तक तो मैं उनके भयानक चेहरे देखता रहा फिर मैंने घबराकर अपनी आंखें बंद कर लीं और पूज्य गुरुदेव से रक्षा की प्रार्थना करते हुए गुरु मंत्र का जप प्रारम्भ कर दिया। देखते ही देखते सभी दृश्य, भयानक आवाजें और दुर्गन्ध गायब हो गयी। मैंने इसके उपरान्त फिर गुरु मंत्र का ही जप किया और शेष दिन अपूर्व शांति और आनन्द का अनुभव किया।

अपर अपार सिंह
रुड़की

गुरु मंत्र के तीन विशिष्ट प्रत्यक्ष चमत्कार

मैं पेशे से अध्यापक हूं। वर्तमान में राजकीय प्राथमिक विद्यालय खेड़ा रामगढ़ निमाज तहसील जैतारण जिला पाली में कार्यरत हूं। जब से मैं परम पूज्य गुरुदेव श्रीमाली जी के चरणों में दीक्षित हुआ तभी से मेरा जीवन हर पल उन्नति की ओर अग्रसर हो रहा है, मैंने परम पूज्य गुरुदेव की असीम कृपा एवं आशीर्वाद तथा उनके द्वारा दिये गये गुरुमंत्र से असाध्य काम को साध्य कर दिखाया।

१. जन्म से मूक बालक बोलने लगा -- उदलियावास जिला जोधपुर का बाबूलाल सीखी अपने पुत्र माधूलाल को मेरे पास लाया। १५ वर्ष तक वह कुछ नहीं बोल पाया था। मैंने गुरुदेव का स्मरण कर उसे गुरु मंत्र से अभिमंत्रित कर जल दिया, १५ दिन बाद ही वह मूक बालक स्पष्ट बोलने लगा।

२. जब मैंने कैंसर ठीक किया -- जैतारण के व्याख्याता श्री भंवरसिंह जी राजपुरोहित की माता जी को मुंह का कैंसर था। जयपुर, जोधपुर एवं बीकानेर के अनेक चिकित्सकों से उपचार कराने के बाद भी असफलता हाथ लगी। मैंने परम पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद से एक सप्ताह में ही कैंसर जैसी भयानक बीमारी को ठीक कर दिया, और आज वह पूर्ण रूप से स्वस्थ हैं।

३. गुरु मंत्र से भूत को भगाया -- सांगावास जिला पाली (राज.) के भमूत राम कुमावत की ऐसी दशा थी कि वह ६५ वर्ष का प्रौढ़ होते हुए भी २० - २[illegible] लोटे पानी एवं २ किलो रोटियां खा जाता था, फिर भी आश्चर्य की बात है कि वह भूखा एवं प्यासा ही रहता। मैंने गुरुमंत्र से उसके भोजन पानी पर नियंत्रण कर उस दुष्ट प्रेतात्मा को हमेशा के लिए निकाल दिया। उस समय मेरे पास जैतारण के अनेक विशिष्ट पुलिस अफसर भी विद्यमान थे।

यह सभी पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद से ही संभव हो सका है।

हीरालाल प्रजापत (अध्यापक)
निमाज पाली (राज.)

भौतिकता पर बढ़ते आध्यात्मिक चरण

सिद्धाश्रम साधक परिवार के तत्वाधान में विभिन्न शिविरों एवं पत्रिका में प्रकाशित साधना विधियों से सम्पूर्ण देश में मंत्र - तंत्र के प्रति तीव्रता से रुझान बढ़ती ही जा रही है और पूज्य पाद गुरुदेव द्वारा प्रदान की जाने वाली दुर्लभ दीक्षाओं को लेकर न केवल उनसे जुड़ा साधक वर्ग वरन सामान्य जन भी आलोड़ित एवं आश्चर्य चकित रह गये हैं। पूज्यपाद गुरुदेव ने जिस प्रकार से सर्वप्रथम जन सामान्य के समक्ष अभी तक गोपनीय रही समस्त १०८ दीक्षाओं का पूर्ण व प्रामाणिक विवरण प्रस्तुत किया है उससे यह विश्वास हो गया है कि वे निश्चय ही कोई दिव्य युग पुरुष हैं जो आदि शंकराचार्य के पश्चात अवरूद्ध हो गयी ज्ञान की धारा का प्रवाह गतिशील करने एवं अध्यात्म व सनातन धर्म को सही अर्थों में व्याख्यित करने के लिए अवतरित हुए हैं।

यह उनके ही आलोक का प्रभाव है कि जहां एक ओर अनेक सजग साधकों ने व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर उनसे विशिष्ट दीक्षाएं प्राप्त की, वहीं कुछ एक ऐसे भी सजग और धर्म प्राण व्यक्तित्व भी हैं जिन्होंने **''बहुजन हिताय''** ही अपना जीवन समर्पित किया है और इनमें से एक हैं, बम्बई के **श्री गणेश वटाणी जी** इन्होंने अभी कुछ दिन पूर्व **ठाणे** नामक स्थान पर एक दिवसीय शिविर काआयोजन रख पूज्यपाद गुरुदेव का सादर आवाहन किया! दिनांक १८.७.९३ को हुए इस एक दिवसीय शिविर में ३०० से भी अधिक साधकों ने उपस्थित होकर न केवल पूज्यपाद गुरुदेव से दीक्षा प्राप्त की वरन उनके कृपा निर्देशन में **गोपनीय शिव साधना** सम्पन्न कर अपने भौतिक जीवन को भी श्रेष्ठता की ओर अग्रसर किया। श्री वटाणी जी निरंतर ऐसे श्रेष्ठ शिविरों का बम्बई जैसी भारत की व्यस्ततम और आधुनिकतम नगरी में आयोजन कर पूज्यपाद गुरुदेव के आशीर्वाद के पात्र और साधुवाद के पात्र बने हैं।वहीं उनके समस्त सहयोगी भी प्रशंसा के पात्र हैं, और ऐसे ही सुपात्रों में प्रमुख नाम है **श्री चन्दू फ्रूट वाला का** । जिन्होंने इस शिविर के आयोजन में अपना सक्रिय योगदान दिया।

बम्बई में ही पत्रिका के सक्रिय प्रचार एवं प्रसार से जो साधक निरंतर पूज्यपाद गुरुदेव द्वारा प्रज्वलित ज्ञान यज्ञ में अपनी आहुति अपने परिश्रम से प्रदान कर रहें है उनमें **श्री अनिल वघेरा** एवं **डॉ. किशोर डभोया** का नाम सर्वोपरि है, नितांत भौतिक परिवेश में भी ये दोनों साधक जिस प्रकार से आलोचनाओं के मध्य पत्रिका का निरंतर विस्तार कर रहे हैं उसके लिए पूज्यपाद गुरुदेव ने इन्हें मुक्त कण्ठ से आशीर्वाद प्रदान किया है।

वैद्यनाथ धाम

भारत के प्रमुख प्रान्त एवं हमारी संस्कृति के आधार - भूत स्थल बिहार प्रान्त में विगत दिनों में एक श्रेष्ठ साधनात्मक शिविर का आयोजन सम्पन्न होना निश्चित हुआ एवं अगस्त माह की २१-२२ एवं २३ तारीख में बिहार के सर्वाधिक लोकप्रिय एवं प्रतिष्ठित वैद्यनाथ धाम के क्षेत्र में इस शिविर का आयोजन किया गया। बिहार प्रान्त के साधकों की बहुत दिन से यह इच्छा थी कि उनके प्रान्त में भी पूज्यपाद गुरुदेव के श्रीचरण पड़ें, केवल बिहार ही नहीं बिहार से जुड़े उड़ीसा,आसाम एवं पश्चिम बंगाल के साधकों की भी यही इच्छा थी और यह शिविर सही अर्थों में केवल बिहार प्रांत का न होकर समस्त पूर्वी भारत का शिविर हो गया था, जहां पर भिन्न संस्कृतियों के एकत्र हुए साधकों की उपस्थिति से वातावरण अत्यन्त उल्लास पूर्ण बन गया था। बैद्यनाथ धाम द्वादश ज्योर्तिलिंगों में से एक होने के साथ ही साथ शक्ति पीठ भी है, जहां पर सती का हृदय गिरा था। ऐसी भी मान्यता है कि यहीं पर भगवान शिव ने सती का दाह संस्कार भी किया था, जिससे यहां की श्मशान भूमि भी विशेष फलदायक है। कुछ विशिष्ट साधकों ने इस बात की अनुभूति भी कीं। ऐसी चैतन्य भूमि पर पूज्य पाद गुरुदेव द्वारा जहां भगवान शिव एवं शक्ति से संबंधित साधनाएं प्रदान की गई वहीं रोग मुक्ति का दुर्लभ प्रयोग भी सम्पन्न कराया गया।

ऐसे श्रेष्ठ शिविर के आयोजन के लिए बिहार के **श्री वेदानन्द झा जी** का परिश्रम एवं प्रयास स्पष्ट दिख रहा था, **श्री गुरु सेवक जी** की जितनी भी प्रशंसा की जाय कम है, क्योंकि उन्होंने इस अपेक्षा कृत कम सक्रिय क्षेत्र में भी जिस प्रकार से सबको एकजुट किया वह कठिन कार्य था। ■

(पृष्ठ ११ का शेष भाग)

राजा साहब एक उंगली हिलाते तो खट् से एक सेवक आकर उनके पांव दबाने लगता, वह सिर उठाते तो दूसरा सेवक चाय लेकर उपस्थित हो जाता। मेरे लिए यह हैरत की बात थी, पर चुप रहा कि शायद रजवाड़ों के कायदे कानूनों में बंधे यह सेवक संकेतों को समझ लेते हैं। मैंने एक बार हल्के से राजा साहब से कहा भी कि आज के युग में आपको ऐसे स्वामी भक्त सेवक मिले हैं, यह आश्चर्य का विषय है। राजा साहब ठठाकर हंस पड़े बोले, **"अगर यह मेरी बात न मानें तो क्या मैं इनको ऐसे ही रहने दूंगा, इन सभी को मैंने अपनी मुटठी में बंद कर रखा है।"** बात आई-गई हो गयी। धीरे -धीरे हम लोगों को परस्पर मिलते-जुलते एक सप्ताह हो गया, नित्य मेरे साथ वही बूढ़ा अनुचर आता था और बिना कुछ कहे लौट जाता था। उसकी खामोशी मुझे रहस्यात्मक से अधिक भयप्रद लगने लगी थी। एक दिन मैंने राजा साहब से कहा भी कि आपके यह सेवक बोलते नहीं और न मुझे छोड़ने वाला यह बूढ़ा ही मुझसे कोई बातचीत करता है, आखिर क्या कारण है? राजा साहब उसी तरह हंस कर बोले -- **"ये आदमी नहीं, भूत हैं भूत।"** मैंने उनके इस वाक्य को भी उनके हास - परिहास का ही एक अंग समझा।

हम लोगों के कैम्प का समय खत्म हो गया था, जाने के पहले मैं अपने चौकीदार चन्दनसिंह से मिला और उसे बताया कि मैं कल जा रहा हूं। वह आश्चर्य - चकित्त था कि मैं बीच में उससे मिला क्यों नहीं। मैंने अब उसको सारी बात बता दी। भय से उसकी आंखे फट गयीं, उसने मेरे दोनों कंधे पकड़ लिये और अविश्वास से मुझे देखता रहा। बड़ी मुश्किल से उसके मुंह से बोल फूटे - **"तुम जीवित कैसे हो**? वह तो पूरा का पूरा क्षेत्र अभिशप्त क्षेत्र है, जो व्यक्ति कभी उधर भूले से चला भी गया तो तेज बुखार से या सन्निपात की अवस्था में आठ-दस दिन के भीतर ही इस संसार से कूच कर गया है, वहां तो कोई बस्ती ही नहीं है। कहते हैं कभी दो सौ वर्ष पूर्व पहाड़ी रियासत के किसी राजा का वहां पर निवास स्थान था, लेकिन उसके क्रूर व्यवहार से ऊब कर स्थानीय जनता ने एक दिन उसकी पूरी कॉटेज में आग लगा दी थी, जिसमें वह अपने दस-पन्द्रह नौकरों सहित जल मरा था।" अब मुझे राजा साहब की कही गयी बातों का अर्थ, उनके नौकरों की असामान्य मुख मुद्रा, सब कुछ समझ में आने लग गयी थी, फिर भी मैं एन.सी.सी. से जुड़ा होने के कारण दूसरे दिन दुस्साहस पूर्वक अपनी टीम के प्रस्थान करने के पूर्व ही अंधेर में उठकर उस स्थान पर चला ही गया। आज वहां न कोई कॉटेज थी, न कोई बस्ती और न जीवन, कुछ अवशेष थे जैसे यहां कभी कोई भवन रहा होगा। लौटते समय मुझे अपने साथ चलते उस बूढ़े की पदचाप स्पष्ट सुनाई पड़ रही थी, लेकिन वह दिख नहीं रहा था। मुझे राजा साहब की चमकती आंखें और रोबीले चेहरे के साथ ही साथ याद आ रही थी, वह बात कि "ये सब भूत हैं भूत"।

सारे नौकरों के चेहरे एकदम पत्थर जैसे, फटी-फटी आंख लिए रहस्यमय खामोशी लपेटे हुए ...
और राजा साहब का ठटाकर हंस पड़ना .....
"यह सब भूत हैं भूत"...

आज भी नैनीताल के निवासी इस बात के साक्षी हैं कि वहां के पुराने भवन स्लीपीहालो से वाटर - वर्क्स तक जाकर प्ले ग्राउन्ड के पास निकलने वाली सड़क पर यदि कोई व्यक्ति अकेले चलता है तो उसे अपने पीछे स्पष्ट रूप से किसी व्यक्ति की पदचाप सुनाई पड़ती है। ऐसे ही अनुभव प्राप्त एक साधक श्री भुवन चन्द्र जोशी जी का अनुभव है कि उन्हें अपने कार्यालय जाने के लिये वही मार्ग नित्य चुनना पड़ता था और वह जब वहां से निकलकर नयना देवी के मंदिर तक जाते थे तो मंदिर में घुसते ही स्वतः ही लगता था कि किसी अदृश्य आत्मा ने उनका पीछा छोड़ दिया है।

काली

श्मशानालयवासिनीम्
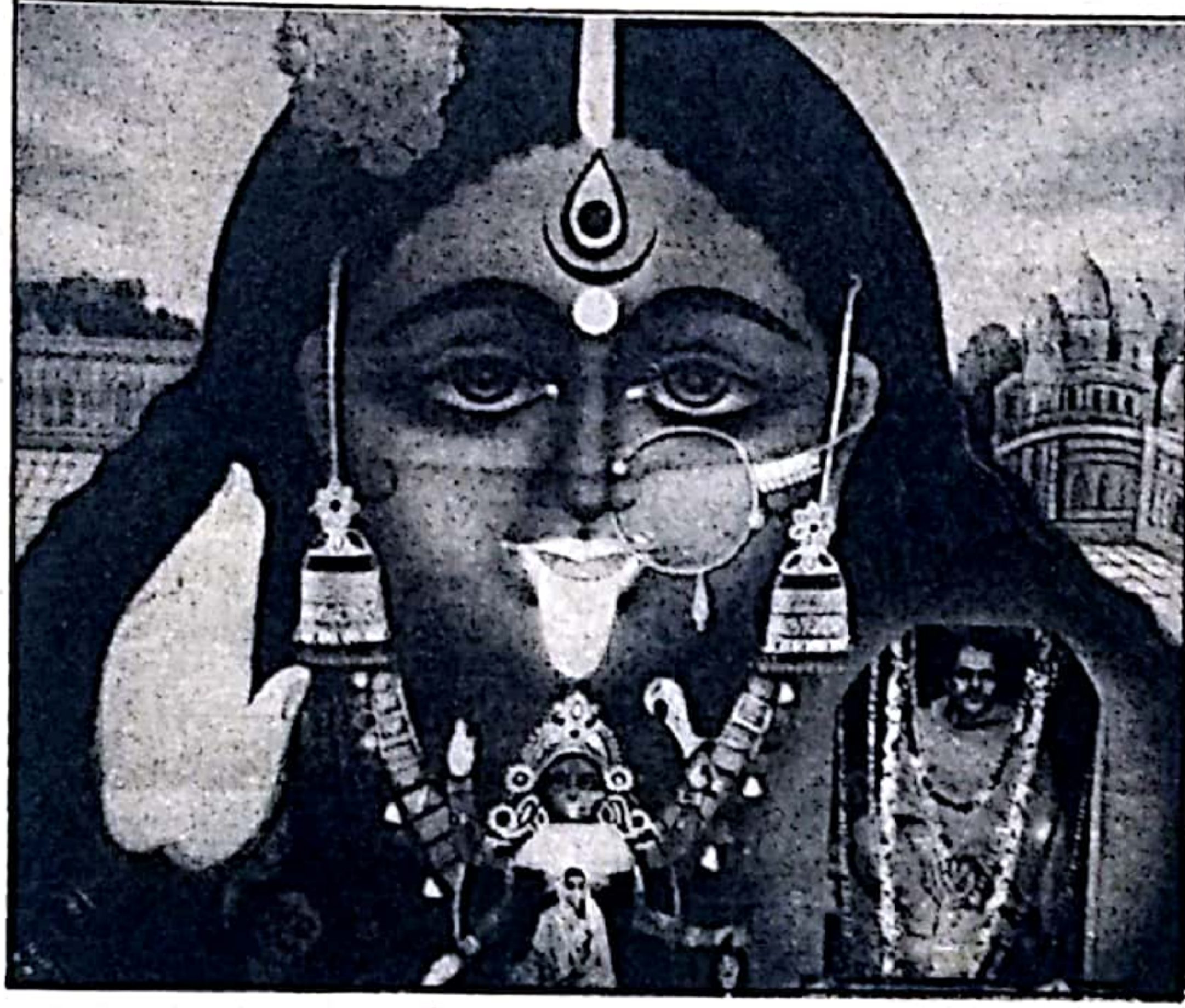
विरंच्यादिदेवास्त्रयस्ते गुणास्त्रीमु,
समाराध्य कालीं प्रधाना बभूवुः।
अनादिं सुरादिं मखादिं भवादिं,
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ।। १ ।।

जगन्मोहिनीयम तु वाग्वादिनीयम्,
सुहदपोषिणी शत्रुसंहारणीयम् ।
वचस्तम्भनीयम किमुच्चाटनीयम्,
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ।। २ ।।

इयं स्वर्गदात्री पुनः कल्पवल्ली,
मनोजास्तु कामान्यथार्थ प्रकुर्यात्।
तथा ते कृतार्था भवन्तीति नित्यं,
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ।। ३ ।।

सुरापानमत्ता सुभक्तानुरक्ता,
लसत्पूतचित्ते सदाविर्भवस्ते।
जपध्यान पूजासुधाधौतपंका,
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ।। ४।।

चिदानन्दकन्द हसन्मन्दमन्द,
शरच्चन्द्र कोटिप्रभापुंज बिम्बम्।
मुनिनां कवीनां हृदि द्योतयन्तं,
स्वरूप त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ।। ५ ।।

महामेघकाली सुरक्तापि शुभ्रा,
कदाचिद्विचित्रा कृतिर्योगमाया।
न बाला न वृद्धा न कामातुरापि,
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ।। ६ ।।

क्षमास्वापराधं महागुप्तभावं,
मय लोकमध्ये प्रकाशीकृतंयत्।
तवध्यान पूतेन चापल्यभावात्,
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ।। ७ ।।

यदि ध्यान युक्तं पठेद्यो मनुष्य
स्तदा सर्वलोके विशालो भवेच्च।
गृहे चाष्ट सिद्धिर्मृते चापि मुक्ति,
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ।। ८ ।।

ऊपर लिखा यह स्तोत्र यदि यह कहा जाय कि मां काली का आवाहन मंत्र है तो कोई अनुचित बात नहीं क्योंकि श्रेष्ठ साधकों ने श्रद्धा युक्त होकर सस्वर पाठ करने से **'मां काली'** का बिम्ववत अथवा साकार दर्शन भी प्राप्त किया है सामान्य रूप से भी इसका पाठ करने से सारे वातावरण में अद्भुत चैतन्यता और उत्साह का वातावरण बन जाता है, **प्रत्येक स्तोत्र अपने अंदर कुछ न कुछ विशेषता छुपाये ही होता है और यह स्तोत्र भी इतना अधिक तीक्ष्ण प्रभाव युक्त है कि यदि साधक इसको सिद्ध कर किसी भी उग्र साधना में अथवा श्मशान साधना में प्रवृत्त होता है तो उस सफलता मिलती ही है।** मां काली तो **श्मशानालयवासिनीम्** कही गयी हैं और श्मशान की अधिष्ठात्री इस देवी की उपासना करने के उपरान्त साधक को कौन सी ऐसी श्मशान साधना है जो सिद्ध न हो जाय। केवल श्मशान साधनायें ही नहीं, जीवन की वह प्रत्येक विपरीत स्थिति जो जीवन की जीवन्तता में बाधा बनकर जीवन को श्मशान तुल्य, नीरस एवं निश्चेष्ट बना गई हो, उसका निवारण भी मां भगवती महाकाली की कृपा से ही संभव होता है। स्तोत्र जहां मंत्र स्वरूप होतें हैं, वहीं उनमें प्रार्थना एवं याचना का ऐसा मधुर स्वर मिला होता है कि संबंधित देवी या देवता के भाव - पक्ष को स्पर्शित करने वाला होता है और यही विशेषता इस स्तोत्र में भी समाहित है।

इस स्तोत्र को सिद्ध करने की विधि अत्यंत सरल है, कृष्ण पक्ष के किसी भी मंगलवार अथवा अष्टमी की रात्रि में आरम्भ कर नित्य २१ दिन तक की जाने वाली इस सरल साधना में केवल इस स्रोत का नियम पूर्वक ५१ पाठ करने आवश्यक होतें हैं जो इस लघु स्तोत्र को देखते हुए बहुत अधिक नहीं है। यह ध्यान रखने योग्य तथ्य है कि जितने दिन तक यह पाठ किया जाय उतने दिनों तक साधक ब्रह्मचर्य पूर्वक रहे, यदि संभव हो तो एक समय ही भोजन करे, भोजन तामसिक न हो एवं भूमि शयन करे।

यदि इसी स्तोत्र को **सिद्ध चण्डी यंत्र** (जो तावीज रूप में हो) **के समक्ष किया जाय तो यह अनुष्ठान मात्र न रहकर सिद्ध प्रयोग में बदल जाता है और ऐसे यंत्र पर किये गये प्रयोग के उपरान्त उसे शरीर पर धारण करने से व्यक्ति को स्थायी लाभ मिलता है तथा वह लाभ उसके साथ जीवन पर्यन्त बना रहता है।**

यदि साधक प्रयोग रूप में करना चाहता है तो वह कहीं से भी **सिद्ध चण्डी यंत्र** जो श्मशान काली मंत्रों से अभिसिक्त हो उसे प्राप्त कर, भूमि को साफ कर उस पर लकड़ी का बाजोट बिछाये और उस पर लाल वस्त्र बिछा कर तांबे के पात्र में यह यंत्र रखे, स्वयं भी लाल रंग के वस्त्र धारण कर, लाल रंग के आसन पर बैठे, उसका मुख दक्षिण दिशा की ओर हो। इस यंत्र पर सिंदूर, काजल एवं कुंकुम अर्पित कर, तेल का दीपक लगालें तथा स्तोत्र के ५१ पाठ करें। ऐसा प्रयास करें कि प्रथम दिन आपने साधना जिस समय से प्रारम्भ की है प्रत्येक दिन उसी समय से प्रारम्भ करें।

केवल साधक ही नहीं यदि कोई सामान्य रूप से भी इस अनुष्ठान को सिद्ध कर यह यंत्र अपने शरीर पर धारण करता है तो उसे प्रत्येक आकस्मिक कष्ट एवं दुर्घटना से मुक्ति मिलती ही है। ■

अघोरियों के साथ मेरा एक सप्ताह

"घोर का अर्थ है शिव और अघोर का तात्पर्य है शक्ति। शास्त्रों के अनुसार मनुष्य जीवन अष्ट पाशों से बंधा हुआ है -- आशा, तृष्णा, जुगुप्सा, भय,विषय, धृणा, मान और लज्जा -- जो इन पाशों से मुक्त हो जाता है, वही ''अघोरी'' है।"

आज समाज में अघोर और अघोरी शब्द भले ही व्यंगात्मक और जुगुप्सा मिश्रित ढंग से लिया जाता हो और किसी भी गंदे मैल कुचैले साधु को देख कर 'अघोरी' की संज्ञा दे दी जाती हो, किंतु यह शब्द अपने आप में इतना हीन और न्यून नहीं है। अघोर पंथ कोई उच्छृंखल या भोग-विलास का मार्ग नहीं है, और विकृतियां तो बौद्ध धर्म जैसे नितांत सहिष्णु और तपश्चर्या से परिपूर्ण पद्धति में भी वज्रयान के प्रचलन से कालांतर में पनप गईं तो क्या इसके मूल में जाकर बौद्ध धर्म को हेय कहा जा सकता है? ठीक यही स्थिति अघोर पंथ के साथ हुआ, यह शरीर ही सभी साधनाओं का मूल है और उसी को आधार बनाकर उस रसमयता तक पहुंचा जा सकता है--जिसे ब्रह्मानन्द की संज्ञा दी गई है,। अघोर पद्धति में इसी बात को प्रमुखता से स्वीकार किया गया है।

साधनाओं में मेरी रुचि अवश्य थी किंतु अघोर पंथ के विषय में सामान्य जन की भांति ही मेरी धारणायें थी। मेरी

इस धारणा का खंडन सहसा तब हुआ जब मुझे संयोग वश कुछ अघोरियों के साथ जीवन के कुछ क्षण व्यतीत करने का अवसर मिला। मेरे एक मित्र उच्च्य प्रशासनिक पद पर आसीन हो कर उत्तर प्रदेश के चमोली जिले में पहुंचे थे। उनके अनुरोध पर मैंने केदारनाथ के दर्शन करने का मानस बनाया और उनके स्थान पर पहुंच गया। **उत्तराखंड का सम्पूर्ण क्षेत्र जहां एक ओर देवमयता और तप की ऊर्जा से भरा हुआ है, वहीं वहां के दुर्गम स्थानों पर आज भी ऐसे श्रेष्ठ तांत्रिक और अघोरी साधना रत हैं** जिनसे मिलकर आश्चर्य के साथ-साथ विश्वास भी होता है कि वास्तव में हमारी प्राचीन साधना-पद्धतियां कितनी श्रेष्ठ और उच्च्य कोटि की रही हैं। ऐसे ही एक अघोरी जिनका वास्तविक नाम कोई नहीं जानता था किंतु उनकी बोलचाल से अनुमान लगा कि वे बंगाली हैं, सभी स्थानीय नागरिक उन्हें **'बंगाली साधु'** के नाम से सम्बोधित करते थे, मझोला कद और गहरे तांबयी रंग के उस व्यक्तित्व में यदि कोई असाधारण बात थी तो उसकी हंसी। अपनी काली और तीखी आंखों को चमकाते हुए जब वह उन्मुक्त रूप से हंस पड़ता था तो सारा मन उसके सम्मोहन में बंध जाता था। कोई कह ही नहीं सकता था कि इस बेडौल और भयावह लगते पुरुष में ऐसी निश्छल और सम्मोहनकारी हंसी भी छुपी हो सकती है। **गुप्तकाशी नामक स्थान से काली मठ जाने के मार्ग में जहां बीच में जंगल अत्यधिक घना हो जाता है, वहीं एक अत्यन्त उबड़-खाबड़ और दुर्गम सी पहाड़ी की आड़ में बना हुआ था उनका निवास स्थान।** मेरे मित्र के प्रशासनिक पद पर होने के कारण और इस विषय में थोड़ी बहुत रुचि होने से उन्हें उस क्षेत्र में गुप्त रूप से साधना रत कुछ एक ऐसे विशिष्ट तांत्रिकों का ज्ञान था और उन्हीं के सहयोग से मैं उस व्यक्तित्व तक पहुंचा।

पूज्यपाद गुरुदेव का उत्तराखंड के क्षेत्रों में उनके सन्यस्त रूप -परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी का नाम कितनी मधुरता और सम्मान के साथ स्मरण किया जाता है, इसकी एक झलक मुझे इस साधु से मिलकर मिली। मैं अपने मित्र के साथ पैदल लगभग तीन किलोमीटर की खड़ी चढ़ाई पार करने के बाद, जब उनके आश्रम पर पहुंचा, तो वह अपने चार या पांच शिष्यों के साथ बैठे थे। मेरे मित्र से तो वह परिचित ही थे लेकिन शून्य में देखती उनकी बड़ी-बड़ी आंखें मेरा नाम लेकर कह रही थीं - "क्या वह भी साथ आया है? किधर है?" और मैं अचकचाकर उन्हें श्रद्धा से प्रणाम कर बैठा। एक क्षण को मुझे लगा कि ऐसा तो कर्णपिशाचिनी जैसी मामूली सी सिद्धि प्राप्त करके ज्ञात किया जा सकता है, लेकिन उनके चेहरे पर उतर आयी दिव्यता से स्पष्ट लग रहा था कि वह ऐसी किसी छोटी-मोटी सिद्धि के वशीभूत होकर नहीं कह रहे हैं, और उन्होंने धारा प्रवाह मुझसे अपनी ही शैली में कुछ कहना आरम्भ कर दिया, जिसका सार यह था कि --**यह परिवर्तन और संक्रमण का युग है जबकि इस धरा पर परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी अवतरित हुए हैं, जिनसे न केवल सम्पूर्ण मानवता को लाभान्वित होना है वरन इन्हीं का आश्रय लेकर जीवन -मरण के चक्र से मुक्त हो जाना है,** और यह कहते-कहते वह भावुक होकर रोने लग गया तथा धारा प्रवाह अंग्रेजी में बोलने लग गया। अब मुझे ज्ञात हुआ कि यह तो कोई उच्च कोटि का तांत्रिक है और इसने मुझे जान लिया है कि मैं पूज्यपाद गुरुदेव का शिष्य हूं और अगले ही पल उसने अपनी रहस्यमय मुस्कान फेंकी और मेरे मित्र जो मेरे साथ गये थे और दो तीन अन्य व्यक्तियों से इस प्रकार बात करनी आरम्भ कर दी जैसे कोई सामान्य कृषक अपने अधिकारी से बात करता है। इन कुछ ही क्षणों में मैं झलक पा चुका था कि यह अवश्य ही कोई सिद्ध पुरुष है, भले इसका स्वरूप और इसके आश्रम का वातावरण विकृत लग रहा हो। मैंने अनुरोध कर उसके पास दिन दो-तीन रुकना चाहा और अपने मित्र से बहाना बना दिया कि मैं इस क्षेत्र की प्राकृतिक सुन्दरता को कैमरे में उतारना चाहता हूं।

सबके विदा हो जाने के बाद मैंने उन्हें सश्रद्ध प्रणाम कर उनका वास्तविक परिचय एवं पूज्य गुरुदेव से सम्बन्धों को जानना चाहा। उन्होंने भी बिना कोई दुराव-छुपाव किये मुझे अपने समस्त जीवन क्रम से परिचित कराया, और यह भी बताया कि उन्होंने जीवन के प्रारम्भिक दिनों में पूज्यपाद गुरुदेव से **'अघोर दीक्षा'** प्राप्त कर इस एकान्त में अघोर साधनायें सिद्ध करने में ही अपना जीवन समर्पित करने का

मांस, मदिरा, मैथुन, मत्स्य एवं मुद्रा -- इन पंच मकारों के अतिरिक्त भी विस्तार है अघोर पंथ का और सम्भव है ऐसी कई साधनाएं जो कि अन्यथा करने में वर्षों लग जाते हैं।

वायु गमन जैसी उच्च कोटि की साधना सर्वथा नवीन पद्धति से प्रथम बार . . .

संकल्प कर लिया था अतः वह मेरे गुरुभाई ही थे और इस दुर्गम प्रान्त में मैं एक गुरुभ्राता को पाकर मस्ती और उछाह से भर गया। अब न मुझे जंगल भयावह लग रहे थे और न वहां कोई कष्ट दिखाई दे रहा था। उन्होंने मुझे स्पष्ट बताया कि यह मेरा इस स्थान तक पहुंचना केवल पूज्यपाद गुरुदेव द्वारा प्रदत्त भावना के आधार पर संभव हुआ है, जिससे मैं उनके साथ रह कर अघोर साधनाओं का ज्ञान और उसमें पारंगतता प्राप्त कर सकूं। उन्हें भी पूज्यपाद गुरुदेव ने टैलीपैथी के माध्यम से यह आज्ञा प्रदान की थी।

मुझे अघोर साधनायें करनी हैं- यह सुनकर मैं झुरझुरी से भर गया, क्योंकि मैंने सुन रखा था कि अघोर पद्धति पूर्ण रूप से वामाचार की कोई पद्धति है जिसमें मांस, मदिरा, मैथुन का कोई भेद या परहेज नहीं होता। जबकि मेरे संस्कार प्रारम्भ से ही वेदोक्त पद्धति का अनुसरण करने वाले रहे, मैंने प्रश्नवाचक आंखों से उनकी ओर देखा लेकिन कहीं से भी उस सौम्य और दृढ़ व्यक्ति के चेहरे में गम्भीरता की कमी नहीं थी। उन्होंने मेरे मन में चलते विचारों को एक क्षण में ही पढ़ लिया और हंस कर बोले **"पगले! यह देह तो अस्थि, मज्जा, रक्त और ऐसे ही व्यर्थ के पदार्थो का एक ढेर है, यह तो तुझे सद्गुरु मिल गये हैं और तू जल्दी से जल्दी उनका आश्रय लेकर अपने को साधना की उच्चतम स्थितियों पर पहुंचा दे।"** मैं समझ गया कि उन्हें मेरे मन में चलते विचारों का पता लग गया है और मैं साधना की पवित्रता-अपवित्रता विषयक जिस उलझावों में पड़ा हूं, वे उसी पर चोट कर रहे हैं। साधनाओं की पद्धति के इस क्षेत्र में देह को किस रूप में लिया जाता है यह तो एक शास्त्रीय, जटिल विषय है, लेकिन सीधे-सादे शब्दों में यह विशिष्ट पद्धतियों से देह में छुपे असीम ज्ञान और बल को जागृत करने की क्रिया है। उनके विवेचन और उनकी गम्भीरता को देखकर मेरे सभी उहापोह जाते रहे और मैं समझ गया कि साधारण साधना पद्धति के मार्ग से, **तांत्रोक्त अथवा मांत्रोक्त ढंग से जो साधनायें वर्षो में सिद्ध होती हैं, वे ही साधनायें अघोर पंथ के माध्यम से कुछ सप्ताह में ही सिद्ध हो जाती हैं, क्योंकि इसकी पद्धति और शैली विशिष्टतम जो है। जिन छोटी -मोटी सिद्धियों के लिये, भूत-प्रेत, वीर- वेताल साधनाओं के लिये साधक वर्षो -वर्षो भटकता है, वे तो अघोर पंथ के माध्यम से चुटकी बजाते ही सिद्ध हो जाती हैं।**

अघोर साधना में प्रवृत्त होने से पूर्व आवश्यक था कि मैं **अघोर दीक्षा** से दीक्षित होऊं, और यह दुर्लभ दीक्षा मुझे उन्होंने ही, अपने शरीर में पूज्यपाद गुरुदेव का विशिष्ट अघोर मंत्रों से आवाहन कर, उनका चिंतन और उनसे याचना कर, उन्हें धारण कर, मुझे प्रदान की। शायद इस बात पर पाठकों को विश्वास न हो, किंतु उस क्षण विशेष में उनकी सम्पूर्ण मुख मुद्रा और वाणी पूज्यपाद गुरुदेव के सदृश्य हो उठी थी। मैंने पूज्यपाद गुरुदेव के अत्यन्त आह्लादित स्वरूप का उन बंगाली साधु के शरीर में दर्शन कर उनसे दुर्लभ और गोपनीय दीक्षा प्राप्त की अब आगे का क्रम उन बंगाली साधु को सम्पन्न कराने थे। सम्भवतः उन्हें पूज्यपाद गुरुदेव से ही यह निर्देश मिला था कि वे मुझे वायुगमन साधना सिद्ध करायें। वायुगमन साधना भारत की दुर्लभ गोपनीय विशिष्टतम साधनाओं में से एक है, जिसके ज्ञाता तो गिने चुने ही होते हैं। कहते हैं आद्य शंकराचार्य इस पद्धति के श्रेष्ठ ज्ञाता थे, किंतु उनकी पद्धति भी मांत्रोक्त एवं यौगिक थी जबकि अघोर पद्धति से यही साधना सर्वाधिक सहज और सुलभ बन जाती है।

मेरा एक सप्ताह उन सभी के साथ कितना आनन्दमय और प्रकृति के उस सरल वातावरण में बीता, उसका तो बस अब स्मरण मात्र रह गया है, लेकिन उन्होंने अघोर साधना पद्धति द्वारा मुझे जो वायुगमन सिद्धि कराई उसका मैंने कालान्तर में लाभ कई बार उठाया है। मैं प्रारम्भ में इस साधना की उपयोगिता को लेकर सोचा करता था, लेकिन यह तो भविष्य की उच्च्य कोटि की साधनाओं की आधारभूत साधना है। सामान्य गृहस्थ जीवन को जीता हुआ कोई साधक नित्य प्रति अपने पूज्य गुरुदेव के साथ रहकर साधना क्रम को पूर्णता दे सके, यह प्रायः सम्भव नहीं होता, और तब ऐसी स्थिति में एक ही उपाय शेष रह जाता है कि व्यक्ति या तो वायुगमन सिद्धि प्राप्त करे, अथवा इसी स्थूल देह में सूक्ष्म देह को अलग कर नित्य प्रति पूज्य गुरुदेव से संपर्कित रह सके। दूसरी विधि अत्यन्त कठिन है और विशिष्ट रुप से योग का जटिल विषय है, जबकि वायुगमन सिद्धि अपेक्षा कृत सरल है, यदि इसे भी अघोर साधना पद्धति से किया जाय अथवा **विशिष्ट अघोर दीक्षा द्वारा सीधे ही अपने देह में ऐसे परिवर्तन लाये जा सकें, तो व्यक्ति इच्छा मात्र से एक क्षण में गुरुत्वाकर्षण से मुक्त हो कर वायु में तैरने की कला सीख सकता है।**

मैं पाठकों के लाभार्थ वायुगमन की यह अघोर विधि भी यहां संक्षेप में प्रस्तुत कर रहा हूं।

साधना पद्धति

रात्रि को ११ बजे के पश्चात एकान्त कक्ष में पूर्ण रूप से "स्व" होकर बिना किसी आसन अथवा वस्त्र के भूमि पर बैठ जायं और मुंह दक्षिण दिशा की ओर रखें। सामने भूमि पर काजल से दो त्रिकोण एक दूसरे को काटते हुये उल्टे व सीधे बनायें, इसके मध्य में **अघोर सदाशिव त्रिपुरारी यंत्र** स्थापित करें। उसे तेल मिश्रित सिंदूर से पूरी तरह रंग दें और बिना किसी माला के अनुमाने से लगभग ३ घंटे नित्य अघोर मंत्र का जप करें। इसे किसी भी अमावस्या से प्रारम्भ करना लाभदायक है अन्यथा कृष्ण पक्ष के रविवार या शुक्रवार की रात्रि से आंरम्भ करें।

(शेष भाग पृष्ठ ३४ पर)

क्या पूर्व जन्म के संबंधों का प्रभाव इस जन्म पर पड़ता है ?

मानव का सारा जीवन, उसका प्रत्येक क्रिया - कलाप उसके जीवन में घटनेवाली प्रत्येक घटना, उससे मिलने वाले व्यक्ति -- सभी के सूत्र इस जीवन में ही नहीं, पिछले जीवन और पिछले से भी पिछले जीवनों तक जाकर मिलते हैं। पता नहीं किन-किन जन्मों के संस्कार- कुसंस्कार, माता-पिता के संस्कार और कुसंस्कार लेकर व्यक्ति का व्यक्तित्व गठित होता है। इसी से मनुष्य अपने जीवन में प्रायः यह अनुभव करता है कि वह जैसा बनना चाहता है, वैसा बन नहीं पाता, वह जैसी स्थितियां और जैसा साहचर्य पाने का प्रयास करता है, वैसा उसके जीवन में कभी संभव हो पाता है तो कभी नहीं। इन्हीं स्थितियों में व्यक्ति अपने भाग्य को दोष देता है, हताश होकर बैठ जाता है। यह एक सहज स्थिति है कि कोई भी व्यक्ति अनेक प्रयासों के बाद सफलता न मिलने पर निराश हो ही उठेगा, लेकिन इसे श्रेयष्कर नहीं कहा जा सकता। प्रत्येक स्थिति का हल और उसका कारण ढूंढते समय इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि अवश्य ही इसके सूत्र इस जीवन में नहीं मिल रहे हैं तो क्या कहीं पिछले जीवन में जाकर छिपे हैं? ऐसा क्यों होता है कि कार्यालय में कोई व्यक्ति अनायास हमारा विरोधी बन बैठता है, पुत्र घर के सारे श्रेष्ठ वातावरण के बाद भी अवज्ञाकारी और संस्कारहीन बन जाता है, पुत्री सामाजिक आचरण के विपरीत आचरण करती है या, कोई ऋण लेकर उसे वापिस नहीं लौटाता?

सामान्य दृष्टि से देखने पर तो हम इन्हें व्यक्तिगत दोष कह सकते हैं लेकिन साधक की दृष्टि से देखा जाय तो इनका कारण मात्र इतना ही नहीं होता, होता यह है कि आपने पिछले जन्म में किसी के साथ विश्वासघात किया होगा तो वही इस जन्म में आपका अधिकारी बन कर आपके जीवन में आया हो, हो सकता है आपने अपनी पत्नी की उपेक्षा की हो तो वही स्त्री पुनः इस जन्म में आपकी पत्नी बन कर मानसिक प्रताड़ना दे रही हो, हो सकता है कि आपके घर में जो आपका पुत्र वर्षों से बीमार चल रहा है और जिसके इलाज पर आपके हजारों रुपये खर्च हो गये हों, आपने वास्तव में पूर्वजन्म में उसका कुछ धन हड़प लिया हो और वही इस जन्म में आपका पुत्र बन कर अपने उसी धन की वसूली कर रहा हो। जीवन के अनेक ऋण, अनेक छल-कपट व्यक्ति के साथ-साथ जन्म-जन्मान्तर तक चलते ही रहते हैं। केवल कुसंस्कार ही नहीं सुसंस्कार भी, केवल शत्रु ही नहीं पूर्व जन्म के मित्र भी इस जन्म में मिलते हैं। **जीवन का निर्माण करते समय एक साधक सप्रयास ऐसे सभी संबंधों को ढूंढ निकालता है जो उसके पूर्व जन्म के सहायक हों और उन सभी संबंधों का जिनके प्रति वह ऋणी हो, उनका भुगतान कर देता है, जिससे आगामी जीवन का मार्ग निष्कंटक और तनाव रहित हो।** हमारे देश की परम्परा रही है कि व्यक्ति अपने जीवन में अधिक से अधिक दान-पुण्य करे। जिससे किसी ऋण या दायित्वों के कारण उसको विवश होकर पुनः संसार चक्र में फंसना न पड़े। इसी को संसार में आवागमन से मुक्ति का मार्ग कहा गया है।

व्यक्ति यदि सामान्य प्रयासों से चाहे कि वह पूवर्जन्मों के सभी संबंधों को पहचान ले और वह उसके अनुरूप अपने सभी ऋण और दायित्वों से मुक्त हो जाय, तो यह संभव नहीं। इसके लिये तो कुछ विशेष क्रियायें, साधना का कोई मार्ग चुनना ही पड़ता है और फिर **व्यक्ति की आंखों के सामने चलचित्र की तरह सारा पूर्वजीवन क्रम, सभी संबंधों की वास्तविकता, अपने पूर्वजन्म की न्यूनतायें, सभी कुछ एक-एक करके स्पष्ट होने लगती हैं** और वह उनको देख समझ कर अपने सम्पूर्ण जीवन को संवार सकता है। इस साधना का अर्थ केवल यहीं तक नहीं है कि व्यक्ति अपने नकारात्मक पक्षों को ही देखे, समझे और सुधारे, इसके सकारात्मक और मधुर पक्ष भी हैं। जीवन का एक विशेष आनन्द

होता है जब व्यक्ति अपने पूर्व जन्म के संबंधियों से मिल जाता है, क्योंकि फिर वहां संबंध बनाने जैसा कुछ भी तो नहीं होता। वहां तो बस एक दूसरे को देखते हैं, दिल में कुछ कौंधता है और आकर्षण बढ़ता ही जाता है, जो फिर व्यक्ति को सहज प्रेम तक ले जाता है। उसमें बनावटीपन या दबाव नहीं होता, परिचय बढ़ाने वाली बात ही नहीं होती, वहां तो कुछ कहने की भी आवश्यकता शेष नहीं रहती। ऐसा व्यक्ति के जीवन में कभी-कभी संयोग वश भी घट जाता है, और व्यक्ति समझ नहीं पाता कि अमुक क्यों अचानक अच्छा लगने लगा था लगने लगी। संयोग वश घटित हो जाने वाली इस घटना को यदि व्यक्ति स्पष्ट रूप से समझ - बूझ कर यदि जीवन में उतार ले तो आनन्द और भी अधिक बढ़ जाता है। **कई साधकों को ऐसे अनुभव हुए हैं कि उन्हें पहले बिम्ब रूप में और फिर थोड़े से प्रयासों से वास्तविक रूप में अपने पूर्व जन्म के संबंधी मिले हैं और निश्चय ही मिलते हैं,** परस्पर बिना कुछ कहे वे दोनों यों मिले, जैसे वर्षों से एक दूसरे को जानते हों और परिचय आदि की औपचारिकताएं एक ओर धरी रह गयीं। जो तृप्ति उन्हें अपने परिवार में वर्षों अपने माता-पिता अथवा भाई-बहन के साथ नहीं मिली, वह उन्हें दो क्षण में मिल गयी।

पूर्व जन्मों को पहचानने की एक अचूक साधना है, जिसका नाम **''इन्द्राणी कृत प्रिय दृश्य साधना''** है यद्यपि पूर्व जन्म दर्शन की अनेक साधनाएं संभव हैं लेकिन इस साधना की विशेषता यह है कि यह साधना पहली बार में ही सिद्ध हो जाती है। प्राचीन काल में प्रत्येक गुरु अपने शिष्यों को इसी विधि से साधना करा कर पूर्णता दिलाने का प्रयास करते थे। इस साधना के माध्यम से जहां शिष्य पूर्व जन्म को भली-भांति देख लेता था, अपने कमियों को समझ कर सुधार लेता था, वहीं वह ऐसी क्षमता भी प्राप्त कर लेता था कि किसी अन्य को देखते ही उसके भूत-भविष्य और पिछले जन्म में अपने व उसके मध्य के संबंधों को भी जान लेता था।

साधना विधि :-

किसी गुरुवार से प्रारंभ की जाने वाली इस साधना में रात्रि के दस बजे के पश्चात स्वच्छ वस्त्र पहन कर, पीले रंग के आसन पर उत्तर दिशा की ओर मुंह करके सामने एक पात्र में **''इन्द्राणी यंत्र''** स्थापित कर उसका कुंकुम, अक्षत व पुष्प की पंखुड़ियों से सामान्य पूजन कर **''पूर्वजन्म दृश्य माला''** से नित्य प्रति २१ माला का मंत्र जप करें। इस पूरे साधना काल में शुद्ध घी का एक बड़ा सी दीपक जलते रहना आवश्यक है, जिसकी लौ पर त्राटक करते हुए ही मंत्र जप करना है। मंत्र जप की समाप्ति पर उसी लौ पर ध्यान पूर्वक २० मिनट देखना आवश्यक है।

मंत्र

क्लीं पूर्व जन्म दर्शय दर्शय फट्

मंत्र जप के उपरान्त नित्य त्राटक करने की स्थिति में धीरे-धीरे आपको उसी लौ में विविध दृश्य और चेहरे दिखाई देने आरम्भ हो जायेंगे। इनमें से कुछ आपके परिचित होंगे तो कुछ अपरिचित, धीरे-धीरे इसी लौ में आपके उनसे संबंध भी स्पष्ट होने लगेंगे, इसके पश्चात आप उनसे व्यक्तिगत सम्पर्क कर सत्यता की जांच खुद भी कर सकते हैं। इस साधना में सफलता का अनुपात साधक की आन्तरिक लगन तीव्रता, वातावरण की शुद्धि और एकाग्रता पर निर्भर करता है।

जब जीवन में ऐसा संभव हो जाता है और आपके प्रयास सफल हो जाते हैं, तभी जीवन में नव निर्माण की स्थितियां बनती हैं, तभी व्यर्थ का तनाव और बनाये हुए संबंधों की बोझिलता से मुक्ति मिल, जीवन में सुखद अनुभूतियों का क्रम आरम्भ होता है। जब तक ऐसा नहीं होता तब तक यह जीवन बोझ स्वरूप है जिसमें व्यक्ति कर्त्तव्यों की बोझ की गठरी अपने सिर पर लादे धीमी और हताश चाल से मृत्यु पथ पर गतिशील रहता है, जो जीवन का ध्येय नहीं है। जीवन का ध्येय है कि प्रत्येक पल उमंग, उल्लास, तृप्ति और निश्चिंतता से व्यतीत हो और यह तभी संभव है जब आप अपने जीवन में पूर्व संबंधों को पहचान, कर्त्तव्यों की गठरी एक ओर रख, सहज होकर जी सकें। दायित्व और कर्म तो इसके पश्चात भी शेष रहते हैं लेकिन तब वे बोझ स्वरूप और कटु नहीं रह जाते, फिर उनके निर्वाह में भी जीवन का कोई सार कोई तृप्ति मिलने लगती है, क्योंकि तब जो कुछ कर रहे होते हैं, वह अपने किसी प्रिय के लिए ही तो कर रहे होते हैं। पूर्व जन्म के संबंधों के ज्ञान का हमारे वर्तमान जीवन पर पड़ने वाला यह श्रेष्ठतम प्रभाव है।

साधना की समाप्ति पर यंत्र को किसी पवित्र नदी अथवा मंदिर में विसर्जित कर दें एवं माला को धारण कर लें। इसमें दिवसों की संख्या निर्धारित नहीं है।

■

. . . और दिल्ली की ही शान्ति देवी की कथा लोग क्या अभी तक भूल पाये है ? १६२६ में जन्मी इस महिला के पूर्व जन्म के विवरणों ने तो पूरे देश में तहलका मचा दिया था और भारत सरकार द्वारा बनाई गई वैज्ञानिक समिति भी पुनर्जन्म मानने को बाध्य हो गयी थी।

एक गोपनीय प्रयोग

पवन पुत्र श्री हनुमान जन-जन के उपास्य देव अचानक ही नहीं बन गये। अपनी तीव्र शक्ति और भक्तों पर सहज अनुकम्पा कर देने की उनकी वरदायक शक्ति ने उन्हें लोक उपास्य बना दिया है। ऐसे ही वीर और अतुलित बल - धामा श्री हनुमान की साधना यदि व्यक्ति अपने ऊपर या अपने परिवार में किसी सदस्य के उपर व्याप्त भूत-प्रेत की बाधा निवारण के लिए करता है, तो उसे आशातीत लाभ प्राप्त होता ही है। इस साधना को करने के लिए किसी विशेष विधि - विधान की आवश्यकता नहीं होती, केवल एक निश्चित क्रम को अपना कर नित्य सायं शुद्धता पूर्वक प्रयोग किया जाय तो बाधा की तीव्रता के अनुसार कुछ ही दिनों मे पूर्ण मुक्ति मिल जाती है।

साधना विधि :-

इस साधना को करने के लिए आवश्यक है कि साधक यदि स्वयं के लिए प्रयोग कर रहा हो अथवा किसी अन्य के लिए प्रयोग कर रहा हो तब भी, लाल धोती पहन कर दक्षिण की ओर मुंह करके बैठे, सामने एक तांवे के पात्र में **"हनुमान गुटिका"** स्थापित कर लोबान जला दें एवं मंत्र सिद्ध प्रामाणिक हनुमान चित्र को सामने स्थापित कर उस पर श्रद्धापूर्वक लाल फूल चढ़ाये, घी का दीपक जलाये तथा गुड़ व घी को मिला कर उसे नैवेद्य रूप में अर्पित करें तथा कुछ क्षण शांत मुद्रा में बैठकर मानसिक रूप से श्री हनुमान का वीर व कल्याणकारी रूप में चिंतन कर, निम्न मंत्र का ११ वार उच्चारण करें। यदि यह प्रयोग किसी अन्य के लिए कर रहे हैं तो उसे भी स्नान करा कर लाल वस्त्र पहनायें एवं लाल आसन पर बैठा कर, उसके दाहिने हाथ की सबसे छोटी उंगली पकड़कर मंत्र का उच्चारण करें इस प्रयोग को शनिवार से प्रारम्भ करें।

-: मंत्र :-

ॐ रामदूताञ्जनाय वायुपुत्राय महाबल पराक्रमाय सीता दुःख निवारणाय लंकादहन कारणाय महाबल प्रचण्डाय फाल्गुन सखाय कोलाहल सकल ब्रह्माण्ड विश्वरूपाय सप्तसमुद्रनीरलंघनाय पिंगलनयनायाति विक्रमाय सूर्यबिम्बफल सेवनाय दुष्टनिर्बहणाय दृष्टि निरालंकृताय संजीविनी संजीवितांग दल लक्ष्मण महाकपिसैन्य प्राणादाय दसकंठ विध्वंसनाय रामेष्टाय फाल्गुन महा सखाय सीता सहित रामवरप्रदाय षट् प्रयोगागम दक्षिणमुखाय पंचमुख हनुमते करालवदनाय नरसिंहाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः सकल भूत-प्रेत दमनाय स्वाहा ।।

यह अपने आप में एक अत्यंत सिद्ध व तीव्र मंत्र है। यदि इस मंत्र का नित्य प्रति श्री हनुमान जी के चित्र के समक्ष पाठ किया जाय तब घर में भूत - प्रेत बाधा व्याप्त नहीं होती।

प्रयोग की सफलता प्राप्त हो जाने के बाद हनुमान गुटिका को घी , गुड़ एवं लाल वस्त्र के साथ कुछ उचित दक्षिणा रख मंदिर में दान कर दें।

श्री हनुमान नित्य ध्यान

उद्यन्मार्तण्डकोटिप्रकटरुचियुतं चारुवीरासनस्थं।
मौञ्जीयज्ञोपवीतारुणरुचिरशिखाशोभितं कुण्डलांकम्।।
भक्तानामिष्टदं तं प्रणतमुनिजनं वेदनादप्रमोदं।
ध्यायेद्नित्यं विधेयं प्लवगकुलपतिं गोष्पदी भूतवारिम्।।

अगले अंक में पढ़िये

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

का गौरवशाली विशेषांक

भगवती जगदम्बा दुर्गा विशेषांक

- समस्त ब्रह्माण्ड को खण्ड - खण्ड फोड़ने वाला अपराजिता स्तोत्र जो शत्रुओं के लिए तो भयंकर वज्र है
- क्या कलियुग में भी भगवती जगदम्बा का प्रत्यक्ष दर्शन संभव है।
- भगवती जगदम्बा धन वर्षिणी प्रयोग - जो पहली बार प्रकाशित हो रहा है
- विश्व का तीव्रतम प्रज्वलित नवार्ण मंत्र
- जब मैंने मरघट चण्डी को सिद्ध किया
- कुछ सिद्ध मंत्र : जिनकी कोई तुलना ही नहीं है
- भगवती वज्र कवच -- जो साधक की पूर्ण देह रक्षा है
- कुछ भयंकर रोग और संबंधित सिद्ध सफल मंत्र
- नवरात्रि पूजन -- प्रयोग -- साधना
- कुछ गोपनीय तथ्य : जो दुर्गा साधना सफलता में सहायक है
- **''कलौ चण्डी विनायकौ''** कलियुग में तो गणपति और दुर्गा साधना ही श्रेष्ठतम है
- **तीन सिद्ध साधनाएं --**
  (१) बगलामुखी (२) भुवनेश्वरी (३) षोडशी महाविद्या
- चण्डी साधना से जीवन की समस्त कामनाएं सफल हो सकती हैं
- दुर्गा वशीकरण प्रयोग तो गजब की उपलब्धि है।
- इसके अलावा **''मंथन''** के अन्तर्गत- **अगला प्रधान मंत्री कौन ?** की समापन कड़ी
  देव्यपराधक्षमापन स्तोत्र, जगदम्बा साक्षात दीक्षा.आरती स्तोत्र और बहुत कुछ. . .

२१ सितम्बर तक भारत के समस्त बुक स्टालों पर उपलब्ध

भूतों को वश में करने की साधना

भूत वश्य साधना

कैसा नष्ट भ्रष्ट हो जाता है उसका जीवन, जिस पर दुर्घटना वश किसी भूत-प्रेत का प्रकोप हो जाय। जीते जी व्यक्ति मृत प्राय हो जाता है। सही तो वही जानता है जो कभी भुक्त - भोगी रहा हो . . . .

भले ही कोई माने या न माने, भूतों का अस्तित्व होता ही है। यह पूछिये उनसे जिनके ऊपर बीती हो, जिनके ऊपर बीतती है, वे ही जानते हैं कि कैसा प्रबल प्रकोप होता है इन इतर योनियों का। कैसी - कैसी क्षमताएं बढ़ जाती हैं इन योनियों के अंदर से भूमि तत्व निकल जाने के कारण। हवा में उड़ती हुई वस्तुएं, उलटते-पलटते कपड़े, हर क्षण ऐसा आभास होना कि कोई अदृश्य व्यक्ति भी इस घर में रह रहा है या घर में चलने पर अपने पीछे-पीछे किसी की स्पष्ट पदचाप सुनाई पड़ना, सामने रह-रहकर कोई काला साया तैर जाना- कई बातें प्रमाण होती हैं उनकी उपस्थिति की।

केवल उपस्थिति ही नहीं, भूत- प्रेतों से सारे घर का वातावरण विषाक्त और मलिन बन जाता है, जिस घर में कोई अप्राकृतिक मृत्यु हो, उसमें तो यह अभिशाप बन कर छा जाते हैं, कभी घर का कोई सदस्य पागल कर देते हैं, कभी कोई अपने अंदर कुत्सित व घृणित विचारों की भीड़ भरी पाता है, तो कोई अपने अंदर अत्यधिक कामोत्तेजना को भड़कता हुआ पाता है। इसी को भारतीय शास्त्रों में पितृदोष कहा गया है, जब कि कोई भी अतृप्त आत्मा अपनी भोजन संबंधी, भोग व कामवासना संबंधी इच्छाओं की पूर्ति के लिये किसी को भी माध्यम बना लेती है। ठोस देह न होने के कारण वे अपनी वासनाओं की पूर्ति करने में असमर्थ होते हैं और इसी से किसी को माध्यम बना, ऐसी आवश्यकताएं पूरी करते हैं।

जिस व्यक्ति पर ऐसे इतर योनियों का प्रकोप एक बार हो जाय, उसका सारा जीवन नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है और सारा चिन्तन दूषित। ऐसे व्यक्ति को मुक्ति दिलाने का केवल एक ही उपाय शेष रह जाता है कि वह पूरी क्षमता से **"भूत वश्य साधना"** कर अपने को मुक्त कर सके। यह साधना एक ऐसी विशेष साधना है, जिसमें पीड़ित व्यक्ति हेतु कोई अन्य व्यक्ति भी संकल्प कर साधना कर सकता है, फिर भी उचित यही रहता है कि संबंधित व्यक्ति ही इस साधना को स्वयं करे।

साधना विधिः-

शनिवार की रात्रि को की जाने वाली इस साधना में, रात्रि का द्वितीय प्रहर होने पर साधक, कक्ष में काले रंग के ऊनी आसन पर बैठे और

अपना मुंह दक्षिण दिशा की ओर रखे। वह स्वयं भी काले रंग के वस्त्र धारण करे और सामने लोहे के पात्र में सिन्दूर से त्रिशूल बना कर उस पर काले तिलों की ढेरी बना ले, जिस पर **"भूत डामर यंत्र"** स्थापित कर उसका तिल, सिन्दूर, लौंग, इलायची से पूजन करें। इस पात्र के सामने ही घर में जितने दरवाजे हैं, उतनी कीलें भी रखें। सामने तांबे के पात्र में जो सामान्य से कुछ बड़ा हो जल रखें, यदि साधक स्वयं प्रयोग कर रहा है तो अपने नाम से संकल्प ले अन्यथा यदि किसी अन्य के लिए प्रयोग किया जा रहा है तो उसके नाम का संकल्प भरें। इस विशेष साधना में गुरु-पूजन अति आवश्यक है, क्योंकि गुरुदेव ही वह दक्षिणमूर्ति हैं जो कि ऐसी सर्वस्व बाधाओं के निवारण में सहायक होते हैं, फिर **"काली हकीक माला"** से निम्न मंत्र का जप करें, यह जप ग्यारह माला ही पर्याप्त है।

मंत्र

ॐ फ्रौं भूत वश्य वश्य वश्य आज्ञा पालय फट्

मंत्र जप के उपरान्त **भूत डामर यंत्र** को अपने पूजा स्थान में ही काले वस्त्र में लपेट कर रख लें, किन्तु ध्यान रखें कि जहां आपकी सात्विक साधना की सामग्री रखी हो, उसके साथ इसे मत रखें। जिस पात्र में जल रखा था उस में से जल लेकर घर में छिड़क दें तथा स्वयं भी थोड़ा सा जल ग्रहण कर लें। यदि किसी के लिए संकल्प लेकर साधना कर रहे हों तो उसे यह जल पिला दें। जितनी कीलें हैं, उन्हें प्रत्येक दरवाजे की चौखट पर नीचे की ओर गाड़ दें। प्रथम बार में यदि सफलता न मिले तो इस प्रयोग को दूसरी या तीसरी बार भी दुहराना चाहिए। जब व्यक्ति पूर्ण रूप से लाभ अनुभव करने लगे, तब भूत डामर यंत्र एवं काली हकीक माला को लोहे की कुछ कीलों के साथ काले वस्त्र में बांध कर दक्षिण दिशा की ओर जंगल में फेंक दें अथवा किसी निर्जन स्थान पर गड्ढा खोदकर गहराई में गाड़ दें।

खड़खड़ाहट होना, किसी की पदचाप सुनाई देना, ऐसा लगना कि कोई पास खड़ा होकर फुसफुसा रहा है, सीने पर दबाव अनुभव करना, अचानक बेहद भयग्रस्त हो उठना -- ये सभी लक्षण हैं कि अवश्य ही भूत बाधा या प्रेत बाधा व्याप्त हो उठी है।

भूत वश्य का यह प्रयोग कई विशेष प्रभावों से युक्त है, जिसकी प्रमुख विशेषता तो यह है कि इस प्रयोग के मध्य में भूत-प्रेत आदि उग्र होकर सामने वाले पर आक्रमण नहीं करते। प्रायः देखा गया है कि ऐसी साधनाओं में, जब कि किसी इतर योनि को वश में किया जा रहा हो तो वह क्रोधित होकर सामने वाले पर आक्रमण ही कर बैठती है।

इस साधना का कई साधकों ने लाभ उठाया है और अपने स्वयं के जीवन के साथ-साथ अपने परिवार में सुख शांति का वातावरण बनाया है। **हैदराबाद के साधक श्री एस. रामा रेड्डी** ने अपने परिवार में भूत-प्रेत बाधाओं के दूषित वातावरण से ऊब कर इस प्रयोग को आजमाने के तौर पर किया। श्री रेड्डी बताते हैं कि जब उन्होंने उपरोक्त वर्णित विधि से प्रयोग आरम्भ किया तो अचानक कमरे में सड़ी लाश जैसी बदबू आयी, जिससे वे विचलित हो उठे। किसी प्रकार अपने आप को नियंत्रण में रख, उन्होंने मंत्र जप खंडित नहीं होने दिया। उन्होंने मंत्र जप के आगे के क्रम में पुनः अनुभव किया कि कोई उनके आस-पास पदचाप कर रहा है और मांस जलने की तीव्र दुर्गन्ध के साथ-साथ एक काली आकृति को अपने आस-पास मंडराते हुए देखा। सारा वातावरण दूषित हो गया और मन में कुत्सित विचारों का प्रभाव आरम्भ हो गया था, कुछ ही देर बाद उन्होंने हल्के भूरे रंग की एक और आकृति देखी जो कि स्त्री आकृति लग रही थी। **श्री रेड्डी ने हड़बड़ाहट में कुछ और समझ न आने पर सामने पात्र में रखे जल को ही उठा कर उन पर फेंक दिया, आश्चर्य ! जल फेंकते ही दोनों आकृतियां शून्य में विलीन हो गई** और सारा वातावरण शांत हो गया। उसके पश्चात् आज तक उन्हें फिर कोई कष्ट नहीं हुआ, जबकि इससे पहले तो उनके घर में नित्य ही लड़ाई-झगड़े और तनाव का वातावरण बना ही रहता था।

■

गुरुवः पूर्णरूपो हि शंकर परात्मनः।
मूढ़स्ते वै न जानान्ति मोहिता शिवमायया।।

(शिव पुराण)

(पृष्ठ २७ का शेष भाग)

इस साधना में साधक को क्रोध मुद्रा बनाकर जप करना चाहिये। इस साधना में कमरे में केवल एक तेल का दीपक जलता रहे, अन्य किसी प्रकार का कोई प्रकाश न हो। साधना के मध्य में कई प्रकार की भयावह आकृतियां, भयावह स्वर अथवा दुर्गन्ध अनुभव हो सकती है, जिसके निवारण के लिये साधना से पूर्व **"हुं हुं हीं हीं कालिके घोर दंष्ट्रे प्रचंड चण्ड नायिके दानवान दारय हन हन शरीरे महा विघ्न छेदय छेदय स्वाहा हुं फट्"** इस मंत्र का पांच बार उच्चारण कर चारों दिशाओं एवं आकाश की ओर पीली सरसों फेंक देने से पर्याप्त सुरक्षा बनी रहती है, साथ ही अघोर साधनाओं में यह ध्यान रखने योग्य तथ्य है कि साधक स्वयं को शिव रूप माने, उसी प्रकार से नित्य जीवन में आचरण करे, और निरंतर ध्यान रखे कि पूज्यपाद गुरुदेव अपने प्रचण्ड शिव स्वरूप में प्रतिक्षण उसके साथ हैं।

मंत्र :-

ॐ अघोरेभ्यो सर्व कार्य सिद्धयर्थम् त्र्यम्बकाय नमः

इस अघोर साधना विधि के पूर्ण प्रमाणिक होने के उपरान्त भी मेरा दृढ़ मत है कि साधक यदि प्रयास पूर्वक पूज्यपाद गुरुदेव से **विशिष्ट अघोर दीक्षा** प्राप्त कर ले, तो न केवल वायुगमन साधना वरन अघोर पंथ की अन्य साधनायें भी सहज प्राप्त हो सकती हैं। पूज्य गुरुदेव तो भगवान शिव के सामन ही औघढ़दानी हैं, किस पल वे रीझ जायं और कब ऐसी दुर्लभ दीक्षा दे दें इसके प्रयास में सजग साधक सदैव चेष्टारत रहते हैं। ■

हे !
भैरव - भीषण

"भयभीमादिभिः अवतीति भैरवः" अर्थात भीमादि भीषण साधनों से रक्षा करने वाले भैरव हैं। **दुर्गा सप्तशती** के पाठ के प्रारम्भ और अन्त में भी भैरव की उपासना आवश्यक और महत्वपूर्ण मानी गयी है। ऐसा ही मंगल कारक देव श्री भैरव की स्तुति परक एक रचना -

यं यं यं यक्ष रूपं दशदिशिवदनं भूमिकम्पायमानं।
सं सं सं संहारमूर्ति शुभ मुकुट जटाशेखरम् चन्द्रबिम्बम्।।
दं दं दं दीर्घकायं विकृतनख मुखं चौर्ध्वरोयं करालं ।
पं पं पं पापनाशं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्र पालम् ।। १ ।।
रं रं रं रक्तवर्ण कटक कटितनुं तीक्ष्णदंष्ट्राविशालम् ।
घं घं घं घोर घोष घ घ घ घ घर्घरा घोर नादम् ।।
कं कं कं काल रूपं घगघग घगितं ज्वालितं कामदेहं।
दं दं दं दिव्यदेहं प्रणमतसततं भैरवं क्षेत्र पालम् ।। २ ।।
लं लं लं लम्बदंतं लललललुलितं दीर्घ जिह्वकरालं ।
धूं धूं धूं धूम्र वर्ण स्फुट विकृत मुखं मासुरं भीमरूपम् ।।
रूं रूं रूं रुण्डमालं रुधिरमय मुखं ताम्रनेत्रं विशालम् ।
नं नं नं नग्नरूपं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ।। ३ ।।
वं वं वं वायुवेगम प्रलय परिमितं ब्रह्मरूपं स्वरूपम् ।
खं खं खं खड्ग हस्तं त्रिभुवननिलयं भास्करम् भीमरूपम् ।
चं चं चं चालयन्तं चलचल चलितं चालितं भूत चक्रम ।।
मं मं मं मायकायं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ।। ४ ।।
खं खं खं खड्गभेदं विषममृतमयं काल कालांधकारम्।
क्षि क्षि क्षि क्षिप्रवेग दहदह दहन नेत्र संदीप्यमानम् ।।
हुं हुं हुं हुंकार शब्दं प्रकटित गहनगर्जित भूमिकम्पं ।
बं बं बं बाललीलं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्र पालम्।। ५ ।

◆

अद्वितीय

भगवती जगदम्बा प्रत्यक्ष

शारदीय नवरात्रि साधना शिविर

१६.१०.६३ से २२.१०.६३

भारत के हृदय प्रांत - मध्य प्रदेश की सुरम्य स्थली और विशाल औद्योगिक नगर

भिलाई

जहां आध्यात्मिक व साधनात्मक वातावरण का निर्माण करने के लिए
पूज्यपाद गुरुदेव

डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी

(परम हंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी)

के

आशीर्वाद एवं कृपा दृष्टि के तले
पवित्र, दिव्य एवं आध्यात्मिक वातावरण में
गोपनीय साधनाओं,दुर्लभ दीक्षाओं व सिद्धियों को हस्तगत करने के लिए तथा
पूर्ण ऋषि तुल्य वातावरण में कुछ क्षण व्यतीत करने के लिए

सम्पूर्ण भारत वर्ष के शिष्यों एवं साधकों को

हम सिद्धाश्रम साधक परिवार के सदस्य आमंत्रित करते हैं

यात्रा निर्देश :- दक्षिण भारत और गुजरात की ओर से आने वाले साधक दुर्ग जंक्शन पर उतरें, गुजरात से आने वाले साधक अहमदाबाद- हावड़ा ट्रेन से आ सकते हैं। दिल्ली से सीधी ट्रेन के माध्यम से दुर्ग रेलवे स्टेशन पहुंचा जा सकताहै। भिलाई दुर्ग से ६ कि.मी. दूर है।

शिविर शुल्क :- **६६० /- मात्र**

इस शिविर में पूज्य पाद गुरुदेव द्वारा प्रदान किया जाने वाला दिव्य शक्ति पात तथायज्ञ के द्वारा मां जगदम्बा का प्रत्यक्षीकरण तो विलक्षण बन जाने वाली घटना सिद्ध होगी ।

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें

श्री के. आर. कुर्रे (रायपुर) - ०७७१ - ५३३२१७६
श्री सोम शेखर (दुर्ग) - ३२२७६६
श्री टी. सुब्बा राव (भोपाल) - ०७५५ - ५४६२८२
श्री के. बी. द्विवेदी (थाना प्रभारी)
पुलिस थाना, पंडरिया, बिलासपुर

आयोजन स्थल - अग्रसेन भवन,सेक्टर - ६, भिलाई- ४६१००६

मृत्यु के बाद व्यक्ति कहां जाता है?

भारतीय जन मानस का यह सहज विश्वास है कि मृत्यु के उपरान्त भी व्यक्ति की यात्रा समाप्त नहीं होती और इसी धारणा से जुड़ी है कथाएं स्वर्ग की, नरक की, यमराज की, देवदूत के आगमन की और किसी उड़न खटोले में बैठकर मृत्यु के उपरान्त किसी दिव्य धाम चले जाने की। सीधी सी बात है कि व्यक्ति न तो यह स्वीकार कर पाता है कि मृत्यु के उपरान्त उसका जीवन समाप्त हो जायेगा और न यह स्वीकार कर पाता है कि मृत्यु के पश्चात उसका जीवन किसी अंधेरे में खो जायेगा, जबकि सच्चाई यह है कि हमें मृत्यु के पश्चात के जीवन का कुछ भी तो सही-सही नहीं पता और इस भय की पूर्ति करते हैं हम विविध कल्पनायें करके।

विविध कल्पनाओं, स्वर्ग-नरक के तानों-बानों के बीच बुनी एक रहस्यात्मक कथा के पश्चात जो तथ्य परक विषय है, वह यह है कि वास्तव में **व्यक्ति की केवल एक देह ही नहीं होती, उसकी एक के बाद एक करके क्रमशः सात देह होती हैं। जिसको हम मृत्यु कहते हैं, वह व्यक्ति के स्थूल शरीर का नाश है।** इसके पश्चात उसका इच्छा शरीर, सूक्ष्म शरीर, मनस शरीर जैसे कई भेद हैं और इन्हीं शरीरों की अंतिम स्थिति है -- व्यक्ति की अपनी आत्मा। इन परतों के नीचे छिपे उस आत्म प्रकाश तक की यात्रा, व्यक्ति इस जीवन में भी कर सकता है और मृत्यु के उपरान्त भी।

वास्तव में मनुष्य स्थूल शरीर और सूक्ष्म शरीर दोनों लेकर जीवन भर एक साथ चलता रहता है, जिसका एक सामान्य सा उदाहरण है, व्यक्ति के सपनों की दुनियां, जिसमें उसका सूक्ष्म शरीर उसकी देह से अलग होकर कालखण्ड में आगे और पीछे विचरण कर लेता है। यही स्थिति जाग्रत अवस्था में भी संभव है। व्यक्ति जीते जी, अपनी आंखों से, अपने स्थूल शरीर से अलग होकर कालखण्ड में आगे व पीछे गमन कर स्थितियों को देख सकता है, सुन सकता है, समझ सकता है। योगीजन सदैव ऐसी स्थितियों में ही अवस्थित रहते हैं, इसी से किसी का भूत-भविष्य और वर्तमान उनके लिए अगोचर नहीं रह जाता। इस लेख में हमारी विषय वस्तु सूक्ष्म शरीर का विवेचन न होकर यह है कि क्या मृत्यु के उपरान्त जीवन होता है?और यदि वह जीवन होता है तो कैसा होता है? उसमें क्या विशेषता होती है मृत्यु के उपरान्त का जो संसार है, उसमें कैसा आवागमन है? किस प्रकार का संबंध है? किस प्रकार की शारीरिक स्थिति है? वहां रहना सुखद है या दुखद? यही वे प्रश्न हैं जो सामान्य मानव के अन्दर चलते रहते हैं, जिनके सही उत्तर न मिल पाने के कारण व्यक्ति जीवन भर मृत्यु शब्द से भयभीत रहता है और अपनी आयु बढ़ाने के लिए सोचता रहता है। **परन्तु मृत्यु भयानक और डरावना शब्द न होकर एक प्रकार से पुराने शरीर को नवीन शरीर में रूपांतरित कर देने की क्रिया है।** इसी से शरीर को वस्त्र कहा गया है और मूल स्थिति आत्मा की मानी गयी है। मृत्यु को हमारे यहां 'जीवन का श्रृंगार' और 'जीवन का आनंद' कहा गया है, तभी तो कबीर दास को जब इब्राहिम लोधी ने मरवा देने की धमकी दी तो कह उठे -

''जा मरने से दुनियां डरे, मेरे मन आनन्द।
कब मरिहौं कब देखिहौं, पूरन परमानन्द ।।''

पाश्चात्य देशों में भी इसी तरह की स्थितियों को लेकर खोज की गयी और वहां पर इस विषय में मिलने वाले साहित्य की एक लम्बी सूची है, जिनमें **''फैन्टाज्म्स ऑफ द लिविंग''**, **''द सोल ऑफ थिंग्स''** **''लाइफ आफ्टर डेथ''**, **''साइकिक रिसर्च टुडे''** इनमें से कुछ प्रमुख ग्रन्थों के नाम हैं।

इस विषय में क्या मृत्यु के उपरान्त कोई जीवन है,इस बात का आधार बन सकता है तो केवल ऐसा कोई व्यक्ति जो कभी किसी दुर्घटना वश घायलावस्था में मृतप्राय हो गया हो अथवा जो लोग किसी गम्भीर बीमारी में ग्रस्त होकर डाक्टरी भाषा में मरने की स्थिति में पहुंच गये हों। ऐसे भी कई उदाहरण समाज में मिलते ही हैं कि जब कोई व्यक्ति श्मशान ले जाया जा रहा हो और वह रास्ते में अथवा चिता पर उठ बैठा हो। इसके अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं कि मृत्यु की स्थितियों में गये व्यक्ति के अनुभव को जान सकें। इस विषय में भेंट वार्ताएं करने के बाद,उनके अनुसार वर्णन के ढंगों में तो अन्तर है।

(शेष पृष्ठ ७४ पर)

जीवन का चौंकाने वाला तथ्य. . . . . जिसने गर्भ चुनने का रहस्य ही जान लिया, उसने इच्छा मृत्यु की भी दशा स्वतः प्राप्त कर ली। महाभारत काल की गोपनीय साधना पद्धति जिसके अंतिम आचार्य थे. . . भीष्म पितामह

श्रेष्ठ गर्भ का चयन हमारे हाथों में है !

मनुष्य के जीवन का प्रारम्भिक काल तो बचपन की भूल-भुलैया में ही कट जाता है, और किशोरावस्था सपनों में। किशोरावस्था से युवावस्था की ओर बढ़ने के क्रम में उसे जीवन की वास्तविकताओं का बोध होना आरम्भ होता है, जो दिन-प्रतिदिन क्रमशः गहरा होता जाता है। आम भारतीय का जीवन यही होता है कि एक दम से वह युवावस्था आते ही प्रौढ़ावस्था में जा गिरता है, तब आरम्भ होता है जीवन में एक प्रकार का नैराश्य और विषाद। नैराश्य इस कारण से नहीं कि जीवन में कुछ अर्जित नहीं किया, नैराश्य इस कारण से कि जीवन के प्रारम्भिक दिनों में जो आदर्श और जो स्वप्न मन-मस्तिष्क में संजोये थे, उनकी कहीं से स्थितियां बनती नहीं दिखतीं। सामान्य रूप से व्यक्ति ऐसी दशाओं में जीवन से समझौता कर, जीवन की चली आ रही व्यवस्थाओं को अपना कर समाज का एक अंग बन जाता है, जिसकी नियति गुमनामी के अंधेरे में खो जाने वाली होती है, फिर न उसके पास स्वप्न होते हैं, न आशायें। ***बंधी-बंधाई लीकों पर चल कर व्यक्ति युवावस्था और प्रौढ़ावस्था से वृद्धावस्था में जाकर चुपचाप किसी दिन इस संसार से विदा ले लेता है।***

इसी सामान्य जीवन क्रम के मध्य में कुछ व्यक्तित्व ऐसे भी होते हैं, जिन्हें समझौतों का मार्ग नहीं भाता, लेकिन परिस्थितियां उन्हें समझौता करने को बाध्य कर देती हैं, और तब उनके सामने आरम्भ होती है कसमसाहट अन्दर ही अन्दर चलती इस कसमसाहट में प्रत्येक सचेतन व्यक्ति सोचता ही है कि आखिर ऐसा क्यों? और यह 'क्यों' ही, फिर व्यक्ति को जीवन के अनेक पहलुओं से सोचने के लिए विवश कर देता है। चिन्तनशील व्यक्ति अपने को एक- एक कसौटी पर कसता है। उसकी कसौटियां होती हैं प्रारम्भ में समाज में बनाये नियम और मर्यादायें। वह उन पर अपने को कसकर देखता है और सोचता है कि मुझसे किस स्तर पर चूक हो गई, मुझे और क्या करना चाहिए, मेरे प्रयासों में, मेरे चिन्तनों में अतिरिक्त क्या जुड़ना चाहिए, और ऐसा चिन्तन कर व्यक्ति अपने आप को त्वरा देने का प्रयास करता है। शीघ्र ही उसे ज्ञात हो जाता है कि वह जिन सांसारिक नियमों के आधार को अपना कर बढ़ना चाह रहा है, वह आधार अपर्याप्त है, तब मोह भंग होता है और ऐसे क्षणों में फिर व्यक्ति सामान्य बने नियमों से हटकर अलग सोचना प्रारम्भ करता है। चिन्तन के ऐसे ही क्रम में, ऐसे ही मानसिक विचार-विमर्श में कहीं न कहीं, कभी न कभी व्यक्ति को लगता है कि काश! ऐसा हुआ होता कि मुझे बचपन से ऐसा वातावरण मिला होता या ऐसे परिवार में जन्म हुआ होता। भौतिक रूप से जहां व्यक्ति ऐसा सोचता है अपनी धन संबंधी और पद-प्रतिष्ठा संबंधी इच्छाओं को लेकर,वहीं आध्यात्मिक दृष्टि से ऐसे बिन्दु पर आकर सोचता है कि काश! मुझे अच्छे संस्कार वाले माता-पिता मिले होते या मुझे बचपन से ही श्रेष्ठ आध्यात्मिक वातावरण मिला होता। फिर मैं इसी जीवन में पवित्रता और

साधनात्मक श्रेष्ठता की किन्हीं ऊंचाइयों पर पहुंच जाता। व्यक्ति का यह चिन्तन सर्वथा निराधार और हवा में किले बनाने जैसी बात भी नहीं। व्यक्ति की इस कसक के पीछे सचमुच जीवन का एक सत्य छुपा है, जोउसके सम्पूर्ण जीवन में ठोस अथवा दुर्बल आधार बनकर चलता रहता है।

जिस प्रकार से इस संसार में आपाधापी और धक्का देकर अवसर छीन लेने की होड़ है, उसी तरह सूक्ष्म जगत में धक्का देकर दुष्टात्मा श्रेष्ठ गर्भ छीन लेती है, जिससे किसी कुलीन और संस्कारित परिवार में जन्म ले लेता है कोई गाली - गलौच करने वाला बालक और वहीं किसी असभ्य कुसंस्कारित माता-पिता के मध्य जन्म ले लेता है कोई शांत बालक।

धन संबंधी और भौतिक आवश्यकताओं से संबंधित बातें तो अन्य माध्यम से भी व्यक्ति अपने जीवन में पूर्ण कर सकता है लेकिन जहां यही विषय आध्यात्मिक अर्थों में आ जाता है, वहां इसके कई पक्ष और कई सम्भावनायें सामने आती हैं। साधक प्रायः पूज्य गुरुदेव के समक्ष यह समस्या लेकर उपस्थित होते हैं कि मैं इतने वर्षों से अमुक देवी या देवता की साधना कर रहा हूं, किंतु मुझे अभी तक न तो भौतिक सफलतायें ही मिलीं और न ही दर्शन। साधारण बोलचाल में प्रायःएक लोकोक्ति कही जाती है--

" जैसा खाओगे अन्न वैसा बनेगा मन। जैसा पीओगे पानी वैसी बनेगी वाणी।"

साधारण बोलचाल में कही गयी यह बात जीवन के महत्वपूर्ण तथ्य को उजागर कर देती है। व्यक्ति का जन्म से जिस वातावरण में पोषण हुआ हो, उसे जैसे माता-पिता मिले हों, उनके द्वारा जैसा रक्त उसके धमनियों में संचरित हुआ हो, जैसे उनके संस्कार हों, जिस ढंग से उन्होंने धन उपार्जित कर अपने शिशु का पोषण किया हो-- वे सब संस्कार या कुसंस्कार व्यक्ति के अन्दर भी संचरित हो ही उठते हैं, ***केवल माता पिता के ही नहीं व्यक्ति के पूर्वजों के संस्कार भी उसके शरीर में सद्प्रवृत्ति या कुप्रवत्ति बनकर प्रकट होते हैं।*** हमारे धार्मिक अनुष्ठानों में सात पीढ़ियों का स्मरण किया जाता है जिसका तात्पर्य है कि हमारी सात पीढ़ियों पूर्व तक के संस्कार हममें संक्रमित होते हैं।

जीवन के उपरान्त जीव की स्थिति के विषय में यह सुनिश्चित है कि उसे जन्म तो लेना ही पड़ता है, किन्तु अपनी इच्छा के अनुरूप गर्भ मिल ही जाय यह आवश्यक नहीं। जिस प्रकार से संसार में भीड़ है और कुछ चालाक और चौकन्ने लोग तेजी से धक्के देकर आगे बढ़कर लपकना जानते हैं, उसी प्रकार से इस जीव जगत के परे के जगत में भी धक्का -मुक्की और आपा - धापी है, प्रायः इस जगत से भी ज्यादा, जहां एक श्रेष्ठ आत्मा के लिए अवसर की अत्यन्त न्यूनता है कि वह किसी श्रेष्ठ गर्भ का चयन कर सके। वास्तव में मृत्यु के उपरान्त व्यक्ति के पास चुनाव का अवसर ही कहां कि वह अपने संस्कारों के अनुकूल किसी श्रेष्ठ माता - पिता के घर में जन्म ले सके। जैसे ही वह इस देह से मुक्त हुआ और आत्माओं की उस विशाल भीड़ में पहुंचा नहीं कि उसे बाध्य हो जाना पड़ता है कि जहां भी, जैसे भी अवसर मिले वह किसी गर्भ में जा गिरे। इसी से एक संस्कारित ब्राह्मण के घर में गाली - गलौच करने वाला लड़का पैदा हो जाता है, तो किसी गन्दी बस्ती के किसी झुग्गी - झोपड़ी में शांत धैर्यवान बच्चा।

दुःसंगं च परित्यज्य चित्त चिह्न मिदं यस्य

अर्थात "दुष्टों के संग को ... चाहिए,जिसके चित्त में ये लक्षण हों ... कर रहा हो उसको यह दीक्षा प्राप्त ...

यह जीवन तो संयोग वश जहां ... में हमारे सामने श्रेष्ठ अवसर है ... अगला जीवन संवारा जा सके।केवल ... की भी अप्रतिम उपलब्धि है क्योंकि ... मृत्यु वरदान।

यह जीवन तो हमे दैववश जहां मिला, जैसा मिला, लेना पड़ा, जो कुछ माता-पिता की न्यूनतायें थीं, वे हमारे रक्त में संचरित हुई हीं। उनका छल-कपट, व्यभिचार, ओछापन सब कुछ हमारी धमनियों में भी उतर आया, जो पग-पग पर बाधा बन कर खड़ा हुआ, लेकिन अब भविष्य में ऐसा न हो कि हम अपने कर्मों के

साथ-साथ अपने माता-पिता के कुसंस्कारों और माता-पिता ही नहीं पूर्वजों के कुसंस्कारों को भी भुगतने को बाध्य हों, इसका चिन्तन साधना पथ पर गतिशील साधक के मन में आता है।

जीवन की कड़ी धूप में चलता व्यक्ति जिस सुखद छांव की आशा में चलता रहता है, वह यह है कि जीवन के उस छोर पर तो हमें विश्राम मिलेगा, कहीं कोई अपने को किसी स्वप्न जाल में उलझा कर जीता रहता है तो कोई यह सोच लेता है कि एक दिन ऐसा होगा जब मैं मृत्यु की

पापकर्म परित्यजेत्।
तस्य दीक्षा विधीयते।।
-- गुरु गीता

छोड़, पाप कर्म का परित्याग करदेना
अर्थात जिसका चित्तपाप कापरित्याग
होती है।''
मिला वहीं लेना पड़ालेकिन इसजीवन
भविष्य जन्म दीक्षा के माध्यम से कि
अगला जीवन ही नहीं यह इस जीवन
यही तो है महाभारत में वर्णित इच्छा

गोद में जाकर विश्राम पा लूंगा। साधारण व्यक्ति ही नहीं, श्रेष्ठ साधक भी ऐसी ही मृगतृष्णा में जीवन जीता है कि जीवन के उस छोर पर मैं **''मोक्ष''** प्राप्त कर समस्त बन्धनों से मुक्त हो जाऊंगा। मोक्ष की जैसी कल्पना हमारे मानस में है वह भी एक प्रकार की तृष्णा ही है। **भगवान बुद्ध** ने व्यक्ति की अनेक तृष्णाओं में से एक तृष्णा यह भी मानी थी -- ''जीवन के उपरान्त किसी शून्य में खो जाने की तृष्णा।'' जीवन का अंत मृत्यु के उपरान्त भी नहीं होता। व्यक्ति का पुनः - पुनः आगमन संभव होता ही है। इसके मध्य जो मोक्ष की दशा है, वह यह है कि व्यक्ति समस्त मोह, द्वंद्वों, तृष्णाओं और कर्म जाल के बंधन से मुक्त हो सके। **भगवान बुद्ध** ने इसका निरूपण इस प्रकार से किया था ''सभी संस्कार अनित्य हैं,ऐसा जब प्रज्ञा से देखा जाता है, तभी सब दुखों से वैराग्य प्राप्त हो जाता है, जो कि निर्वाण का मार्ग है।'' ऐसी स्थिति में प्रबुद्ध व्यक्ति और योग्य साधक के सामने एक ही मार्ग रह जाता है कि जहां एक ओर वर्तमान जीवन में सद्गुरु का आश्रय लेकर अपने को सब बंधनों से मुक्त कर ले, वहीं भविष्य की यात्राओं के लिए भी कुछ शेष न रखे, जिसे कर्म के बीज को दग्ध करने की संज्ञा दी गई है। ऐसा संभव है और श्रेष्ठ युगपुरुष या श्रेष्ठ योगीजन इसी प्रक्रिया को अपना कर *अपनी इच्छानुसार जन्म लेते हैं।* ***अपनी इच्छानुसार जन्म लेने का तात्पर्य है कि व्यक्ति के हाथ में हो कि वह किन उचित क्षणों में जन्म लेगा।*** जब श्रेष्ठ संस्कारों से युक्त सुयोग्य माता-पिता गर्भ धारण की क्रिया करेंगे, तभी वह गर्भ में प्रविष्ट होगा।

यह गुरु - शिष्य परम्परा का गुह्यतम विषय है। पूज्य सद्गुरुदेव अपने जिस शिष्य पर उसकी सेवा, साधना, समर्पण से विशेष कृपालु हो उठते हैं, उसे कुण्डलिनी जागरण के साथ ही साथ इच्छा मृत्यु विद्या भी प्रदान कर देते हैं। आज भी यह विषय पन्नों पर उद्धृत नहीं किया जा सकता किन्तु विशिष्ट दीक्षा के माध्यम से पूज्य गुरुदेव यह ज्ञान अपने शिष्य में उतार देते हैं। ऐसे श्रेष्ठ साधक, शिष्य को यह ज्ञान रहता है कि उसे जीवन के किस क्षण में अपनी देह का त्याग करना है और उसके उपरान्त कितने समय तक ब्रह्माण्ड में अवस्थित रहकर उसे उस क्षण की प्रतीक्षा करनी है, जब उसे उचित गर्भ प्राप्त हो सके। यह अचरज भरी दुर्लभ स्थिति संभव होती है पूज्य गुरुदेव प्रदत्त **''भविष्य जन्म दीक्षा''** से, जिसे शास्त्रों में इच्छा मृत्यु वरदान कहकर भी वर्णित किया गया है। ऐसे वर प्राप्त साधक को बाध्यता नहीं रहती कि वह किसी धक्के से सामने जैसा भी, जो गर्भ निर्मित हो रहा हो उसमें प्रवेश ले ले, इस दीक्षा के माध्यम से व्यक्ति अपना यह जीवन सम्हालने के साथ -साथ भावी जीवन भी संवार लेता है। उसे अगले जन्म में अपने पूर्व जन्म का भली-भांति स्मरण रहता है। इस जन्म के समस्त अर्जित ज्ञान लेकर वह अगले जीवन में इस प्रकार प्रवेश कर जाता है, जैसे व्यक्ति सहजता से एक दरवाजे को पार कर दूसरे कमरे में चला जाय।

◆

शरीर में आत्मा का प्रवेश

(नव भारत टाइम्स से साभार)

मार्च · सन्६० की बात है, मुजफ्फर पुर जिले के श्री गिरधारी सिंह जाट का तीन वर्षीय पुत्र जसवीर चेचक के रोग से शाम ६ बजे मर गया, दूसरे दिन सबेरे चार बजे श्मशान घाट ले जाने पर वह जीवित होकर बोला -- '' मैं तो बहेड़ी गांव के शंकर त्यागी का लड़का हूं और अभी- अभी गिरकर मरा हूं '' तुरन्त २५ कि. मी. दूर बहेड़ी गांव में जाकर पता किया गया तो घटना सत्य निकली और जसवीर ने भी त्यागी परिवार को पहचान लिया।

◆

अप्सरा

मेरी प्रेमिका है.

क्या होता है जो किसी स्त्री या पुरुष को जीवन में अकेला चलते-चलते एकाएक कहीं बांध देता है, ऐसा क्यों होने लगता है कि कल तक जो जीवन अपने आप में ही खोया-खोया और अपने आप में ही मगन था, वह फिर किसी के लिये छटपटाहट से भर जाता है, किसी को निहारने के लिये, उसकी बस एक झलक पाने के लिये और जब तक उसकी एक झलक नहीं दिख जाती, तब तक सब कुछ खाली-खाली और सूना -सूना लगता है। क्या बातें छुपी हैं इसके पीछे? क्या चेहरे की कोई खूबसूरती, क्या देह का आकर्षण, दिल की कोई धड़कन खो जाने, या खो जाने की ही नहीं बल्कि चुरा ले जाने जैसी कोई बात? फिर लगता है कि यह खोज ही गलत है। प्रेम करने वालों ने इतना कब सोचा होगा? वह तो बस खोये तो खो ही गये, अब सच्चाई बताये कौन? फिर तो कुछ-कुछ पढ़ा जा सकता है गहराती हुई आंखों में, छुपी मुस्कराहटों से, और माथे पर बिखर आई किसी लट को हौले से उंगली के सहारे कानों के पीछे समेटती अदाओं से, अगर खामोशी पढ़नी आती हो तो! नाम सुनते ही चौंक कर देखना कि कोई उसके छुपे धन को तो नहीं छीन रहा, यह भाषा होती है किसी प्रेमी या प्रेमिका की. . . . .

पर प्रेमिका शब्द आते ही व्यक्ति यों चौंक जाता है जैसे उससे कोई घोर पाप हो गया है, और वह झेंप कर आसपास कनखियों से देखने लगता है कि कहीं उसे किसी ने देख तो नहीं लिया। प्रेमिका के विषय में सारा चिन्तन एकांगी और वासना पूर्ण रहा है। प्रेमिका का तात्पर्य केवल देह तक नहीं सीमित होता। प्रेमिका तो एक पूर्ण स्वस्थ और सुरुचि सम्पन्न पुरुष के जीवन की, यदि कहा जाय रत्न जड़ित मुद्रिका है, तो गलत नहीं होगा। प्रेमिका का तात्पर्य है जो केवल अपनी देह और भाव - भंगिमाओं से ही नहीं वरन अपने हृदय की सारी आन्तरिकता और मधुरता से किसी पर रीझ जाय, वह इस तरह से आपके जीवन के एक-एक पल पर छा जाय और इतने अधिक आग्रह से हर पल को समेट ले कि सारा मन भींग जाय। सचमुच लगे कि कोई है जो केवल शब्दों से या, हावभाव से नहीं, बल्कि अपनी आन्तरिकता से मुझसे प्रेम करती है। आन्तरिकता की अनुभूति ही हृदय तक उतर कर पूर्ण तृप्ति देती है। इस जगत की स्त्री का प्रेम तो एक बार मात्र दैहिक या छल से भरा हो सकता है लेकिन अप्सरा के साथ ऐसा कोई शब्द नहीं जुड़ा। ***अप्सरा तो एक ऐसी नारी है जो सख्त से सख्त दिल वाले को भी प्रेमी बना कर छोड़े, कठोर से कठोर हृदय वाला व्यक्ति भी रीझना सीख जाय।*** उसे फिर उसके सिवाय कोई न भाय, सोते जागते उसी की बातें, उसी की चाहतें, आंखें खोई-खोई सी अधमुंदी हो जायं, उनमें कशिश और गुलाबी रंगतें उतर आंए, और ये सब पुरुष के जीवन में उतार देती है 'अप्सरा' उसकी प्रेमिका बन कर।

मैंने **रंजिनी अप्सरा** की साधना की और वह मंत्रों के विशेष प्रभाव से पहली बार में ही मेरे सामने उपस्थित हो गई। सचमुच रंजिनी अपने नाम की ही तरह रंजिनी है, खूबसूरत बड़ी-बड़ी आंखें और भोलेपन के साथ कोमलता से देखने की उसकी वह अदा कि मुझे लगा ही नहीं कि

मैं पहली बार उससे मिल रहा हूं, कुछ शर्म को ओढ़कर और कुछ शर्म को छोड़कर वह आगे बढ़ी, आंखों को हल्का सा झुका कर और चाल में लज्जा की थिरकन भर कर मेरे हाथों को थाम लिया। नर्म और शीतल स्पर्श से मैं जगा और अपने को समझाया कि मैं स्वप्न नहीं देख रहा हूं। एक अनिन्द्य सौन्दर्य मेरे सामने इसरार लेकर खड़ा है। उसकी बड़ी-बड़ी आंखें बोल रही थीं कि मेरे सांचे में ढले सौन्दर्य को निहारो! सचमुच ***सिर से पांव तक वह सांचे में ढली थी। पीछे की ओर खींच कर बांधे घने बाल, उसके छोटे से गोल मुखड़े को और भी खिला रहे थे। पीछे घुटनों तक जाती घनी चोटी जो पूरी की पूरी फूलों और गहनों में सजी थी, ऐसा लगा कि पृष्ठ का श्रृंगार उसने वेणी को फूलों से भर कर दिया हो। गोरे माथे पर छोटी सी दिपदिप करती सुनहरी बिन्दी और के वस्त्रों में उसका यौवन पता नहीं उसके गोरे रंग को धधका रहा था या मुझे, लेकिन उसने अपने अंग-प्रत्यंग को नख से शिख तक जिस प्रकार से सजा रखा था, वह उसके यौवन को श्रृंगारित करने के साथ-साथ उसकी सुरुचिप्रियता को भी बता रहा था।*** पांवों की एक-एक उंगलियों तक का श्रृंगार उसने मन लगा कर किया था। मैं एकटक मुग्ध होकर उसके श्रृंगार और श्रृंगार से भी अधिक उसकी सुरुचिप्रियता को देख रहा था, उसके व्यवहार को परख रहा था। उसने जिस तरह से आगे बढ़कर मेरे हाथों को थाम लिया, उससे उसने अपना समर्पण और प्रेम को बिना कुछ कहे ही कह डाला था। उसके अंग-अंग से कांति के साथ सुगन्ध भी आ रही थी। साधना के पहले ही दिन साधना सफल होने पर किसी भी अप्सरा को केवल भविष्य के लिये वचन बद्ध किया जाता है। उलाहना भरी थी, जो सीधी मेरे अंदर तक उतरती चली गई। मेरे कुछ बोलने से पहले बोली -- दो दिन हुए तुम्हें तो मेरे लिये समय ही नहीं था। मैं उसकी आंखों में एकटक देखता, आंखों ही आंखों में मुस्करा दिया। उसके शिकायत भरे स्वर की नर्मी से मेरे मन का तनाव कहीं हवा में तैर गया।

'प्रेमिका' का अर्थ तो मैं रंजिनी की निकटता प्राप्त होने से ही समझ सका और रंजिनी ने भी सभी बंधन तोड़ कर प्रेमिका की तरह ही मेरे साथ व्यवहार करना शुरू कर दिया। ***बाद में तो उसको बुलाने के लिये किसी आवाहन मंत्र की भी कोई आवश्यकता ही नहीं पड़ी। वह हर पल मेरे साथ रहने लग गई।*** जब मैं सभी के बीच में रहता था तो वह अदृश्य रह कर मेरे साथ रहती थी और जहां जरा सा एकान्त हुआ वह झट अपने पूरे श्रृंगार के साथ मेरे सामने

कोई भी आकर जांच ले

नाक में लगी हीरे की कनी के बीच में उसकी आंखें, दोनों झिलमिलाहटों से भी अधिक झिलमिला रही थीं। स्वस्थ कपोल, छोटा सा चिबुक, पतले और कुछ नीचे झुकते अधर और नर्म और गुलाबी कानों में लटकते स्वर्ण के कुण्डल, छोटी और ऐसी कोमल गर्दन जिस पर जाती नसों की धड़कनें धुकधुक करके सहमी हिरनी की तरह भाग रही थीं। कंधों और बांहों के सौन्दर्य को बिना छुपाये बस वक्षस्थल को ढांक रखा था लाल रंग के रेशमी और सुनहरे कढ़े एक वस्त्र से और पीछे पीठ पर बंधी वस्त्र की छोटी सी गांठ यों लग रही थी, ज्यों खुले तट पर कोई गुलाबी मोती आकर गिर गया हो। नाभि के नीचे घुटनों तक जंघाओं को कसे वस्त्र, जो उसकी कटि और गहरी नाभि का सौन्दर्य मुखरित कर रहा था। ***लाल रंग***

उसका पुष्पों का हार, ताम्बूल, इत्र देकर स्वागत किया जाता है, और मैंने पहले दिन इसी परम्परा को निभाया। साधना के दो दिन बाद तक मैं कहीं और व्यस्त रहा व रंजिनी का आवाहन कर अपनी साधना की सफलता को परख नहीं सका। तीसरे दिन एकान्त में अवसर मिलने पर जब मैं अकेलापन अनुभव कर रहा था, तब मैंने उसके आवाहन मंत्र का निश्चित संख्या में उच्चारण कर उसे बुलाया। रंजिनी अपने वचन के अनुसार मेरे सामने आकर अपनी मादक गंध के साथ बैठ गई, कुछ छेड़ने के और कुछ मोहित होने के मिले -जुले भाव लेकर वह हौले-हौले पलकें उठाकर मेरी ओर देखती रही और अपने पांव के अंगूठे से गुपचुप रहकर ज़मीन कुरेदती रही। मैंने निगाह उठाकर उसकी ओर देखा, आंखों में

आकर, मेरे साथ मेरी मित्र बन कर, कभी अपने रूप और यौवन से मुझे मुग्ध कर देती थी, तो कभी तनाव में देखने पर अपनी बातचीत की अदा से बातों को कहीं और घुमा कर, और इतने पर भी मैं न मानूं तो मुझे छेड़-छेड़ कर अपनी मादक गंध से मेरे रोम-रोम को सुगन्धित कर जब तक मुझको हंसा नहीं देती थी, तब तक अलग नहीं होती थी। धीरे-धीरे मैं उसके व्यवहार से इतना भीग गया कि उसके बिना एक पल भी नहीं रह पाता था और यही हाल तो उधर उसका भी था।

रंजिनी अप्सरा की साधना

साधना - विवरण

रंजिनी अप्सरा की साधना साधारण अप्सराओं की साधना की अपेक्षा कुछ परिवर्तन से की

जाती है। सुगन्धित द्रव्य एवं विविध आभूषणों में तीव्र रुचि रखने वाली इस सौम्य अप्सरा की साधना सांय के प्रथम प्रहर में ही की जाती है, जिसमें साधक के लिये आवश्यक है कि वह अपने साधना स्थल को भलीभांति सजा संवार कर रखे। यदि संभव हो तो वह कमरे में केवड़े की बाल लाकर स्थापित करे अन्यथा केवड़े के जल का छिड़काव सारे कमरे में कर दें। इस साधना में हल्के हरे रंग का विशेष महत्व है। साधक के लिये वस्त्रों का कोई बंधन नहीं, वह अपनी रुचि के अनुकूल पैंट-शर्ट, पायजामा-कुर्ता कुछ भी पहन सकता है और स्त्रियां जैसे चाहें अपना श्रृंगार कर इस साधना में बैठ सकती हैं, किंतु आसन और सामने लकड़ी के बाजोट पर बिछाया जाने वाला वस्त्र हल्का हरा होना आवश्यक है। यदि यह रेशमी हो और उसके चारों कोनों पर सुनहरी गोट लगी हो तो और अधिक अच्छा माना गया है। चंदन अथवा केवड़े की सुगन्ध वाली अगरबत्ती जलाकर वातावरण को शुद्ध करें और रंजिनी अप्सरा के आवाहन व प्रत्यक्षीकरण का विशिष्ट उपाय **'शुभांगी रंजिनी यंत्र'** स्थापित कर **'रति माला'** से निम्न मंत्र का ११ माला मंत्र जप करें। यंत्र पर किसी सुगन्धित पुष्प की पंखुड़ियों की वर्षा करें और हिने का इत्र लगायें। दीपक की इस साधना में कोई आवश्यकता नहीं है। जब मंत्र जप के उपरान्त अप्सरा प्रकट हो तो उसके साक्षात उपस्थित होने पर उसे कोई आभूषण भेंट करें अन्यथा सामने स्थापित यंत्र पर पहले से लाकर रखी कोई सुगन्धित पुष्प माला चढ़ायें। ***अप्सरा साधना व्यक्ति को सिद्ध तो प्रथम बार में ही हो जाती है लेकिन वातावरण में व्याप्त किन्हीं दूषित प्रभावों के कारण इसका प्रत्यक्षी - करण नहीं हो पाता है जिसके लिये हताश अथवा निराश होने की कोई आवश्यकता नहीं।*** यह साधना पांच दिनों की है जो सप्ताह के किसी भी दिन प्रारम्भ की जा सकती है और श्रेष्ठ साधकों का एक मत से कहना है कि वास्तव में ही यह अप्सरा प्रथम बार में आकर सिद्ध हो ही जाती है।

मंत्र :-

ॐ ऐं रंजिनी मम प्रियाय वश्य आज्ञा पालय फट्

सुखी पत्नी बनने के पांच फार्मूले

पिछले दिनों दस हजार से भी ज्यादा सुखी वैवाहिक जीवन जीने वाले जोड़ों में से उनकी पत्नियों से साक्षातकार में उन बिन्दुओं पर विचार किया गया जो सुखी पत्नियां बनने या सुखी वैवाहिक जीवन जीने के लिए आवश्यक है, २४ प्रश्नों के घेरों में पांच बिन्दु सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं--

१. पति पर पूरा - पूरा विश्वास कीजिए, भूल कर भी अलग रहने या मतभेद रखने की कल्पना मत कीजिए।
२. या तो आप अपने पास अपना ' अहं' और 'घमण्ड' रख सकती हैं या पति का प्यार, दोनों में से एक।
३. किसी बात के बिगड़ जाने पर या संकट पड़ने पर भी पति पर दोषारोपण मत कीजिए।
४. प्रत्येक पति सुन्दर और आकर्षक पत्नी देखना चाहता है, अतः स्वस्थ, सुंदर, संयमित और सुसज्जित बनी रहिए।
५. उदासी, चिड़चिड़ापन, ताने देना, गलतियां निकालना, वैवाहिक जीवन के शत्रु हैं, इसकी अपेक्षा हर क्षण मुस्कराहट के साथ पति से मिलिए। यह उपाय लम्बे समय तक सुखी बनाये रखने का श्रेष्ठत उपाय है।

हलचल

आगामी दिनों में निम्न शिविर सम्पन्न होने जा रहे हैं -

१. २७ सितम्बर ९३ कोलाबा(बम्बई)

गणपति लक्ष्मी प्रत्यक्ष सिद्धि शिविर

कोलाबा, झूले लाल मंदिर
अपोजिट - मेकर टावर - कफ परेड, कोलाबा - बम्बई - ५

२. ३१ अक्टूबर ९३ कल्याण (बम्बई)

सम्पर्क

श्री गणेश वटाणी	- ०२२ -	८०५-७११०
श्री लल्लू भाई पटेल	- ०२२ -	८०५-८१६६
श्री हरीश चन्द्र झा, पुजारी	- ०२२ -	५६७-२६८५ (पी.पी.)
श्री अनिल भाई बघेरा	- ०२२ -	८०६-३६६६ (पी.पी.)
डॉ. किशोर डभोया	- ०२२ -	४१२-८७६३

शेयर व राजनीतिक भविष्य

सितम्बर माह भारत के लिए निर्णायक माह सिद्ध होने जा रहा है। पूर्व की समस्त उहापोह की स्थितियां समाप्त होंगी और राष्ट्रीय स्तर पर सुदृढ़ राजनीतिक स्थिति से देश की अवरूद्ध पड़ी विकास की गति को नवजीवन मिलेगा।

राजनीतिक भविष्य

केन्द्रीय स्तर के विपरीत क्षेत्रीय एवं प्रादेशिक स्तरों पर राजनीतिक उथल-पुथल की प्रबलता रहेगी। क्षेत्रीय स्वायत्तता संबंधी आन्दोलन पुनः जोर पकड़ेंगे तथा झारखंड मुक्ति मोर्चे की गतिविधियां तीव्र होंगी। गुजरात, गोवा की वर्तमान राजनीतिक स्थिति में निश्चय ही परिवर्तन होगा। महाराष्ट्र में आतंकवाद के कारण जनजीवन अस्तव्यस्त और भयाक्रांत रहेगा। महाराष्ट्र की राजनीतिक स्थिति पर इसके प्रबल प्रभाव पड़ेंगे किंतु परिवर्तन के आसार नहीं हैं। काश्मीर में आतंकवाद ऊपरी तौर पर शांत हो गया लगेगा किंतु वहां के भयग्रस्त नागरिकों का पलायन जारी रहेगा। तामिलनाडु में वहां के राजनीतिक सूत्रों से एल. टी. टी.ई. के सम्बन्ध उजागर होने से अखबार की सुर्खियों का विषय बनेगा। केरल में सत्तारूढ़ दल को कड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। आसाम में आतंकवादी चोरी छिपे ढंग से अपने को पुनर्गठित करने के प्रयास करते रहेंगे।

श्री पी.वी.नरसिंहाराव के ऊपर लगे आरोप पूर्ण रूप से सिद्ध नहीं हो पायेंगे एवं सामान्य ज़न के मध्य भी उनकी छवि धूमिल नहीं होगी किंतु उनके राजनीतिक जीवन का अवसान हो जायेगा। श्री अर्जुन सिंह प्रकट रूप से उनके उत्तराधिकारी के रूप में उभरेंगे किंतु अप्रत्याशित रूप से कोई अन्य राजनयिक उभर कर नेतृत्व ग्रहण करेगा। वर्षा की स्थिति सम्पूर्ण देश में अच्छी रहेगी जिसमें से महाराष्ट्र प्रांत की स्थिति श्रेष्ठतम रहेगी।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर यह माह संकट और तनाव का है। यूरोपीय देशों का साझा समूह एकजुट होकर अपनी व्यापारिक नीतियों में और भी अधिक कड़ाई कर देगा। युगोस्लाविया में चल रही गृहयुद्ध की स्थिति में भीषण नरसंहार की पुनरावृत्ति होगी जो पूरे विश्व को झकझोर देगी। ईरान में जनक्रांति एवं आंतरिक युद्ध की दशा से स्थिति शोचनीय रहेगी। रूस व चीन के मध्य आणविक संधि होने के आसार हैं, जिसका अमेरिका प्रबलता से विरोध करेगा। पाकिस्तान के कुचक्र समस्त विश्व के समक्ष आयेंगे और अमेरिका अपनी अन्तर्राष्ट्रीय छवि के कारण पाकिस्तान के प्रति अपना समर्थन वापस लेने को बाध्य होगा। भारत के किसी प्रमुख आतंकवादी के प्रत्यावर्तन को लेकर भारत को महत्वपूर्ण सफलता मिलेगी। इजराइल का भारत के प्रति रुझान बढ़ेगा। श्रीलंका की स्थिति और बिगड़ेगी तथा भारत से संबंधों में दरार आयेगी। अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में भारत अपनी नवीनतम स्थिति से विश्व को आश्चर्य चकित कर देगा। इसी माह रूस भी अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में अपनी उल्लेखनीय प्रगति से नये आयाम प्रस्तुत करेगा।

शेयर मार्केट

देश में अस्थिर राजनीतिक दशाओं का प्रभाव शेयर मार्केट पर भी पड़ेगा और कई एक नई परियोजनायें आरम्भ होने से पूर्व ही स्थगित हो जायेंगी। विदेशी सहयोग से प्रारम्भ होने वाले कुछ उद्योगों पर भी इस का प्रभाव पड़ेगा। मंदड़ियों की चांदी रहेगी व सामान्य शेयर होल्डर चिंतातुर रहेंगे। इस माह के अंत तक स्थिति में कुछ सुधार आने की संभावना है।

इस माह जो शेयर अच्छी स्थिति में रहेंगे उनमें ग्लैक्सो,जय प्रकाश इन्डस्ट्रीज, रिलायंस , वीडियोकॉन का नाम निर्विवाद रूप से लिया जा सकता है, गुजरात फर्टिलाइजर एवं गुजरात नर्मदा का व्यापार भी श्रेष्ठ स्थिति में रहेगा जबकि हिन्दुस्तान लीवर और ग्रेसिम केवल सामान्य सा व्यापार करके रह जायेंगे, ए. सी.सी. व डी.सी.एम. यदि मुनाफा नहीं देंगे तो हानिप्रद भी नहीं रहेंगे, इस माह अप्रत्याशित रूप से टेल्को व टिस्को के शेयर के भाव नीचे गिरेंगे, यू.टी. आई. मास्टर शेयर की स्थिति भी मद्धिम ही रहेगी जबकि आई.टी.सी.,बुक ब्रांड, बाम्बेडाइंड व बिरला जूट कोई उल्लेखनीय स्थान नहीं प्राप्त कर पायेंगे, ग्रेट ईस्टर्न शिपिंग, लार्सन एंड टुब्रो, जे.पी. होटल, कोच्चि रिफाइनरी, श्री राम एग्रो एवं त्रिवेणी ऑयल इस माह के सामान्य शेयर कहे जा सकते हैं।

इस माह मटर,मूंग,उड़द व तिलहन के दामों में भारी उछाल आयेगा, गेहूं, बासमती चावल, जौ, बाजरा, जई, चना मंदे रहेंगे। मसूर, मूंगफली, अरहर के दामों में कोई उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं होगा।

मेवा बाजार में बादाम गुरबंधी एवं बादाम कागजी के भावों में परिवर्तन होगा जबकि बादाम कैलिफोर्निया स्थिर रहेगा, काजू एवं काजू टुकड़ा के दामों में कुछ गिरावट आयेगी, अखरोट गिरी, किशमिश कंघारी एवं छुहारा के भाव कुल मिलाकर स्थिर कहे जा सकते हैं, किराना बाजार में इलायची (बड़ी व छोटी), काली मिर्च, लौंग के भावों में चढ़ाव आयेगा, केसर व पोस्तदाना के भाव सामान्य रहेंगे, जायफल के भाव में मामूली सी गिरावट आयेगी, धनिया, जीरा, अजवायन, सौंफ के व्यापार में घाटा आने की संभावना है, सुपारी, लाल मिर्च, हल्दी, इमली, जावित्री के व्यापार में स्थिति श्रेष्ठ नहीं रहेगी, पोस्तदाना व चाय का व्यापार लाभप्रद रहेगा। ■

सौभाग्यदायक गणेश साधना

साधना कोई भी हो वह सदैव जीवन को नया मोड़ देने के लिये सक्षम होती है। अपने व्यक्तित्व को संवारने और सजाने के लिये तथा हर क्षेत्र में अद्वितीय बनने के लिये साधनाओं का सहारा लेना ही पड़ता है। कभी-कभी जीवन में कुछ ऐसे दुर्भाग्यशाली पक्ष भी आते हैं, जिससे सारा जीवन असंतुलित तथा नीरस एवं किरकिरा हो जाता है। उपरोक्त साधना सभी समस्याओं को शीघ्र समाप्त करने के लिये नवीनतम, समयानुकूल, अचूक एवं शीघ्र फलदायी है।

भगवान गणपति की साधना श्रेष्ठतम साधनाओं में मानी जाती है। महर्षि विश्वामित्र, भगवत्पाद शंकराचार्य तथा गुरु गोरखनाथ ने इस साधना को जीवन के लिए पूर्ण सौभाग्यदायक प्रयोग माना है। मात्र इस साधना से जीवन में वह सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है, जिसे हम अपना प्राप्तव्य मानते हैं। जो भी मन में **अभीसिप्त** हो वह इस प्रयोग के द्वारा आसानी से पाया जा सकता है। वास्तव में यह प्रयोग अति महत्वपूर्ण तथा दिव्य है। **जब आपसे लक्ष्मी रूठने लगी हो, आप का व्यापार या कारोबार बन्द होने लगे, रोगों से त्रस्त होकर जीवन से आप निराश होने लगे हों, या कर्ज के बोझ से दबते चले जा रहे हों या जीवन के किसी भी क्षेत्र में असफल होने लगे हों तो आपके लिए यह प्रयोग रामबाण है।** भगवान गणेश ऐसे भी विघ्नहरण करने वाले मंगलदायक देवता के रूप में प्रसिद्ध हैं, उनके उपासक कभी भी निराश या असफल नहीं होते हैं।

इस साधना के लिये प्राण प्रतिष्ठित **'महागणपति यंत्र'**, कुंकुम, जल पात्र, मौलि यज्ञोपवीत, पान, सुपारी, लौंग, इलायची, अबीर, गुलाल, अक्षत, पुष्प, धूप,दीप, नैवेद्य, श्री फल, मूंगे की माला एवं **गणेश गुटिका** आवश्यक है।

पूजन विधि :-

ध्यान :- ॐ गणानां त्वा गणपति (गूं) हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति(गूं) हवामहे
निधीनां त्वा निधिपति (गूं) हवामहे वसो मम आहमजानि गर्भधमा त्वम जासि गर्भधम् ।
ॐ गं गणपतये नमः ध्यानं समर्पयामि।

आवाहन :- नागस्य नागहार त्वं गणनाथ चतुर्भुज। भूषितः स्वायुधैर्दिव्यैः पाशांकुश परश्वधैः ।।
आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः। इहागत्य गृहाण त्वं पूजां यागं च रक्ष मे।।

ॐ गणपतये नमः आवाहनं समर्पयामि। (आवाहन के लिये पुष्प अर्पण करें)

आसन :- अनेक रत्न खचितं मुक्तामणि विभूषितम्। दिव्यसिंहासनं चारू गणेश प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ गणपतये नमः आसनं समर्पयामि। (आसन के लिए पुष्प समर्पित करें)

पाद्यम् :- गौरी पुत्र नमस्तेऽस्तु दूर्वापद्मादि संयुतम्। भक्त्या पाद्यं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

अर्घ्यम् :- अर्घ्यं गृहाण देवेश गन्धपुष्पाक्षतैः सह। करुणाकर मे देव गृहाण अर्घ्यं नमोऽस्तु।।
ॐ गं गणपतये नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम् :- सर्वतीर्थ समानीतं सुगन्धिं निर्मलं जलं। आचम्यतां मया दत्तां गृहाण शिवनन्दन।।
ॐ गणपतये नमः आचमनीयम् समर्पयामि।

स्नानम् :- गंगासरस्वती रेवा पयोष्णि नर्मदाजलैः। स्नापितोऽसिमया देव। तथा शान्तिं कुरुष्व मे।।
ॐ गणपतये स्नानं सर्मपयामि।

पंचामृत स्नानम् :- पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करा युतम्। पंचामृतं मया दत्तं स्नानार्थं प्रतिगृहूताम्।।
ॐ गणपतये पंचामृत स्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदक स्नानम् :-मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्। तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम।
ॐ गणपतये शुद्धोदक स्नानं सर्मपयामि।

वस्त्रम् :- सर्वभूपादिके सौम्ये लोकलज्जा निवारणे। मयोपपादिते तुभ्यं गृह्यतां पदमेश्वर।
ॐ गणपतये वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्:- राजतं ब्रह्मसूत्रं च कांचनं चोत्तरीयकम्। गृहाण देव सर्वज्ञ गीर्वाणसुर पूजितं।
ॐ गणपतये यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

चन्दनम् :- श्रीखण्ड चन्दनं दिव्यं गन्धाढयं सुमनोहरं। विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ गणपतये चन्दनं समर्पयामि।।

अक्षत :- अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः। मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर।।
ॐ गणपतये अक्षतान् संमर्पयामि।

पुष्पाणि :- माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्या दीनि वै प्रभो। मयोपनीतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ गं गणपतये पुष्पाणि समर्पयामि।

बिल्वपत्राणि : त्रिशाखैः बिल्वपत्रैः त्वां पूजयामि गजानन। अच्छिद्रैः कोमलैर्नित्यं गृहाण गणनायक।
ॐ गं गणपतये बिल्वपत्राणि समर्पयामि।

दूर्वा :- दूर्वांकुरान् ससुहरितान् अमृतान् मंगलप्रदान्। आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वर।।
ॐ गं गणपतये दूर्वांकुरान् समर्पयामि।

सौभाग्य द्रव्याणि :- अबीरं च गुलालं च हरिद्रादि समन्वितं। नाना परिमलं द्रव्यं गृहाण गजनायक।।
ॐ गणपतये सौभाग्य द्रव्याणि समर्पयामि।

धूप :- वनस्पति रसोदभूतः गन्धाढयः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम।
ॐ गं गणपतये धूपम् आघ्रपयामि।

दीपः :- साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया। दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापहा।।
ॐ गं गणपतये द्रीपं दर्शयामि।

नैवेद्य :- गणेश गायत्री बोलें -- ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ति प्रचोदयात्।
शर्कराघृत संयुक्तं मधुरं स्वादुच्योत्तमं। उपहार समायुक्तुं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।
ॐ गं गणपतये नमः नैवेद्यं निवेदयामि।

फल :- इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिः भवेज्जन्मनि जन्मनि।
ॐ गणपतये नमः फलानि समर्पयामि।

फिर ग्रास मुद्रा दिखाकर आचमन करावें --

ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा,
ॐ समानाय स्वाहा, ॐ गं गणपतये नमः आचमनीयं समर्पयामि।

ताम्बूल :- पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्ली दलैर्युक्तम्। एलाचूर्णादि संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृहताम्।।
ॐ गणपतये नमः मुख शुद्धयर्थं ताम्बूलं समर्पयामि।

दक्षिणा :- हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसो। अनन्तपुण्यफलदम् अतः शांतिप्रपच्छ मे।

नीराजन (आरती) ॐ दं (गुं) हविः प्रजननं ये अस्तु दशवीर (गुं) सर्वगण (गुं)स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोक सन्यभिसनिः अग्नि : प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयोरेतो अस्मासु धत्तः न तत्र सूर्यो भाति न तारकं नैवा विद्यते, कुतो यमग्निः सगेन भान्तम् अनुभाति सर्वं तस्या भासा सर्व -मिदं विभाति।
नीराजनं नीरजक कपूरेण कृतं मया। गृहाण करुणाराशे गणेश्वर नमोऽ स्तुते।।
ॐ गं गणपतये नमः नीराजनं समर्पयामि।

जल आरती :- ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष (गुं) शान्तिः, पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्ति र्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व (गुं) शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि।

प्रदक्षिणा :- यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च। तानि तानि प्रणस्यचन्तु प्रदक्षिणाय पदे पदे।।
ॐ गणपतये नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि।

पुष्पान्जलि :- नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद् भवानि च पुष्पांजलि मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।
ॐ गं गणपतये नमः पुष्पाणि समर्पयामि।

इसके बाद साधक **मूंगे की माला** से निम्न मंत्र का ५१ माला मंत्र जप करें। प्रयोग समाप्ति के बाद यंत्र और नारियल को अपने पूजा स्थान में रख दें तथा **गणेश गुटिका** को अपने पैसे वाले स्थान में रख दें किसी विशेष कार्य में जाते समय अपने साथ रखने से आपका कार्य पूर्ण होगा।

मंत्र :-

"ॐ गं गणपतये नमः"

इसी यंत्र पर कुछ और विशेष प्रयोग दिये जा रहे है जो अपने लाभ के लिये आप उपयोग में ला सकते हैं ---

१. लक्ष्मी प्राप्ति प्रयोग -

दरिद्रता जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप है। धन के बिना जीवन का कोई भी मूल्य नहीं रह जाता है। धन की उपासना प्रत्येक युग में रही है किंतु वर्तमान समय में लोगों की आवश्यकता के अनुसार और अधिक धन प्राप्ति के लिये सभी लोग प्रयासरत हैं, जब धनवान बनने के लिये सभी प्रयास निरर्थक हो जायं तो निम्न प्रयोग का सहारा लीजिये। बुधवार के दिन प्रातः "महागणपति यंत्र" को उपरोक्त विधि से अपने सामने स्थापित करने के बाद उस यंत्र के ऊपर चार कुंकुम से बिन्दी लगायें फिर यंत्र के चारों ओर एक-एक घी का दीपक जलावें उसके बाद यंत्र के मध्य में एक **लक्ष्मी फल** स्थापित कर दें, तथा निम्न मंत्र का ११ माला प्रति दिन मूंगे की माला से जप करें यह प्रयोग मात्र तीन दिन का है। आकस्मिक धन लाभ की संभावना इस प्रयोग के बाद स्वतः बन जाती है।

" ॐ गं लक्ष्म्यै आगच्छ आगच्छ फट् "

२. व्यापार वृद्धि :-

गणेश चतुर्थी या बुधवार के दिन उपरोक्त **गणपति यंत्र** को किसी पात्र में स्थापित कर दें तथा उसके चारों ओर नौ घी के दीपक जला कर २१ माला तीन दिन तक जप करें, बाद में उस यंत्र को अपने दुकान में स्थापित कर दें या पैसे वाले गल्ले में रख दें। जप समाप्ति के बाद आश्चर्य जनक व्यापार वृद्धि होने लगती है। जब आपका कारोबार बिलकुल बंद हो जाय तथा अनेक प्रयास करने के बाद भी आप सफल न हो या किसी तांत्रिक प्रयोग की वजह से व्यापार बंद हो गया हो, तब यह साधना आपके लिये जीवनदायिनी सिद्ध होगी।

"ॐ गणेश महालक्ष्म्यै नमः"

३. रोग मुक्ति के लिये –

जब आप भयावह और असाध्य रोगों से परेशान हो गये हों, जीवन आपका रोगों के कारण नीरस और वेजान हो गया हो, इलाज कराकर थक गये हों या डॉक्टर आपको जवाब दे गये हों और मृत्यु की विभिषिका सामने खड़ी हो, तब यह साधना आपके लिये उपयोगी सिद्ध होगी।

प्रातः बुधवार के दिन से लेकर पांच दिन तक इस **महागणपति यंत्र** को अपने सामने स्थापित करके दूध और जल से स्नान कराकर अक्षत पुष्प से पूजन करें। पूजन के बाद निम्न मंत्र की पांच मालायें जप करें--

"ॐ गं रोग मुक्तये फट्"

जप समाप्ति के बाद उस जल को रोगी पर थोड़ा छिड़क दें। यदि रोगी स्वयं यह प्रयोग न कर सके तो अपने किसी जानकार व्यक्ति से यह प्रयोग सम्पन्न करा सकता है। ऐसा करने से धीरे-धीरे उसे रोग से मुक्ति मिल जायेगी।

४. शत्रुनाश के लिये :-

शत्रुओं के रहते व्यक्ति हमेंशा चिन्तित बना रहता है। इसी चिंता में खोया हुआ कि शत्रुओं से कैसे मुकाबला किया जाय। वह अपना सर्वस्व गवां देता है। शत्रुओं के रहते सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करना असंभव सा रहता है। कई बार शत्रु यदि प्रबल हो जाय तो उनसे मुकाबला करना या बदला लेना कठिन हो जाता है, उस स्थिति में साधनाओं का सहारा लिया जाता है।

बुध या शुक्रवार के दिन रात्रि को दस बजे के बाद इस **गणपति महायंत्र** को अपने सामने किसी पात्र में स्थापित करके, तेल का चहुमुखी दीपक जला लें इसके बाद कागज पर शत्रु का नाम लिखकर यंत्र के सामने रख दें। निम्न मंत्र का **'काली हकीक माला'** से पांच माला तीन दिन तक जप करें।

"ॐ गं ग्लौं गं शत्रुविनाशाय नमः"

प्रतिदिन जप समाप्ति के बाद एक मुट्ठी काली मिर्च के दाने इसी मंत्र को पढ़कर शत्रु के नाम के ऊपर चढ़ा दें। अन्तिम दिन उन सभी सामग्रियों को कपड़े में बांध कर किसी दूर जंगल या सुनसान स्थान में रख देना चाहिये। इस प्रयोग से आपके शत्रु आपके वश में हो जायेंगे या आपको कोई भी नुकसान पहुंचाना बंद कर देंगे।

५. उत्तम संतान प्राप्ति के लिये :-

संतान गृहस्थ जीवन की शोभा है, यदि संतान न हो तो पूरा घर हमेशा अजीब सन्नाटे से भरा रहता है, तथा घर में रहने वाले सभी प्राणी खोये-खोये से तनाव पूर्ण जीवन जीते हैं, कई बार घर में संतान होते हुए भी यदि वह उदण्ड या शरारती हो जाय तो लोगों का जीवन नर्क बन जाता है। घर का समस्त सुख और सम्पत्ति व्यर्थ हो जाती है। इस साधना से उत्तम संतान की प्राप्ति सुनिश्चित हो जाती है।

बुधवार के दिन प्रातः इस **महा गणपति यंत्र** का पंचोपचार से पूजा करके निम्न मंत्र को पढ़ते हुये १०८ दूब (दूर्वा) यंत्र पर चड़ावें, तथा बाद में मूंगे की माला से निम्न मंत्र का मांच माला मंत्र जाप करें, ऐसा सात दिन तक करें।

"गं गणपतये पुत्र वरदाय नमः"

जप समाप्ति के बाद उस दूब के चार टुकड़े साधक को मुंह में रख कर चबा लेने चाहिये। इस साधना से अनेक व्यक्ति लाभान्वित हुए हैं। आप भी उत्तम संतान की प्राप्ति के लिये इस साधना को अपना सकते हैं।

■

सिद्धि प्रद रुद्राक्ष पर सफल प्रयोग

पिछले ही दिनों में सम्पन्न हुआ एक अद्‌भुत अलौकिक प्रयोग

रुद्राक्ष -भगवान शिव का प्रिय आभूषण, दीर्घायु प्रदान करने वाला तथा अकाल मृत्यु को दूर धकेलने वाला है। जहां यह गृहस्थों को अर्थ और काम प्रदान करता है, वहीं साधकों को धर्म और मोक्ष। केवल धार्मिक दृष्टि से ही नहीं वरन आयुर्वेदिक, भौतिक, साधनात्मक कई दृष्टियों से प्रकृति की यह अद्‌भुत भेंट है।

यही सहस्र गुण अधिक फलदायक बन जाता है यदि इस पर श्रावण माह में रुद्रयामल तंत्र के अनुसार पूजन व कुछ गोपनीय अघोर मंत्रों के जप प्रति मनके पर सवा लाख किये जायं तथा अघोर पद्धति से ही चैतन्यी करण व प्राण प्रतिष्ठा प्रदान की जाय, फिर तो वह भगवान शिव के अश्रु ही न रह कर उनके त्रिशूल ही बन जाते हैं --

जीवन के त्रिविध तापों को समाप्त करने में सक्षम और तीक्ष्ण फलदायक ---

ऐसे रुद्राक्ष को तो अलग-अलग धारण करने की विधि मात्र से ही सुलझने लगती हैं, जीवन की विविध समस्यायें --

- यदि सोमवार को प्रातः भगवान शिव के मंदिर में जाकर एक ऐसा **सिद्धि प्रद रुद्राक्ष** कोई अविवाहित कन्या पांच बिल्व पत्रों के साथ चढ़ा दे तो समाप्त हो जाती है विवाह में आने वाली अड़चनें।
- वहीं रविवार की रात्रि में इस रुद्राक्ष पर काला रेशमी धागा लपेट कर बिना किसी को बताये चुपचाप तिराहे पर रख आने से नष्ट हो जाती हैं-- घर में व्याप्त समस्त भूत -प्रेत एवं इतर योनियों की उपद्रवकारी गतिविधियां।
- यदि घर में किसी को मिरगी, रहस्यमय ढंग से सिर चकराना, अचानक रह - रह कर बेहोश हो जाना अथवा हाथ -पांव ऐंठ जाने जैसी बाधाकारक व्याधियां अथवा भूत-प्रेत की अड़चनें हों तो इस रुद्राक्ष को काले धागे में बांध गले में धारण करना पूर्ण सफलता दायक देखा गया है।
- यदि पितृ पक्ष के दिनों में एक ऐसा रुद्राक्ष स्थापित कर उसके समक्ष नित्य एक माला जप 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र का करें और ऐसा १५ दिन तक नियम पूर्वक करने के बाद अमावस्या के दिन इसे गले में धारण कर लें, तो चली आ रही पितृ दोष की समस्या समाप्त हो जाती है।
- प्रख्यात तांत्रिक त्रिजटा अघोरी जी का मत है कि तंत्र निवारण प्रयोग हेतु इस रुद्राक्ष का धारण करना अचूक उपाय है, साथ ही इसको धारण करने वाले व्यक्ति पर किसी भी तांत्रिक प्रयोग अथवा भूत - प्रेत का प्रकोप नहीं हो सकता।
- जो वशीकरण में आश्चर्यजनक रूप से निश्चित सफलता पाना चाहते हैं वे किसी भी प्रकार की वशीकरण साधना में यदि इस रुद्राक्ष को भी साथ रखें और साधना समाप्ति के बाद ऐसा सिद्धिप्रद रुद्राक्ष गले में धारणकर मनोवांछित व्यक्ति के सामने जायं तो वह निश्चित रूप से वशीभूत होता ही है, अथवा होती ही है।
- जो तीक्ष्ण साधनाओं जैसे भूत-प्रेत साधना, भैरव साधना, वीर-वेताल साधना अथवा श्मशान प्रयोगों में रुचि रखते हैं, उनके लिये तो यह विशिष्ट रुद्राक्ष धारण करना परम आवश्यक है।
- केवल साधनाओं में ही नहीं दैनिक जीवन में आने वाली विविध बाधाओं को सुलझाने में सहायक है यह सिद्धि प्रद रुद्राक्ष।

यदि रात भर इस रुद्राक्ष को एक कटोरी जल में डुबो कर रख दें और सुबह उस कटोरी का जल अपने नहाने के पानी में मिला कर नित्य स्नान करें तो अनेक चर्म रोगों की समाप्ति के साथ शरीर में विचित्र सी चमक और गुलाबी आभा झिलमिला उठती है। कुछ तांत्रिकों का मत है कि यदि प्रातः ऐसे जल का नित्य पान किया जाय तो व्यक्ति के कई एक असाध्य रोग भी ठीक होते देखे गये हैं!

पूज्यपाद गुरुदेव के निर्देशन में कुछ विशिष्ट साधकों द्वारा इसी वर्ष श्रावण माह में केवल १०० रुद्राक्ष तैयार किये जा सके हैं। जिनको हम केवल प्रथम आने वाले १०० व्यक्तियों को ही प्रदान कर पाने में समर्थ होंगे।
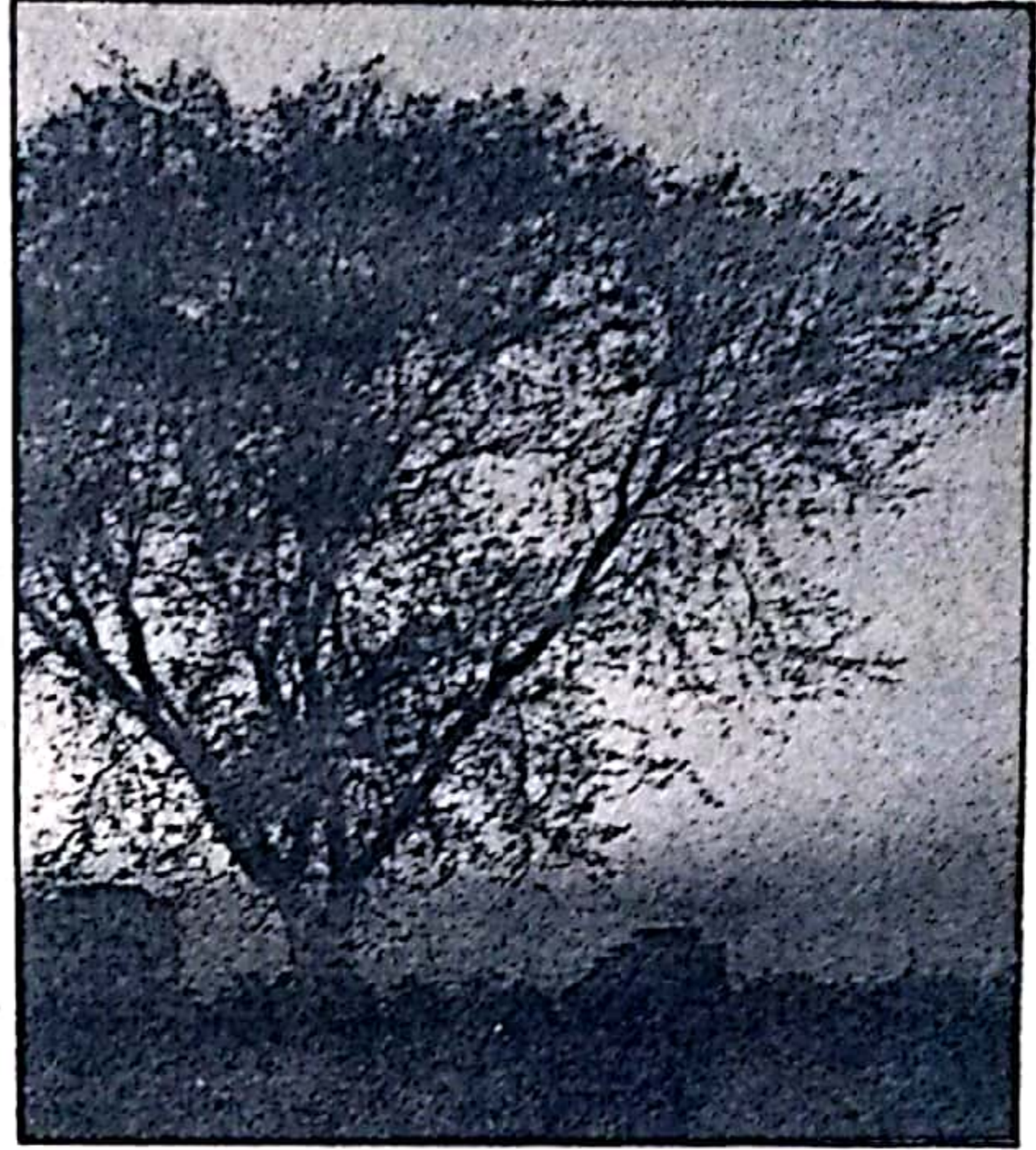
श्मशान तो मेरे लिए नन्दन कानन है . . .

श्मशान शब्द का उल्लेख होते ही मेरे सामने तैर जाता है, शान्त नदी का वह किनारा जहां बैठकर मैंने अपने जीवन के कुछ माह गुजारे। श्मशान शब्द से मेरे अन्दर आम आदमी के विपरीत आनन्द और सुखद अनुभूतियों का वातावरण बन जाता है। वे दिन मेरे जीवन की मधुर यादों से भरे थे, निःसंग, एकाकी, जीवन के आनंद से भरे हुये दिन, जबकि मेरे सामने न कोई चिंता थी और जो कुछ मोह- ममता, व्यर्थ के तनाव, मोह, बंधन और लगाव थे, वे भी नित्य धू-धू कर जलती चिताओं के साथ जल चुके थे।

जीवन की किन्हीं विसंगतियों से ऊब कर मैं निकल पड़ा था, सर्वथा अकेला और प्रायः किसी लक्ष्य के विना। इसी जीवन - क्रम में मेरा आश्रय स्थल वने कई एक श्मशान। मेरा वैराग्य "मसानिया वैराग्य" नहीं था। फक्कड़ी से भरा अपना अलग ही चिंतन लिये हुए जीवन था, चलो जो होगा देखा जायेगा, बहुत दिन तक जीवन में सोच विचार कर, योजनायें बनाकर, फूंक -फूंक कर कदम रख कर देख लिया, किन्तु कुछ प्राप्त न हो सका, अब इस तरह भी जी कर देखें।

मैं कई एक श्मशान स्थलों में गया, जिसमें वाराणसी का श्मशान स्थल भी था। वाराणसी का श्मशान स्थल यद्यपि प्रसिद्ध स्थल है किन्तु वह वाम - मार्गी साधकों की प्रिय स्थली होने के कारण सदैव वीभत्सता से भरी रहती है, जबकि मैं प्राप्त करने का इच्छुक था शान्ति और निःस्तब्धता, जो कि वहां के कोलाहल में मिल नहीं पा रही थी। साथ ही वाराणसी के श्मशान में चैतन्यता की वह पूर्व दशायें भी नहीं रह गयीं हैं। मुझे ज्ञात था कि वाराणसी से थोड़ी दूर स्थित नगर जौनपुर से जो सड़क इलाहाबाद जाती है, उस पर लगभग दस किलोमीटर दूर जाने पर सिकरारा बाजार नामक एक स्थान पड़ता है, इसी सिकरारा बाजार से लगभग तीन-चार किलोमीटर दूर जाने पर पश्चिम दिशा में सई नदी के किनारे *पूज्यपाद गुरुदेव के कर कमलों द्वारा स्थापित अद्भुत तेजस्वी और परम शांति - दायक शिवलिंग "सेवकेश्वर महादेव" है, जिसके विषय में पूज्यपाद गुरुदेव के वरिष्ठ शिष्य भलीभांति परिचित हैं।* मुझे एक

वरिष्ठ गुरुभाई से एक गोपनीय तथ्य यह ज्ञात हुआ था कि वह स्थली पूज्यपाद गुरुदेव द्वारा शिवलिंग स्थापन से तो धन्य हो ही उठी है, साथ ही उस स्थान से थोड़ी दूर पर ही श्मशान साधना हेतु भी एक गोपनीय स्थल है। मैं वाराणसी से जौनपुर पहुंचा और जौनपुर में ढूंढ कर वह स्थान निकाल लिया। एक छोटे किन्तु सुन्दर मन्दिर में स्थापित है यह तेजस्वी शिवलिंग। पास में है एक छोटी सी ग्रामीण बस्ती और आस-पास घना आंम का बगीचा। आम के बगीचे को और घना बना देते हैं बरगद,पीपल, महुवे के पेड़ और बांसों का रहस्यमय झुरमुट। महुवे की भीनी-भीनी आती मादक गंध और मंदिर का निःस्तब्ध वातावरण वहां पहुंचते ही व्यक्ति को ध्यान मग्न कर देता है। मदिर, महानगरों के छल-कपट, धुंआ, शोर और भीड़ से हट कर पतली सी सई नदी के किनारे स्थित है। स्थानीय ग्रामीण जन श्रद्धा वश इसके एकान्त और पवित्रता में कोई बाधा नहीं पहुंचाते। बस कुछ एक बंदर कभी-कभी इधर से उधर कूदते हुए निकल जाते हैं और उनके कूदने से उस स्थान की रमणीयता बढ़ ही जाती है। मंदिर से थोड़ा उतर कर नीचे नदी में हाथ - पांव पखार कर, मैं वहां की रमणीयता में खो गया और फिर वहां से उठकर ***पूज्यपाद गुरुदेव के कर कमलों से संस्पर्शित अद्‌भुत शिवलिंग के दर्शन किये, जिसके विषय में वहां के नागरिकों ने बताया कि इसका आकार - प्रकार और तेजस्विता दिन - प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। जो अनुभूति मुझे विश्वनाथ मंदिर और सुदूर केदार नाथ जाकर भी नहीं हुई, वह इस मंदिर में बैठते ही हो गई, लगा सामने भगवान शिव बैठकर मंद-मंद मुस्करा रहे हैं और उनके चेहरे पर वह भाव खेल रहा है, जिसे सही अर्थों में शिवत्व कहा जा सकता है -- परम तृप्त, आत्म लीन, संसार के सभी द्वंद्वों और तनावों से सर्वथा परे! मैंने आंखें खोली तो पूज्य गुरुदेव का शिवरूप में बिम्ब तैर गया और पहली बार मुझे आभास हुआ कि पूज्य गुरुदेव और भगवान शिव तो एक ही हैं।***

पूज्य गुरुदेव की जहां पर उपस्थिति हो, उनका आभास हो,उनका बिम्बवत दर्शन हो, वही स्थान सही अर्थों में तीर्थ है, वहां पर स्थापित शिवलिंग ही सही अर्थों में ज्योतिर्लिंग है। मैंने वरिष्ठ गुरुभ्राता के बताये अनुसार शीघ्र ही भौगोलिक स्थिति के संकेतों को समझ कर वह स्थान ढूंढ निकाला, जिसे उन्होंने गोपनीय श्मशान स्थली बताया था। श्मशान स्थली मात्र वही स्थान नहीं होता, जहां चिताएं जल रही हों या मृतक संस्कार हो रहा हो, श्मशान तो वह स्थली है जहां पर इस जीवन के समस्त राग - द्वेष, छल-कपट, विषय-वासनाएं और मोह मर गये हों। साधक की सही अर्थों में श्मशान स्थली ऐसी ही होती है और यहां पर रहकर वह जिस भूत को साधता है, वह उसका अपना स्वयं का "भूत" होता है। अपने ही भूत के जो डरावने और मलिन साये साथ चल रहे हों, उन्हें साध लेना ही वास्तविक 'भूत साधना' है। इसी से श्मशान को साधक के लिए नंदन कानन कहा गया है, क्योंकि ***श्मशान स्थली की ही यह विशेषता होती है कि व्यक्ति वहां रह कर सहज ही समाज में व्याप्त छल-कपट, विषय-वासना से दूर रहता है*** और नित्य जीवन की अनित्यता को देखता हुआ अपने परम लक्ष्य की ओर गतिशील रहता है।

सीधे-सरल ग्राम - वासी मुझे साधु समझ कर पास घिर आये और अपना दुख - दर्द कहने लगे। थोड़ी देर के ही वार्तालाप से मेरे उनके बीच सहज संबंध बन गये, मैंने वहां से विदा लेकर अपने गोपनीय साधना स्थल को प्रस्थान किया। श्मशान में रह कर मुझे पूज्य गुरुदेव की बताई विधि से कई एक विशिष्ट क्रियाएं सम्पन्न करनी थीं। यह तो मुझे वहां पहुंचते ही आभासित हो गया था कि वह स्थान चैतन्य है और इतर योनियों की बहुलता से भरा हुआ है। वैसे दाह संस्कार का स्थल वहां से थोड़ी दूर पर था और बीच में बांस का एक झुरमुट आ जाने से वहां से पूरी तरह से नहीं दिखाई पड़ता था। यह एक प्रकार से मेरे लिये अच्छा ही था क्योंकि एक परदा जो बन गया था मेरे और गांव वालों के बीच। सर्वथा एकान्त जानकर मेरे सामने भरपूर अवसर था कि मैं उन विधियों का प्रयोग कर सकूं, जो कभी पूज्य गुरुदेव के श्रीमुख से स्पष्ट हुई थीं। मेरे वहां पहुंचते ही सूक्ष्म रूप से जो हलचल मची, उसका मुझे तुरंत ज्ञान हो गया लेकिन आश्चर्य की बात यह थी कि वहां पर उपस्थित योनियां हिंसक और बाधाकारी नहीं लग रही थीं। यह मेरे लिये घोर आश्चर्य का विषय था। बाद में मुझे ज्ञात हुआ कि विशिष्ट साधकों की उस क्षेत्र में निरंतर उपस्थिति से वहां के श्मशान में एक विशेष प्रकार की गरिमा व्याप्त हो गई थी। उनके द्वारा निरंतर सुरक्षा मंत्रों के उच्चारण एवं जागरण प्रयोगों से वह स्थान चैतन्य और हानि रहित हो गया था।

शाम के लगभग पांच-छः बज चुके थे और उस पार के ग्रामीण सहज भाव से नदी पार कर रहे थे, क्योंकि नदी में बस घुटने-घुटने तक ही पानी था। तभी मैंने देखा कि लम्बा छाया जैसा व्यक्ति, जिसकी ऊंचाई लगभग सात फीट रही होगी, वह बिना जल को स्पर्श किये चला आ रहा है। मेरे लिये यह आश्चर्य का विषय नहीं था क्योंकि मैं अपनी पूर्व श्मशान साधना में इस प्रकार

के अनेक कौतुक देख चुका था, वह नदी के इस पार आया और शून्य में विलीन हो गया। मेरे मानस में प्रारंभ से सर्वोपरि साधना पूर्ण चल रही थी। और जब मैं श्मशान स्थल में आ ही गया था तो इस प्रकार के दृश्य देखने के लिए मानसिक रूप से तैयार भी था। सच कहूं तो यह है कि मैं तो आक्रामक रूप से सचेत होकर बैठा था, किन्तु इस वातावरण में व्याप्त शांति मुझे आश्वस्त कर रही थी कि यह सही अर्थों में साधना - मय श्मशान स्थली है। यहां पर भयप्रद जैसा कुछ भी नहीं, कुछ ही देर बाद तब सामने का टीला भी अंधेरे में खो गया और हवा में हिलते वृक्ष ही भूत लगने लग गये, तब मैंने देखा कि वही वृद्ध साधु जो मुझे कुछ देर पूर्व नदी पार करते हुए दिखा था, तट पर आकर कुछ ढूंढ रहा है। वह दो -तीन बार मेरे पास से भी गुजरा लेकिन उसके लिए मेरा कोई अस्तित्व ही नहीं था। थोड़ी देर बाद वह पुनः विलीन हो गया। रात्रि के दूसरे प्रहर में मैंने एकाएक पाया कि चार -पांच वृद्ध आकृति के लोग मुझे गौर से देख रहे हैं, जिनका आकार ठोस न होकर वायवीय लग रहा है। उनके देखने में कुछ आश्चर्य का भाव झलक रहा था। वह कुछ कहने को हुए, लेकिन फिर चुप लगा गये।

वामे वामा रमण कुशलादक्षिणो पान पात्र
मग्रेन्यस्तं मरि मरि सहित शूकरस्योष्ण मांसम।
स्कन्धे वीणा ललित सुभगा सद्गुरुणां प्रपंच,
कौलो धर्म परमगहनो योगिनामप्यगम्य ।।

अर्थात् " बांयी ओर रमण कुशल वामा, दांये पानपात्र, सामने मरिच सहित शूकर मांस, कंधे पर सुललित मोहिनी वीणा और साथ में सद्गुरु का संग, ऐसा होता है कौल्य धर्म जो कि योगीजनों के लिए भी अगम्य और दुर्लभ है।"

दो-तीन दिन तक मुझे यही सब तीन - चार वायवीय आकृतियां बार-बार दिखती रहीं। तीन-चार दिन के पश्चात् जब मैंने अपना प्रयोग आरम्भ किया तब पाया कि वह स्थान इतना निर्जन भी नहीं। उस स्थान पर लगभग सौ के आस-पास इतर योनियों का निवास था। किन्तु उनके स्वभाव में तीव्रता और कोलाहल नहीं था, जैसा कि मैंने प्रायः अन्य श्मशानों में पाया। श्मशान जागरण हेतु की गई मेरी कुछ क्रियाओं से वे प्रसन्न होने को बाध्य हो गये थे, जिसकी मात्र झलक उनके चेहरे पर भी झलक रही थी फिर भी वह आक्रामक नहीं हुए थे। उनके चेहरे पर केवल भाव था कि आखिर क्यों तुम हमारी शांति भंग कर रहे हो? बाद में मुझे गांव वालों से ज्ञात हुआ कि उस क्षेत्र में भूत प्रेतों का कोई प्रकोप कभी नहीं हुआ था। धीरे-धीरे मेरी साधना प्रगाढ़ होती गयी और मैं इस स्थिति में पहुंच गया कि उनके संकेतों को समझ सकूं और वह मेरे। भाषा की कोई आवश्यकता नहीं थी। ***मैं सर्वथा निर्द्वन्द्व और निश्चिंत इस प्रकार रहा करता था कि अपने ही परिवार के किन्हीं सदस्यों के बीच में हूं।*** धीरे-धीरे उन्हें भी स्पष्ट हो गया कि मैं उन्हें वशीभूत करने नहीं वरन अपनी साधना की कुछ अलग प्रक्रियाएं सम्पन्न करने यहां आया हूं, यदि मैं कहूं कि वह मेरे मित्र और सहायक हो उठे थे तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। ग्राम में आकर भिक्षाटन करने की मेरी आवश्यकता की पूर्ति भी उन्हीं के द्वारा हो गयी थी, जबकि ग्राम वासी यह समझते थे कि मैं निराहार रहकर साधना कर रहा हूं। ऐसे ही एक अवसर की बात है कि ***मैं साधना की तीव्रता में अचेतन हो उठा, उस समय उन सबने मुझे जिस प्रकार से घेरकर कर रखा, उसका स्नेह तो आज के युग में मानव भी नहीं दे सकता। मेरा तो यही अनुभव रहा कि भूत-प्रेत, इतर योनियां सदैव ही विकृत और पीड़ा दायक नहीं होतीं।*** उनमें भी स्वभाव का अन्तर होता है। कुछ भले व्यक्ति जब दैव - वश किसी दुर्घटना आदि में अप्राकृतिक मृत्यु को प्राप्त कर लेते हैं तो वह यद्यपि भूत-प्रेत जैसी योनियों में परिवर्तित हो जाते हैं किन्तु उनके संस्कार धार्मिक ही रह जाते हैं। उस श्मशान स्थल में भी ऐसा ही था। वहां पर भी इसी समाज की तरह पन्द्रह बीस उद्दण्ड भूत प्रेतों का समूह था, लेकिन उनके उत्पातों से मैं कभी बाधित नहीं हो सका। ***पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रदत्त सुरक्षा चक्र सदैव मुझे सुरक्षित बनाये रखता था।*** लगभग छः महीने की साधना के बाद जब मैं वहां से चला तो मेरा मन उस स्थान को छोड़ने को नहीं कर रहा था। जिस श्मशान में आकर मेरी मोह,ममता सब जल गयी थी, वहां की कुछ एक इतर योनियों के वश में आकर फिर जग गयी। इसी से आज मुझे बार-बार वहां की याद आती है और इस ***समाज के नर देह - धारी प्रेतों को देखने के बाद मैं निश्चित रूप से कह सकता हूं कि वे अशरीरी प्रेत इनसे ज्यादा सौम्य व शिष्ट हैं। उनमें तो जो न्यूनता है, उसके पीछे पीड़ा है कि वे अप्राकृतिक मृत्यु को प्राप्त होकर ऐसी योनि में आ पड़े, किंतु इस मानव को क्या विवशता है?***

■

नादिर शाह के घर का सारा काम काज भूत प्रेत करते थे

नादिर शाह . . . . . .

नाम सुनते ही झुरझुरी भर जाती थी . . . .

रावल पिण्डी का एक जाना माना नाम, जबकि भारत का विभाजन नहीं हुआ था। भक् गोरा चेहरा जो हमेशा नशे से लाल भभूका रहता था, सात फीट के आस-पास का कद, बड़ी-बड़ी नीली आंखें और भूरे बाल, घनी दाढ़ी और कमर के पास बांधे हुए तहमद नुमा वस्त्र, देख कर लगता ही नहीं था कि वह कोई अंग्रेज़ नहीं है।

-- जो पठानों की खूबसूरती और कद्दावर बदन का जीता - जागता नमूना था -- और अपने विशाल शरीर को हाथी की तरह झुमाता हुआ चलता था। मूड अच्छा न हुआ और कोई सामने पड़ कुछ बोल बैठा तो उसकी खैर नहीं। पश्तो, उर्दू, हिन्दुस्तानी सभी की मिली - जुली गालियों की बौछार और लातों के प्रहार, उस पर फूलों की तरह बरसने लगते थे. . .

-- मस्ती में हुआ तो जिसने जो मांगा तो उसको शून्य से लाकर तुरंत दे दिया।

मेरी जब उससे मुलाकात हुई तब वह श्मशान में रहा करता था। मैं अपनी कुछ साधनाओं के बारे में रावलपिण्डी गया था, वहां तब भगवान शिव का एक प्राचीन मंदिर मेरी जानकारी में था

सच तो यह है कि नादिर शाह की भगवान शिव में गहरी आस्था थी और वह एक प्रकार से औघड़ सम्प्रदाय का ही था, लेकिन अपनी जन्मगत मान्यताओं के कारण वह इसको प्रकट नहीं करता था और न इस बारे में किसी से खुलकर कुछ कहता था श्मशान साधनाओं में तो वह पूरा उस्ताद ही था। मुझे याद है उससे पहली मुलाकात, मैं श्मशान में कोई जगह तलाश रहा था, तभी वह झूमता-झामता अकेला ही, एक ओर से दैत्य की तरह, मेरे सामने आकर खड़ा हो गया. . .

--- उसकी भूरी लटें उलझी, बड़ी और बिखरी हुई थीं। शरीर से इतनी ज्यादा दुर्गन्ध आ रही थी कि यदि मैं उसके चेहरे का गोरा रंग न देख लेता तो मुझे यही लगता कि दिन में ही कोई प्रेत या राक्षस आकर खड़ा हो गया है. . .

-- जैसे शेर अपने इलाके में किसी दूसरे शेर के आ जाने पर क्रोध से घूरता है और पैंतरे बदलने लगता है, उसी तरह से उसके हाव - भाव होने लगे थे। तब तक मैंने उससे खुद ही विनम्रता पूर्वक पूछ लिया --

-- "क्या आप ही नादिरशाह हैं"?

--- इतना सुनना था कि उसकी चढ़ी त्यौरियां ढीली पड़ गयीं।

वह मुझे एक मिनट तक हैरानी से घूरता रहा और पूछा --

--"तू मुझे कैसे जानता है?"

-- मैंने कुछ और समझदारी से काम लेकर कहा --

-- "आपको इस रावल पिण्डी में कौन नहीं जानता, आपके चर्चे तो यहां के बच्चे-बच्चे की जुबान पर हैं।"

यह सुन वह बच्चों की तरह खुश हो पूछ बैठा --

--"क्या सचमुच ऐसा ही है!"

मैं, उसे स्पष्ट रूप से दिख रहा था कि उसके क्षेत्र का नहीं हूं और एक परदेशी के मुंह से इस तरह की बातें सुनना, उसे खुश करने के लिए काफी था। एक बड़े से खंडहर के नीचे निवास था उसका, जिसमें चमगादड़ और सांपों की भरमार थी, लेकिन नादिरशाह को इन सबसे कोई अंतर नहीं पड़ता था।

दिन रात नशे में चूर रहना और रात में उठकर किसी जलती चिता के पास चले जाना या किसी कब्रिस्तान में चले जाना उसके लिए मनोरंजन था. . .

. . . जैसे कोई सभ्य पुरुष शाम को पार्क में घूमने जाता है! उसको आता देखकर श्मशान या चिता के रखवाले डरकर भाग जाते थे।

और **किसी भी भूत -प्रेत से ज्यादा उसका आतंक हुआ करता था।** चिताओं के पास बैठकर वह क्या करता था, यह तो मैं नहीं समझ पाया था, लेकिन वह वहीं पर चिता की अग्नि में ही मांस की बोटियां भून कर खाता था और वहीं पर शराब की बोतलें चढ़ाता हुआ, विचित्र ढंग से नृत्य करता था, ऐसा लगता था कि जैसे वह शून्य में किसी का हाथ पकड़कर नाच रहा हो। बाद में मुझे एक चिता के रखवाले ने बताया--

-- इसके संगी - साथी तो भूत-प्रेत हैं। यह उनके साथ ही नाचता - गाता रहता है।

भूतों को साधने की बातें तो मैंने बहुत सुनी थी किन्तु भूतों के साथ रास - रंग भी किया जाता है, यह नयी बात सुनी थी. . .

इतना सब होने पर भी नादिरशाह था पूरा मस्त आदमी। मैंने जब-जब उसको मस्ती में देखकर बात-चीत छेड़ी तो उसने मुझको साधना के और श्मशान साधना के सूत्र बताये।

हम लोगों में दोस्ती हो गयी थी, क्योंकि मैंने कभी उससे आम लोगों की तरह से बात-चीत नहीं की और उसको जो चिढ़ लगती थी, वह इसी बात से कि क्यों लोग उसके पास आकर उसकी प्रशंसा करने लगते थे या अपनी कोई समस्या लेकर हल पूछने चले आते थे। **ऐसे में बहुत तंग आकर डंडा, पत्थर, हड्डी का टुकड़ा या जो भी वस्तु हाथ में आता, वह सामने वाले के सिर पर दे मारता। गालियों का तो उसके पास दुर्लभ खजाना था,** चुन-चुन कर वह ऐसी उपमायें देता था कि सामने वाले का दिमाग भन्ना जाता और कानों में अंगुली डालकर भागना ही एक मात्र उपाय शेष रह जाता था। कभी वह सामने वाले पर थूक देता तो कभी सारे वस्त्र उतार कर नंगा होकर उनके सामने अश्लील मुद्रा बना कर नाचने लगता कि व्यक्ति उसका पिण्ड छोड़ दे, फिर भी लोग उसके पास शराब की बोतलों पर बोतलें लेकर आते ही रहते थे।

कुछ दिनों बाद मैं वापस अपने नगर चला आया, लगभग दो वर्ष बाद

जब मैं वापस रावलपिण्डी गया तो वहां जाकर नादिर शाह के बारे में पूछा। मुझे मालूम पड़ा कि नादिर शाह अब वह पहले वाला अघोरी नहीं रहा। उसने किसी अंग्रेज अधिकारी पर खुश होकर एक ऐसा उपाय बताया कि जिससे उसका कोई असाध्य रोग जाता रहा। उस अधिकारी ने भी खुश होकर नादिरशाह को एक पूरा गांव उपहार में दे डाला।

मेरे अंदर उत्सुकता जगी कि देखूं अब नादिरशाह अघोरी जीवन को छोड़कर कैसे रह रहा है? रावल पिण्डी से २५ कि.मी. पश्चिम की ओर जाने पर मुझे उसका गांव मिला।

जैसे वह श्मशान में लोकप्रिय था, वैसे ही चर्चे उसके गांव में भी फैले हुए थे; मैं सहज रूप से उसके घर पर पहुंच गया। घर तो उसे कहना उचित नहीं होगा क्योंकि वह पुराने जमाने के किसी जमींदार की हवेली थी, जिसमें नादिरशाह डटा था . .

मुझे देखते ही वह दौड़ कर मुझसे मिला। अब उसने अपनी दाढ़ी कटवा ली थी और सिर के बाल भी सलीके से कढ़े हुए थे। उसका लम्बा-चौड़ा शरीर मलमल के कुर्ते में बहुत फब रहा था। वह सचमुच ही कोई जमींदार या तालुकेदार लग रहा था। उसकी नीली-नीली आंखें और गोरा रंग, उसके भूरे रंग की लम्बी मूछें, उसके चेहरे को अद्भुत रूप से दर्शनीय बना रही थी। वह एक मसनद के सहारे जाकर अधलेटा हो गया और हुक्के से कश खींचने लगा। **थोड़ी देर बाद जब हुक्के की आंच मंद पड़ने लगी तो उसने एक ओर मुंह उठाकर अपने उसी पुराने अंदाज में भारी सी गाली दी और तुरंत हवा में तैरता हुआ एक अंगारा आया जो आकर हुक्के में रख उठा।** नादिरशाह बिगड़ गया बोला

--"क्या तम्बाकू तेरा बाप लायेगा?"...

-- थोड़ी ही देर में हवा में तैरती हुई तम्बाकू भी हुक्के में आ गई! मैं समझ गया कि हो न हो कोई अद्भुत बात है, और मैं यही समझ रहा था कि नादिर शाह के पास जो पुरानी विद्या शून्य से वस्तुएं प्राप्त करने की है, वह उसी का प्रयोग कर रहा है ...

-- इसके बाद तो उसके मुंह से गालियों के फूल झड़ते रहे और एक के बाद एक कभी लस्सी का गिलास हवा में तैरता हुआ आया, तो कभी हवा में तैरती हुयी दस्तर - खान आकर बिछ गयी, उसमें खाना भी परोस उठा और एक दो नहीं पांच - छः तरह की सब्जियां,पूरियां,कचौरियां, दहीबड़ा वगैरह, पूरा भोज ही हो रहा था। मैंने चुपचाप भोजन किया और नादिर शाह के साथ घूमने निकल पड़ा।

सामने जो नजारा देखा, उससे मेरी आंखें ही फट गईं। मैंने देखा - एक बाल्टी भैंस के थन के नीचे हवा में तिरछी खड़ी है और भैंस के थन से दूध निकल - निकल कर उसमें भर रहा है। दूसरी ओर जहां सामने खेत फैला था, वहां पर एक कुदाल हवा में खुद उठ-उठ कर जमीन की गुड़ाई कर रही थी और नादिरशाह किसी पक्के जमींदार की तरह पता नहीं किनको घुड़कता जा रहा था और अपने हुक्म सुनाता जा रहा था, मैंने उससे हिम्मत करके पूछ ही लिया--

-- "आखिर यह सब क्या माजरा है?"...

-- नादिरशाह ठठाकर हंस पड़ा, बोला...

-- "क्यों, इसमें ताज्जुब की क्या बात है... रावलपिंडी के मेरे दोस्त जब यहां तक आ सकते हैं तो मेरे गुलाम मेरे साथ क्यों नहीं आयेंगे"

मैं उसका इशारा समझ गया। श्मशान के उसके संगी -साथी, भूत-प्रेत उसके साथ ही साथ यहां तक भी आ गये थे...

... फिर भी मैंने खुलासा करने के लिये पूछ ही लिया - क्या -- यहां काम करने के लिये कोई नौकर नहीं रखा। नादिरशाह मंद-मंद मुस्कराता हुआ बोला -- -- "मुझे इनके रहते हुये नौकरों की क्या जरूरत?"

मैं एक सप्ताह तक नादिरशाह का मेहमान बनकर रहा। घर का सारा काम-काज अदृश्य हाथों को करते देखता रहा...

-- चाहे वह हवा में तैरकर आते हुये गिलास हों, या हवा में ही कपड़े धुल-धुल कर सामने डोरी पर टंग रहे हों, हवा में ही सिकती रोटियां हो अथवा रात में खुले आंगन में बैठने पर सामने से आती मधुर संगीत स्वर लहरियां...

मेरा अंदाज है कि लगभग बीस भूत अथवा प्रेत उसके घर में उसके चाकर बनकर प्रतिक्षण सजग और दिन-रात काम करने के लिये तैयार रहते थे...

फिर तो देश का विभाजन हो गया और मैं नादिरशाह से दुबारा न मिल सका, लेकिन वहां से जो खबरें मिलती रहीं, उनसे यही पता लगता रहा कि नादिरशाह जीवन के अंतिम समय तक इसी ठाठबाट से जीता रहा। ■

निखिल षडाष्टक

त्वमेव माता च पिता त्वमेव , त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव , त्वमेव सर्वं मम देव देव ।१।

त्वमेव काया, माया त्वमेवं , ज्ञानं त्वमेवं चिन्त्यं त्वमेवं
प्राणं त्वमेवं हृदयं त्वमेवं , त्वमेव सर्वं मम देव देव ।२ ।

त्वमेव तातः मातः त्वमेव , त्वमेव प्रियवं, प्रियतं त्वमेव
आद्यं त्वमेव, अन्त्यं त्वमेव , त्वमेव सर्वं मम देव देव। ३ ।

वदनं त्वमेव नेत्रं त्वमेव , जीवं त्वमेव भर्ता त्वमेव
गतिं वै त्वमेवं मतिं वै त्वमेवं , त्वमेव सर्वं मम देव देव। ४ ।

दिव्यं त्वमेवं रूपं त्वमेवं , वक्षं त्वमेवं वलयं त्वमेवं
देवं त्वमेवं स्वरूपं त्वमेवं , त्वमेव सर्वं मम् देव देव। ५ ।

नेत्रं त्वमेव दृश्यं त्वमेव, सर्वं त्वमेव गर्वं त्वमेव
त्वमेवं त्वमेवं त्वमेवं त्वमेवं , त्वमेव सर्वं, मम देव देव। ६ । ■

मृत आत्मा की मुक्ति

हमारा कोई प्रिय आत्मीय, जो काल चक्र में विवश होकर हमसे बिछुड़ गया हो, उसके स्मरण, उसके प्रति भावना और श्रद्धा के अतिरिक्त हम कर भी क्या सकते हैं? इस सब को व्यक्त भी किया जाता है अनेक उपायों से, लेकिन भावनात्मक पक्षों की स्थिति अपने स्थान पर निर्विवाद रूप से श्रेष्ठतम होने के साथ -साथ व्यवहारिक पक्षों का भी पर्याप्त ध्यान रखना उचित होगा और यही बात अपने मृत आत्मीय के प्रति भी इतनी ही सघनता से व्यवहृत होती है। मृत्यु के पश्चात हमारा और उसका सम्बन्ध विच्छेद केवल दैहिक स्तर पर होता है, आत्मिक स्तर पर नहीं और तब हमारा दायित्व पहले से अधिक बढ़ चुका होता है, क्योंकि तब तो वह इस भौतिक देह के अभाव में अनेक ऐसे कार्य और कर्त्तव्य करने में असमर्थ हो जाता है जो कि अन्यथा कर सकता, जबकि हमारे पास ईश्वर प्रदत्त यह स्थूल देह है, जिसका हम न केवल अपने लिये अपितु अपने आत्मीय के लिये भी उपयोग कर सकते हैं। यह उपयोग में लेना इस प्रकार से संभव है कि उसकी आत्मा की शांति के लिये निर्धारित विधि-विधानों को पूर्ण कर, तर्पण -दान देकर उसे भी निम्न कोटि की योनियों से निकाल कर पितृ वर्ग में ले जायें, जहां वे उच्चता और श्रेष्ठता से आसीन हो स्वयं भी तृप्त हों एवं हमारे लिये भी सहायक बनें, उनका आशीर्वाद और कृपा हमें प्राप्त हो। यह तो एक प्रकार का लेन -देन है। जिन पुण्य कार्यों को वे स्थूल देह के अभाव में नहीं कर पायें उन्हें उनके वंशज करें, बदले में वे अपनी असीम शक्तियों का उपयोग कर अपने वंशजों को आशीर्वाद व कृपा - फल देते हैं। पितृ पूजन का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है। सभी धर्मों, सभी सम्प्रदायों में पितृ पूजा के विभिन्न उपाय मिलते हैं। यहां तक कि जंगली कबीलों व आदिवासी जनजातियों के मध्य भी पितृ-पूजा का विस्तृत विधान मिलता है। हमारे प्राचीनतम ग्रन्थ **'ऋगवेद'** में पितृ वर्ग का उल्लेख सम्मानपूर्वक करते हुए उन्हें देवताओं के समकक्ष व उन्हीं के समान सोमपान करने वाला बताया गया है। **'ऋगवेद'** में ही पितृ वर्ग के तीन भेद मिलते हैं यथा- अवर, मध्यम और पर। वे केवल पूज्यनीय ही नहीं माने गये वरन् मांगलिक अवसरों पर उनका आवाहन और उनसे आशीर्वाद प्रदान करने की प्रार्थना का उल्लेख भी वेदों में मिलता है। इससे स्पष्ट होता है कि पितृ वर्ग वास्तव में मनुष्य के लिये ऐसा वर्ग होता है जो उसकी सभी मनोकामना पूर्ति में देववर्ग के समान ही होता है-- प्रायः देववर्ग से भी अधिक प्रभावशाली, क्योंकि वह व्यक्ति विशेष से सीधे एवं रक्त द्वारा सम्बन्धित जो होता है।

हमारे मृत आत्मीय मृत्यु के उपरान्त भटकें नहीं, उनको कोई निकृष्ट योनि न मिले, इसके लिये कुछ विधान शास्त्रों में बताये गये हैं। एक बात जो मृत्यु के उपरान्त अलग-अलग धर्मों में सामान्य रूप से मिलती है, वह यह कि मृत्यु के उपरान्त कुछ दिन निर्धारित किये गये, जिनमें शोक मनाये जाने की प्रथा रखी गयी। इसके पीछे मूल भावना यही है कि इन दिनों में मृत आत्मा सर्वाधिक सक्रिय रहती है, एवं अपने परिवार के सदस्यों से सम्पर्क साधने की इच्छुक रहती है। ऐसी दशा में जहां किसी व्यक्ति की मृत्यु किसी दुर्घटना में हुई हो एवं मृत व्यक्ति प्रेत-योनि अथवा ऐसी ही कोई विकृत योनि में जा गिरा हो, तब यह उपाय लाभदायक पाया गया है कि पितृ पक्ष के दिनों में गया के निकट फल्गू नदी में तर्पण और पिण्ड देने से पितरों को प्रेत योनि से मुक्ति मिल जाती है। हमारे शास्त्रों में पितृ वर्ग को सम्मान देने के लिये तथा केवल उनसे ही संबंधित पूजन -उपासना करने के लिये पूरे वर्ष में जिस पक्ष विशेष को निर्धारित किया गया है, वह पितृ पक्ष कहलाता है। आश्विन माह के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से लेकर अमावस्या तक का सारा काल पितृ पक्ष कहलाता है। इन दिनों में अपने पूर्वजों के प्रति श्रद्धापूर्वक जो शास्त्रोक्त विधान संपन्न किया जाता है उसे **'महालय श्राद्ध'** की संज्ञा दी गई है।

(शेष पृष्ठ ६३ पर)

ज्योतिष प्रश्नोत्तर

मालाराम भांभू, श्री गंगा नगर

प्रश्न :- **मेरे परिवार पर चल रहा मुकदमा कब तक समाप्त होगा?**

उत्तर :- अभी लगभग सवा दो वर्ष का समय आपके लिए कठिन रहेगा।

राजेन्द्र प्रताप सिंह, चित्तौड़गढ़

प्रश्न :- **जमीन में गड़ा धन कब तक प्राप्त होगा?**

उत्तर :- इस विषय में आपकी कुण्डली से कोई योग प्रकट नहीं होता।

भास्कर महाजन,जलगांव

प्रश्न :- **मेरा भाग्योदय कब तक होगा? ऋण मुक्ति का उपाय बतायें?**

उत्तर :- आपके लिए मंगल साधना दोनों स्थितियों में श्रेष्ठ स्थिति तक ले जाने में सहायक सिद्ध होगी।

विश्वनाथ डी. ताम्बोली, सतारा

प्रश्न :- **पदोन्नति एवं मुकदमे सफलता कब तक?**

उत्तर :- मंगल - शनि युति के कारण अनेक बाधाएं संभव हैं, अतः मंगल शांति का उपाय करें।

सी. यशोदा, बम्बई

प्रश्न :-**क्या मैं शशिदेव्य अप्सरा साधना कर सकती हूं? मेरे कुंडली के अनुरूप जो अन्य साधना फलप्रद हो उसे स्पष्ट करें?**

उत्तर :- आप निःसंकोच शशिदेव्यअप्सरा साधना कर सकती हैं। साथ ही सूर्य साधना भी आपके भाग्योदय एवं वैवाहिक जीवन के लिए फलप्रद रहेगी।

नवल तंवर, नागदा

प्रश्न :- **अच्छी नौकरी कब तक? उचित रत्न वजन सहित बतायें?**

उत्तर :- ३२ वें वर्ष में स्थितियां अनुकूल होगीं। तीन रत्ती का पन्ना धारण करें।

पुण्डरीकाक्ष चटर्जी, धनबाद

प्रश्न :- **क्या मेरा प्रशासनिक सेवा में जाने का योग है?**

उत्तर :- आपको श्रेष्ठ राजकीय सेवा तो प्राप्त होगी ही किन्तु प्रशासनिक नहीं।

वेद प्रकाश कपूर, मंडी

प्रश्न :-**मेरा मुकदमा कब तक समाप्त होगा?**

उत्तर :- मुकदमे का निर्णय इसी वर्ष के अन्त तक और आपके पक्ष में होगा।

कृष्ण कुमार उपाध्याय, बस्ती

प्रश्न :- **मैं पत्रकारिता, वकालत अथवा किसी अन्य व्यवसाय में से क्या चूनुं?**

उत्तर :- मूल रूप से आपको राजनीति के क्षेत्र में सफलता मिलेगी, जिसके लिए पत्रकारिता का आधार लेना फलप्रद होगा।

जगदम्बा प्रसाद, पडरौना

प्रश्न :- **मुझे किस व्यवसाय में सफलता मिलेगी?**

उत्तर :- तिलहन से संबंधित अथवा किसी भी प्रकार के तेल संबंधी व्यवसाय से आपको पर्याप्त लाभ मिलेगा।

चंचल सिंह मनराल, नैनीताल

प्रश्न :- **मेरा भाग्योदय कब तक हो जायेगा?**

उत्तर :- इस वर्ष आपके लिये अनुकूल स्थितियां अवश्य निर्मित होंगी। पुखराज धारण करना आपके लिए अनुकूल रहेगा।

किशोर परमानन्द दवे, बम्बई

प्रश्न :- **भाग्योदय कहां और कैसे होगा?**

उत्तर :- आपको निजी व्यवसाय में ही सफलता मिलेगी। जैसे - टी.वी. रिपेयरिंग अथवा इसी प्रकार का तकनीकी व्यवसाय। स्वस्थान ही लाभ प्रद होगा।

रविन्द्र पाल, दिल्ली

प्रश्न :- **मेरी नौकरी कब तक लगेगी?**

उत्तर :- अभी नौकरी का योग नहीं बन रहा है।

आप अपनी समस्या से सम्बन्धित कोई भी एक प्रश्न नीचे दिये गये कूपन में लिखकर भेजें। इस कूपन में लिखी समस्या का ही उत्तर पत्रिका में प्रकाशित होगा ।

कूपन क्रमांक :- ११३

नाम : ....

जन्म तिथि :- ....महीना ....सन्.........

जन्म स्थान .... जन्म समय ....

पता (स्पष्ट अक्षरों में) :-..

....

आपकी एक समस्या :- ....

कृपया निम्न पते को काटकर लिफाफे पर चिपकाएं :-

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान कार्यालय
३०६, कोहाट इन्क्लेव
पीतम पुरा, नई दिल्ली-११००३४

जन्मांकों के अनुसार भविष्य

जिनका मूलांक १ हो :-
यह माह आपके लिए श्रेष्ठ नहीं कहा जा सकता। अनावश्यक वाद-विवाद तनाव एवं कटुता की स्थितियां बनी रहेंगी। किसी गलतफहमी का शिकार भी होंगे। निर्धारित योजनाओं को पूर्ण करने पर विशेष ध्यान दें। पारिवारिक सुख सामान्य।
अनुकूल तिथियां :- २,७,२३
प्रतिकूल तिथियां :- ८,२७,२९
यात्राः- १८,२१,३०
प्रेम प्रसंग :-२,५,२०
अनुकूल रत्नः -केरू

जिनका मूलांक २ हो :-
किसी अनपेक्षित व्यय से असंतुलन संभावित। पूरे माह ही आकस्मिक खर्चों की बाढ़ बनी रहेगी। पत्नी के स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव संभावित। व्यापारी वर्ग खरीद पर ध्यान दें। शेयर मार्केट में धन लगाने हेतु समय नहीं।
अनुकूल तिथियां :- ३,१७,२१,२३
प्रतिकूल तिथियां :- २,२८
यात्राः-७,१८,२१
प्रेम प्रसंग :-३,६,२७
अनुकूल रत्नः -गटेसा

जिनका मूलांक ३ हो :-
कहीं से आकस्मिक धन प्राप्ति की सम्भावनाएं प्रबल दिखती हैं। जमा पूंजी में वृद्धि होगी। कोई वाद-विवाद सुलझेगा। राज्य पक्ष से कुछ बाधा संभव है। पुत्र की उपलब्धि से मन में विशेष उल्लास होगा। यात्राएं संभव। स्वास्थ्य में कुछ न्यूनता आ सकती है।
अनुकूल तिथियां :- १,८,१०,३०
प्रतिकूल तिथियां :- २,१२,२७
यात्राः- ५,७,१६
प्रेम प्रसंग :-१३,१९
अनुकूल रत्नः -पनधन

जिनका मूलांक ४ हो :-
पारस्परिक मेल - मिलाप से अप्रिय स्थितियों का निदान करना ही भविष्य की दृष्टि से लाभदायक रहेगा। धार्मिक कार्यों में मन लगेगा। मन की अशांति अभी कुछ समय और चलेगी। पारिवारिक सुख सामान्य रहेगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।
अनुकूल तिथियां :- ५,८,१३,२१
प्रतिकूल तिथियां :- ६,२१,२५
यात्राः- १,१७,२२
प्रेम प्रसंग :-२,५,७
अनुकूल रत्नः -सिफरी

जिनका मूलांक ५ हो :-
नवीन योजनाओं को मूर्त रूप दें। राज्य पक्ष से अनुकूलता रहेगी एवं लम्बे समय से चली आ रही अड़चनें दूर होंगी। मन में उत्साह और उमंग रहेगा। सभी प्रकार से श्रेष्ठ माह। स्वास्थ्य पर ध्यान देना आवश्यक है। व्यापारी वर्ग के लिए श्रेष्ठ समय।
अनुकूल तिथियां :- ५,१४,२३,२७
प्रतिकूल तिथियां :- ४,२३,३०
यात्राः- ८,२५,२८
प्रेम प्रसंग :-१९०,२०
अनुकूल रत्नः -लारू

जिनका मूलांक ६ होः-
धन लाभ के लिये इस माह आपको विशेष प्रयास करना होगा। चोट-चपेट की स्थिति से सावधानी पूर्वक बचें। पारिवारिक स्थितियों में मतभेद की स्थितियां बनती रहेंगी। राज्य पक्ष से अड़चनें संभावित। व्यापारी वर्ग एवं अर्ध सरकारी वर्ग के व्यक्तियों के लिए श्रेष्ठ समय।
अनुकूल तिथियां :- ३,१५,२०,२३
प्रतिकूल तिथियां :- ४,१६,२७
यात्राः-७,१८,२०
प्रेम प्रसंग :-२,१,२५
अनुकूल रत्नः -दूर

जिनका मूलांक ७ हो :-
विद्यार्थी वर्ग के लिए अनुकूल समय,विशेष रूप से जिनका इस माह कोई परीक्षा या इन्टरव्यू पड़ रहा हो। अधिकारी वर्ग को तनावों का सामना करना पड़ सकता है। पारिवारिक सुख श्रेष्ठ रहेगा। पति के स्वभाव में आ गई चिड़चिड़ाहट दूर होगी।
अनुकूल तिथियां :- ७,२०,२४
प्रतिकूल तिथियां :- ६,८
यात्राः- ७,२१,३०
प्रेम प्रसंग :-२,११,२१
अनुकूल रत्नः -झना

जिनका मूलांक ८ है
यह माह मिला - जुला फल प्रदान करेगा, किंतु स्वास्थ्य की ओर से अत्यधिक सजग रहना पड़ेगा, विशेष रूप से जो उदर रोग से पीड़ित हों। धनागम की स्थिति श्रेष्ठ रहेगी। अनावश्यक खर्चों की अधिकता रहेगी।
अनुकूल तिथियां :- ४,१२,२२
प्रतिकूल तिथियां :- १३
यात्राः- २,१८,२७
प्रेम प्रसंग :-१८,१९,२७
अनुकूल रत्नः -रोमनी

जिनका मूलांक ९ हो :-
भावुकता पर नियंत्रण रखना उचित। उचित निर्णय शीघ्र ही लें। मित्र वर्ग पर्याप्त सहयोगी रहेगा। पारिवारिक सहयोग भी भरपूर रहेगा। मनोरंजन व आमोद -प्रमोद की स्थितियां निर्मित होंगी। तनाव समाप्त होगें। कुल मिला कर अत्यन्त श्रेष्ठ माह।
अनुकूल तिथियां :- १,६,११,१८
प्रतिकूल तिथियां :- ४,७
यात्राः- ८,२२
प्रेम प्रसंग :-१७,३०
अनुकूल रत्नः -सावोर

मधुमेह

वर्तमान समय में तो एड्स की विश्व व्यापी ख्याति, उससे संबंधित उपचार एवं बचाव के उपायों पर ध्यान दिये जाने के कारण अन्य गंभीर बीमारियां गौण हो गई हैं, किंतु एड्स के पश्चात् जो गंभीर बीमारियां शेष रह जाती हैं उनमें कैंसर, हृदय रोग, उच्च रक्तचाप के साथ ही साथ मधुमेह का भी आता है। मधुमेह ने आज सम्पूर्ण विश्व की १५ प्रतिशत के आस-पास जनसंख्या को अपने चंगुल में ले रखा है। मधुमेह या डायबिटीज केवल एक रोग ही नहीं वरन अनेक रोगों का मूल कारण व जननी है, जिसके विषय में निःसंकोच कहा जा सकता है कि यह पूरे जीवन और शरीर मे घुन की तरह लग कर खोखला कर देने वाला रोग है। मधुमेह कोई नवीन रोग नहीं है। इसके विषय में अत्यंत प्राचीन भारतीय चिकित्सा ग्रंथों में भी उल्लेख मिलते हैं। ईसा से भी कई सौ वर्ष पूर्व रची गई चरक संहिता में एवं प्रख्यात वैद्य सुश्रुत की संहिता में इस रोग का वर्णन मिलता है और वर्तमान में प्रचलित इस बीमारी का 'मधुमेह' नाम भी उन्हीं ग्रन्थों से ही लिया गया है।

मेटाबॉलिज्म

मानव का शरीर अपनी गतिविधि या क्रिया कलाप को संचालित करने के लिए भोजन के तीन तत्वों पर मुख्य रूप से निर्भर रहता है जिन्हें प्रोटीन, वसा और कार्बोहाइड्रेट्स कहा गया है। शरीर के पोषण के लिए विभिन्न विटामिन, खनिज पदार्थ, कैल्शियम, फास्फोरस, लौह तत्व भी आवश्यक घटक हैं, किंतु शरीर को गतिशील रखने के लिए जिस ऊर्जा की आवश्यकता होती है, वह कार्बोहाइड्रेट्स के द्वारा ही संभव हो पाती है। दूसरी ओर शरीर के समुचित पोषण व निर्माण के लिए प्रोटीन की उचित मात्रा का लिया जाना भी आवश्यक होता है। वसा तो शरीर में केवल आपातकालीन उपयोग के समय में प्रयुक्त होने वाली ऊर्जा के रूप में प्रयोग होती है। खाद्य पदार्थ जिस जैविक क्रिया द्वारा ईंधन में परिवर्तित होते हैं उसे जैविक विज्ञान की भाषा में चपापचय (मेटाबॉलिज्म) की संज्ञा दी गई है। इसी चपापचय क्रिया के द्वारा ही **भोजन में निहित उर्जा ग्लूकोज के माध्यम से शरीर के एक-एक कोष को मिलती है तथा भोजन में निहित ऊर्जा जिस महत्वपूर्ण पाचक अन्तःस्राव (हार्मोन) के द्वारा ग्लूकोज में बदलती है उसका नाम है 'इंसुलीन'।** इंसुलीन आज एक जाना पहचाना नाम हो गया है क्योंकि जिस प्रकार से समाज में निरंतर मधुमेह के रोगियों की संख्या बढ़ती जा रही है और उसके फलस्वरूप इंसुलीन के इंजेक्शन लेने की आवश्यकता, उससे घर परिवार और समाज में प्रायः सभी इसके नाम से परिचित हो ही चुके हैं। इंसुलीन ही वह महत्वपूर्ण रसायन है जिसके द्वारा न केवल ग्लूकोज को शरीर का एक-एक कोष ग्रहण करने में समर्थ होता है, वरन रक्त में घुली शर्करा की मात्रा का नियमन भी इसी महत्वपूर्ण हॉर्मोन द्वारा संभव हो पाता है। इंसुलीन ही रक्त में उपस्थित शर्करा (या ग्लूकोज) की मात्रा आवश्यकता से अधिक होने पर उसका रूपांतरण वसा (चर्बी) में कर उसका संग्रह यकृत एवं चर्बी के कोषों में करता है।

इंसुलीन

इंसुलीन का कार्य केवल भोजन में निहित कार्बोहाइड्रेट्स के साथ ही सम्बद्ध नहीं होता वरन आहार में सम्मिलित वसा एवं प्रोटीन के साथ भी होता है। वह इनसे संबंधित चपापचय में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभता है। वस्तुतः इंसुलीन के ज्ञात-अज्ञात कार्यों की सूची तो अत्यंत लम्बी है। **इंसुलीन ही मनुष्य द्वारा ली जाने वाली वसा का फैटी अम्ल में रूपांतरण कर, उसका संग्रहण चरबी के रूप में करता है, दूसरी ओर इंसुलीन के प्रभाव से ही संभव हो पाता है कि ये फैटी एसिड पुनः वसा के रूप में परिवर्तित न हो उठें।**

कई बार मनुष्य के साथ ऐसी भी स्थिति आ जाती है कि वह बाह्य रूप से ऊर्जा ग्रहण नहीं कर पाता, तब शरीर अपने अंदर की प्रोटीन का विघटन करके ही आवश्यक उर्जा की पूर्ति करता है। **इंसुलीन ऐसी दशा में प्रोटीन का पुनः निर्माण कर शरीर के क्षय को रोकता है।**

इंसुलीन के इसी महत्वपूर्ण चक्र में जब इसका संतुलन अव्यवस्थित हो जाता है अर्थात व्यक्ति के अंदर खाद्य पदार्थों के चपापचय की क्रिया सही रूप से संचालित नहीं होती है तो उसे मधुमेह का रोग प्रारम्भ हो जाता है। इस दशा में निर्मित ग्लूकोज की मात्रा शरीर के प्रत्येक कोष में जाने के स्थान पर मूत्र के साथ शरीर से बाहर निकलनी प्रारम्भ हो जाती है।

आज की जीवन पद्धति और केक, बिस्कुट, पुडिंग जैसे कार्बोहाइड्रेट्स से सम्पन्न पदार्थों की उपयोगिता निरंतर बढ़ते जाने से मधुमेह एक ऐसा रोग हो गया है जो किसी के भी शरीर में चुपचाप घुसपैठ कर सकता है तथा मधुमेह का पता सामान्यतः तब तक नहीं लग पाता जब तक कि उसका कोई आघातकारी प्रभाव न सामने आ जाय। फिर भी कुछ एक ऐसी दशायें होती हैं जिनके द्वारा व्यक्ति सचेत हो सकता है, पूर्वानुमान लगा कर उचित परीक्षण करा कर, निश्चित कर सकता है कि कहीं वह इस जटिल बीमारी की चपेट में तो नहीं आ गया है। इन दशाओं के अनुसार अपने आपको परखना तथा मूत्र विश्लेषण के द्वारा रक्त शर्करा का स्तर पता कर सुनिश्चित करना किसी के लिए भी सुरक्षित उपाय हो सकता है।

मधुमेह के प्रमुख लक्षणों का विवरण आगे दिया जा रहा है ।

१. किसी घाव के भरने में विलम्ब होना :-

इससे पीड़ित रोगी के घाव शीघ्र भरते नहीं, साथ ही उनमें पक जाने की प्रवृत्ति भी होती है। इसका कारण होता है शर्करा मिश्रित रक्त में संक्रामक जीवाणुओं के पनपने का प्रबल आधार। इसी की दुखद परिणति गैंग्रीन नामक रोग में हो सकती है, जिसमें किसी घाव के बुरी तरह से सड़ जाने पर वह अंग केवल काट कर ही जीवन बचाया जा सकता है।

२. मूत्र त्याग की प्रवृति में वृद्धि होना :-

रक्त में शर्करा की मात्रा अत्यधिक बढ़ जाने पर एवं उसका आवश्यक कोषों में, शोषित न होने पर, शरीर इस ऊर्जा युक्त पदार्थ के उत्सर्जन का उपाय करता है और यह संभव हो पाता है केवल मूत्र त्याग द्वारा, यद्यपि गुर्दे अपनी क्षमता भर इसके परिशोधन का उपाय करते हैं किन्तु उनकी भी एक सीमा होती है और इसी कारण मधुमेह पीड़ित व्यक्ति के गुर्दे पर भी विपरीत प्रभाव पड़ने लगता है।

३. अत्यधिक प्यास लगना :-

यह तो स्वभाविक बात है कि जब शरीर से मूत्र का अधिक विसर्जन होगा, तब शरीर अपने जल तत्व का संतुलन बनाये रखने के लिए आतुर होगा, इसी से मधुमेह के रोगी को प्यास लगने के साथ ही साथ सदैव उसका गला या होंठ भी शुष्क रहने लग जाता है।

४. शरीर का निढाल रहना :-

शरीर की स्वचालित प्रक्रिया होती है कि जब उसे पर्याप्त ऊर्जा नहीं मिलती है तो वह अपने अंदर निहित प्रोटीन का विघटन कर उससे ऊर्जा प्राप्त करने की प्रक्रिया आरंभ कर देता है। मधुमेह के रोगी के शरीर में यही क्षयकारक क्रिया आरंभ हो जाने के कारण उसका शरीर थका -थका रहने लग जाता है।

५. क्षुधा वृद्धि किंतु शरीर का क्षय :-

यह लक्षण उपरोक्त लक्षण का अनुसांगिक है, क्योंकि शरीर की प्रोटीन विघटित होगी तो उसकी क्षति पूर्ति के लिए शरीर बाह्य रूप से ऊर्जा प्राप्त करना चाहेगा और उसकी क्षुधा बढ़ जायेगी, यद्यपि उसका क्षुधा बढ़ना भी किसी अर्थ का नहीं रहता क्योंकि शरीर के कोषों को जिस पोषण की आवश्यकता होती है वह तो भोजन के ग्लूकोज में परिवर्तित होने की क्रिया भंग होने से मिल नहीं पाती फलस्वरूप व्यक्ति के स्वास्थ्य में कोई गुणकारी परिवर्तन आना तो दूर उल्टे कमजोरी की स्थिति ही बनी रहती है। वास्तव में देखा जाय तो शरीर स्थित **प्रोटीन के विघटित हो जाने से व्यक्ति के अंदर कई प्रकार की असमानताएं उत्पन्न हो जाती हैं।** उसके मस्तिष्क के कोषों को पर्याप्त पोषण न मिलने से उसकी मानसिक एकाग्रता व मानसिक परिश्रम करने की क्षमता घटती है और वह खोया-खोया रहने तथा भूल जाने की आदत विकसित कर बैठता है। मधुमेह के रोगी को मानसिक थकावट के साथ ही साथ तंत्रिका तंत्र(नर्वस सिस्टम) संबंधी विसंगतियों का भी सामना करना पड़ता है क्योंकि मधुमेह का घातक प्रहार शरीर के अन्य अंगों के साथ ही साथ नर्वस सिस्टम पर भी होता ही है।

मधुमेह के रोगी को यौन जीवन में भी विसंगतियों का सामना करना पड़ता है। मधुमेह से ग्रस्त

स्त्रियों में जहां ठण्डापन आ जाता है वहीं पुरुषवर्ग में नपुंसकता और यौन दुर्बलता आ जाने की प्रबल संभावना रहती है। मधुमेह के प्रभावों का शरीर पर विविध रूप से इतना अधिक प्रभाव पड़ता है कि वह सदैव किसी न किसी बीमारी से ग्रस्त रहता है।

मधुमेह के उपचार के विषय में आज से सत्तर वर्ष पूर्व **दो कैनेडियन वैज्ञानिकों फ्रैड्रिक बेन्टिंग एवं चार्ल्स बैस्ट द्वारा मानव शरीर में स्थित पैंक्रियास ग्रंथि से इंसुलीन अलग कर यह सिद्ध किया था कि मधुमेह के रोगी को इन्सुलीन की उचित मात्रा दी जाय तो उसके रक्त में स्थित शर्करा की मात्रा कम हो जाती है।** इन्सुलीन की खोज द्वारा मधुमेह की गंभीरता में तो कमी आयी किन्तु इन्सुलीन भी पर्याप्त उपचार या पूर्ण स्वस्थ करने की विधि सिद्ध नहीं हुई। इन्सुलीन एक प्रोटीन तत्व होने के कारण मुंह के द्वारा ली जानी संभव ही नहीं है, क्योंकि प्रोटीन का यह गुण होता है कि वह पाचक संस्थान में जाते ही पाचक रसों की उपस्थिति से विघटित होने की प्रक्रिया में आ जाती है। दूसरी ओर यह कृत्रिम रूप से निर्मित किया जाना भी नहीं हो सका है। आज भी पूर्व की ही भांति पशुओं के अग्नाशय को लेकर दवा कम्पनियां उसमें से इंसुलीन को प्राप्त करती हैं, जो इंजेक्शन के माध्यम से शरीर में प्रविष्ट कराया जाता है। इन्सुलीन के संदर्भ में नवीनतम शोध से जो रोचक तत्व ज्ञात हुआ है, वह यह है कि वास्तव में मधुमेह के रोगी के शरीर में इंसुलीन उत्पादित होता है और किन्हीं परिस्थितियों में सामान्य व्यक्ति की अपेक्षा अधिक उत्पादित होता है, किन्तु मधुमेह के रोगी के अग्नाशय अथवा वाहिनी नलिकाओं में कुछ ऐसे तत्व विकसित हो जाते हैं, जिससे उसका प्रभाव न्यून अथवा समाप्त हो जाता है।

आयुर्वेदिक उपचार

भारत में मधुमेह का ज्ञान और तत्संबंधी निदान की खोज का प्राचीन इतिहास रहा है। उस युग में शारीरिक विवेचना की इतनी सूक्ष्म जानकारी कैसे प्राप्त की गई यह शोध का विषय है । जामुन की गुठलियों के चूर्ण का उपयोग तो आज प्रायः प्रत्येक भारतीय मधुमेह का रोगी तो करता ही है, कुंदरू की जड़, करेले का रस, लहसुन या प्याज का रस भी कुछ अन्य प्रचलित उपाय हैं। इन सामान्य किंतु प्रायः कम प्रभावशाली उपायों के स्थान पर मैं कुछ अत्यन्त आसान एवं इस रोग को जड़ मूल से नष्ट कर देने वाले उपाय प्रस्तुत कर रहा हूं, जिन्हें सरलता से उपयोग में लाया जा सकता है--

आबू, नैनीताल और हिमालय के अधिकतर भाग में **'मालिंग'** नामक एक पौधा पाया जाता है, जो कि आयुर्वेद के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण पौधा है। इसके फूलों को सुखाकर यदि उसकी गोलियां बनायी जायं और नित्य चने की आकार की एक गोली का सेवन किया जाय तो मात्र बीस ही दिनों में मधुमेह का रोग जड़मूल से समाप्त हो जाता है।

आबू के ही पहाड़ों में एक अन्य महत्वपूर्ण पौधा प्राप्त होता है जिसे **'शर्करान्तक'** कहते हैं, जो लगभग तीन फीट लम्बा होता है, जिसकी पत्तियां नोकदार होती हैं, इसी जाति का एक अन्य पौधा होता है जिसकी ऊंचाई कुछ कम होती है जिसे राजस्थान व गुजरात में **''शक्कर मार''** कहते हैं। इन पौधों की पत्तियों का रस निकाल कर शीशी में रख देना चाहिए तथा मधुमेह के रोगी को दिन में तीन बार एक -एक चम्मच करके पिलाना चाहिए। इस प्रकार नियमित रूप से करने पर चार सप्ताह के भीतर ही भीतर व्यक्ति का रोग पूरी तरह से समाप्त हो जाता है।

आयुर्वेद अपने आप में एक समृद्ध शास्त्र है एवं इन दो मुख्य औषधियों के साथ ही अनेक उपाय भी आयुर्वेद के ग्रंथों में दिये गये हैं। इनकी विशेषता है कि जहां ये पूर्ण रूप से प्राकृतिक स्त्रोतों से प्राप्त औषधियां हैं, वहीं प्रतिप्रभाव अथवा अधिक मात्रा में ले लेने से होने वाले दुष्प्रभावों से सर्वथा मुक्त हैं।

मधुमेह के रोगी के लिए बाह्य रूप से औषधि पर आश्रित रहने की अपेक्षा यह अधिक व्यवहारिक पाया गया है कि वह अपने आहार नियंत्रण एवं समुचित व्यायामों के माध्यम से इसका निदान करे। यह तो इस रोग के नाम से ही प्रकट होता है कि इस रोग के रोगी के लिए मीठे पदार्थ विषतुल्य हैं, अतः रोगी को अपने वजन के अनुरूप ही आहार की एक तालिका बना लेनी चाहिए। अब पहले की अपेक्षा इस धारणा में परिवर्तन आ चुका है कि मधुमेह के रोगी को कार्बोहाइड्रेट्स से युक्त पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिए । मधुमेह के रोगियों में अधिकतर रोगी ऐसे देखे गये हैं जो शारीरिक श्रम के प्रति या तो उदासीन होते हैं या जिनकी कार्य की प्रकृति ही परिश्रम रहित होती है। ऐसे व्यक्तियों को एक ओर संतुलित आहार एवं कम कैलोरी का भोजन ग्रहण करना चाहिए, वहीं वे समुचित एवं परिष्कृत पद्धति के व्यायामों के माध्यम से रक्त में शर्करा का स्तर स्वयं नीचा करके आवश्यक ऊर्जा प्राप्त कर सकते हैं तथा ग्रन्थियों पर पड़ने वाले बोझ को भी कम कर सकते हैं।

■

राशिफल

मेष -

खिन्नता की स्थितियां समाप्त होंगी और हर्ष-उल्लास का वातावरण रहेगा,पारिवारिक सुखों में वृद्धि होगी। आफिस के क्रिया-कलापों से कुछ खिन्नता हो सकती है। मित्र वर्ग का सुख श्रेष्ठ रहेगा। धनागम की स्थिति संतोषजनक नहीं रहेगी अतः जमा पूंजी का व्यय न करें । स्वास्थ्य की ओर से उपेक्षा उचित नहीं।

वृष -

वृष राशि के लिए यह माह मिला - जुला रहेगा। नवीन वस्तुओं के क्रय-विक्रय का विचार छोड़ दें। आंशिक रूप से जमा पूंजी में वृद्धि संभव हो सकेगी। यात्रायें भी संभव हैं किंतु उनसे लाभप्रद हल मिलना कठिन। पड़ोसियों के साथ संयम और मेल-मिलाप से रहें। संतान की ओर से कुछ चिंतित होना संभव। प्रेम-प्रसंग में नवीन अवसर।

मिथुन -

१७ तारीख के बाद स्थितियों में मनोनुकूल परिवर्तन होगा। किसी विशेष प्रिय का कोई सुखद समाचार मिलने से मन हर्षित रहेगा। पारिवारिक स्थितियां उल्लास पूर्ण रहेंगी। अनावश्यक वस्तुओं के क्रय करने में धन का अपव्यय न करें। व्यापारी वर्ग के लिए बिक्री का शीघ्र ही अच्छा समय।

कर्क -

दांपत्य जीवन में कटुता का वातावरण समाप्त होगा। सामाजिक जीवन में नयी चुनौतियां आकर तनाव ग्रस्त कर सकती हैं। धैर्य और आपसी सूझबूझ से कार्य करें। नवग्रह शांति से स्थायी शांति मिलेगी। बच्चों की पढ़ाई पर अभिभावकों को दृढ़ता पूर्वक ध्यान देना होगा।

सिंह -

कटुता की स्थितियों को संयम एवं सूझबूझ से निपटाना उचित। अनावश्यक तनाव की स्थितियों से बचें। पारिवारिक दायित्वों का भार आपके ही ऊपर है, जिन्हें आप ही पूरा करें। व्यापारी वर्ग एवं उद्योग वर्ग के बंधुओं को राज्य पक्ष से कड़ी बाधा मिलने का योग है। ऋण का आदान-प्रदान न करें।

कन्या -

इस माह का द्वितीय पक्ष आपके लिए विशेष स्फूर्तिदायक व सुखदायक है, इसके पूर्व का समय संयम व मनोबल पूर्वक निपटायें। नवीन वस्तुओं का क्रय इसी माह कर डालिये। यदि कोई महत्वपूर्ण कार्य उचित निर्णय न ले पाने के कारण रुका पड़ा है, तो इसी माह के द्वितीय पक्ष में उसे बुद्धिमता पूर्वक अवश्य निपटा दीजिये।

तुला -

पत्नी के स्वभाव में आ गई चिड़चिड़ाहट से मन खिन्न रहेगा। पारिवारिक दायित्वों के बोझ से मन में तनाव रहेगा। मित्र वर्ग का सहयोग भी अपेक्षित नहीं रहेगा। स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। किसी धोखे की संभावित स्थिति से बचने का प्रयास करें। व्यापारी बंधुओं के लिए माल की खरीद का श्रेष्ठ समय।

वृश्चिक -

चोट-चपेट की अप्रत्याशित एवं कष्टपूर्ण स्थितियों से बचने का प्रयास करें। झगड़े एवं कलह की स्थितियां भी संभावित। घरेलू तनाव भी पूरे माह चलता ही रहेगा। मित्र वर्ग का सहयोग सुखद रहेगा। कार्यालय में स्थितियां आपके पक्ष में हो सकती हैं, अधिकारी वर्ग को विश्वास में लेकर कार्य करें। प्रेम प्रसंगों में कुछ गलत-फहमियां संभव।

धनु -

बुद्धिजीवी वर्ग के लिए श्रेष्ठ समय। राज्य पक्ष से बाधाओं के उपरान्त भी मनोबल बना रहेगा। वैवाहिक जीवन में किंचित न्यूनता संभव। स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। विशेष रूप से जिनको हृदय रोग, ब्लड प्रेशर रहता हो। परस्पर मेल-जोल का वातावरण रहेगा। व्यापारी वर्ग सूझ- बूझ से कार्य ले।

मकर -

राज्य पक्ष से चली आ रही कोई बाधा समाप्त होगी। मुकदमे बाजी एवं विवादों में आपके पक्ष में निर्णय रहेगा। पारिवारिक तनाव की स्थितियां दूर होंगी। नवीन कार्यों की योजना एवं किसी श्रेष्ठ धार्मिक अथवा मांगलिक उत्सव का आयोजन भी संभव। अपने धन को व्यर्थ के कार्यों में व्यय करना उचित नहीं।

कुंभ -

जमा-पूंजी में वृद्धि होने से मन में विशेष प्रसन्नता रहेगी। शेयर आदि में धन लगाने के लिए भी उचित अवसर। नवीन क्रय में किसी बिचौलिये पर विश्वास करना हानिप्रद भी हो सकता है।। राज्य पक्ष की बाधायें संभव। पारिवारिक जीवन सामान्य। स्वास्थ्य की उपेक्षा न करें।

मीन -

सुरुचिपूर्ण अभिरुचियों की पूर्ति का उचित समय। धन की स्थिति प्रायः डांवाडोल, अत्यधिक परिश्रम से बचने का प्रयास करें। मादक पदार्थों का सेवन नियंत्रित करें। पारिवारिक जीवन सामान्य। प्रेम प्रसंग संभव। व्यापारी वर्ग के लिए कुछ डांवाडोल का समय,अतः बड़े व्यापारिक समझौते न करें। ■

(पृष्ठ ५६ का शेष भाग)

इस वर्ष पितृपक्ष का प्रारम्भ दिनांक १.१०.९३ से होकर समापन १५.१०.९३ को हो रहा है। गया में सम्पन्न किये जाने वाले जिस तर्पण का उल्लेख ऊपर किया गया वह १५ के स्थान पर १८ दिनों का माना जाता है, अर्थात पितृ पक्ष प्रारम्भ होने से दो दिन पूर्व से लेकर अमावस्या के एक दिन बाद तक। इस विशिष्ट तर्पण को चार भागों में बांट कर किया जाता है --देवतर्पण, ऋषि तर्पण, यम तर्पण एवं पितृ तर्पण।

आकस्मिक दुर्घटना में मृत्यु होने के अतिरिक्त भी कुछ दुखद दशायें मानव जीवन एवं परिवार में घट जाती हैं, जैसे मृतक व्यक्ति का पता न चला हो, वह नदी या समुद्र में डूब गया हो और उसका शव न मिला हो, या ऐसी कोई अन्य दुखद दशा जिसमें व्यक्ति का अन्तिम संस्कार या तो हो ही न पाया हो अथवा आधे अधूरे ढंग से हुआ हो, बिना शास्त्रोक्त नियमों का पालन किये सम्पन्न किया गया है, इस स्थिति में भी व्यक्ति मृत्यु के पश्चात दुखी और संतप्त भटकता रहता है।

ऐसी समस्त अप्रिय स्थितियों के निवारण के लिये **''गारुड़ेय तंत्र''** नामक ग्रन्थ में एक विधि प्राप्त हुई है, जिसे केवल पितृ पक्ष के दिनों में ही सम्पन्न कर मृतक आत्मा को मुक्ति प्रदान की जा सकती है। पितृ पक्ष केवल सामान्य रूप से ब्राह्मण भोजन कराकर, श्राद्ध क्रिया सम्पन्न कर देने के दिन ही नहीं है, वरन इन्हीं दिनों में समस्त पितृ वर्ग एवं जिनकी प्राकृतिक मृत्यु हुई हो उनके लिये भी इस प्रयोग को सम्पन्न करना अति आवश्यक है, क्योंकि इस प्रकार से व्यक्ति अपने पूर्वजों की कृपा और पारिवारिक स्थितियों में श्रेष्ठता प्राप्त करने की स्थितियां निर्मित कर लेता है। वास्तव में किसी भी मृतक पूर्वज के लिए सबसे उपयुक्त श्राद्ध का अर्थ तो यही है कि उसे निम्नतर योनियों से सप्रयास मुक्ति दिलायी जाय, उसके प्रति सम्मान व्यक्त किया जाय, उसको भावनात्मक रूप से तृप्ति दी जाय तथा इस भांति पितृ ऋण से मुक्ति प्राप्त की जाय।

साधना विधि :-

इस विधि की विशेषता यह है कि इसे साधक घर पर ही सम्पन्न कर अपने मृत आत्मीय को निश्चय पूर्वक मुक्ति प्रदान कर सकता है। **पितृ पक्ष के प्रथम दिवस अर्थात १.१०.९३ से आरम्भ होने वाली साधना** को परिवार का कोई भी सदस्य जो वयस्क हो, सम्पन्न कर सकता है, फिर भी पुरुष वर्ग ही इस साधना को सम्पन्न करे तो अधिक उचित होगा, यथा संभव परिवार की स्त्री या अल्प वयस्क बालक इसे सम्पन्न न करें। रात्रि कालीन इस साधना में साधक काले रंग के वस्त्र धारण कर, काले रंग के ऊनी आसन पर दक्षिणाभिमुख होकर बैठे तथा सामने काले रंग के वस्त्र को बाजोट पर बिछा कर लोहे के पात्र में **''भूतभृर्त यंत्र''** को स्थापित करे, उस पर सम्मानपूर्वक तेल में सिन्दूर धोल कर अर्पित करे, काले तिल,अक्षत, जौ व लाल रंग के पुष्प चढ़ायें तथा यंत्र के चारों ओर चार **''मधुरूपेण रुद्राक्ष''** स्थापित कर उनका सामान्य पूजन करें। इस सम्पूर्ण पूजन सामग्री के चारों ओर काजल से एक घेरा भी बना लें तथा एक ओर तेल का बड़ा सा दीपक जला कर, सम्मानपूर्वक, **''समस्त पूर्वजों, पितृवर्ग एवं मातृकुल में जो भी पूर्वज अतृप्त रह गये हों, उनकी मुक्ति के लिए मैं उनका वशंज यह साधना सम्पन्न कर रहा हूं'' कह कर संकल्प लें।** पन्द्रह दिनों की इस साधना में, जिसका **समापन अमावस्या (१५.१०.९३) को होना है,** यथा संभव प्रतिदिन एक निश्चित समय पर ही साधना आरम्भ करें। इस साधना में केवल **''पितृेश्वर माला''** का ही प्रयोग मंत्र जप में किया जाता है।

मंत्र

ॐ सर्व पितृ प्रं प्रसन्नो भव ॐ ।।

इस महत्वपूर्ण साधना में जिस दुर्लभ मंत्र का उल्लेख मुझे गारुड़ेय तंत्र की प्राचीन व हस्तलिखित प्रति में मिला, उसको मैंने ऊपर स्पष्ट किया है। इस मंत्र का प्रतिदिन केवल ११ माला मंत्र जप करना पर्याप्त है। साधना समाप्ति के बाद अर्थात अमावस्या की रात्रि में ही समस्त माला यंत्र आदि को काले कपड़े में बांध कर श्मशान में रख दें।

पन्द्रह दिवसीय इस साधना को करने के उपरान्त साधक स्वयं अनुभव करता है कि उसके मन-मस्तिष्क पर छाया कोई दबाव हट गया है तथा वह पहले की अपेक्षा अधिक प्रसन्न रहने लगा है। इस साधना के उपरान्त भी साधक अपने पूर्वजों के प्रति सम्मान भाव बनाये रखे तथा **जब भी कोई आकस्मिक संकट की स्थिति उसके जीवन में आये तो उपरोक्त मंत्र का केवल ११ बार जप करे। उनका सूक्ष्म रूप में आवाहन कर, उनसे संकट - मुक्ति की प्रार्थना करे।** आपके पूर्वज तो आपके ही होते हैं, वे क्यों नहीं आपके सहायक और सहयोगी होंगे। यदि आप उनका स्मरण और चिन्तन सदैव सम्मान पूर्वक एवं आत्मीय ढंग से करते रहेंगे। ■

पाठकों के पत्र

⊙ **अनंग रति नमस्कार** पढ़कर मैं झूम उठा ऐसी आकर्षक और सरस योग पद्धित पहली बार प्रकाशित करने के लिये मेरी ओर से सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई। इसी तरह की अन्य सरस और आकर्षक योग शैलियों की प्रतीक्षा है।

टी.एस.चौहान
शिमला

⊙ जन्माष्टमी के अवसर पर पत्रिका में प्रकाशित छोटी किंतु सारगर्भित साधना पद्धति की कोई तुलना ही नहीं की जा सकती, मैं सोच ही रही थी कि आप इस बार भगवान श्री कृष्ण से सम्बधित कोई सौन्दर्य एवं आनन्द की साधना पद्धति प्रस्तुत करेंगे। लेकिन आपने तो इन सभी की मूल साधना पद्धति और रहस्य ही पन्नों पर सरलता से स्पष्ट करके रख दिया।

श्रीमती संगीता केसरवानी
इलाहाबाद

⊙ पत्रिका की प्रस्तुति दिन प्रतिदिन अत्यधिक रोचक एवं आकर्षक होती जा रही है। मेरे नगर की स्थिति तो यह हो गई है कि पाठक, पुस्तक विक्रेताओं से सम्पर्क के साथ ही साथ मुझसे मेरे घर पर आकर मिलने के इच्छुक होने लग गये हैं।

कर्मदत्त शर्मा
मण्डी

⊙ पत्रिका का मुख पृष्ठ अगस्त अंक में अत्यन्त सुन्दर और कलापूर्ण बन गया है, भीतर के पृष्ठों की शैली भी दिन प्रतिदिन निखर उठी है। आशा है शीघ्र ही पत्रिका पूर्ण रूप से रंगीन और आकर्षक ढंग से बाजार में अपने लेखों और अपनी शैली के कारण सभी मासिक पत्रिकाओं को पीछे छोड़ देगी।

देवेश रस्तोगी
बुलंद शहर

⊙ जिस प्रकार आपने अगस्त अंक का शीर्षक **"योग से सौन्दर्य"** दिया है, वास्तव में पत्रिका की प्रस्तुति भी उसी ढंग से हुई। चाहे वह योग **अनंग रति नमस्कार** हो या **प्राणवल्लभा किन्नरी** की साधना या **सर्वांग पूर्ण दीक्षा।** पत्रिका का एक - एक पृष्ठ अपने चित्रों और प्रस्तुति के कारण से जीता जागता बन गया है।

डा. पूर्णेश चौबे
कुक्षी, धार

⊙ पत्रिका में जुलाई के अंक में आपने **रति - प्रिया साधना** प्रस्तुत की थी एवं इस अंक में पुरुषों की नपुंसकता के समूल निदान के लिये **अनंग साधना** प्रस्तुत की है। मैं जानना चाहता हूं कि दोनों साधनाओं में से कौन सी साधना अधिक उपयुक्त रहेगी।

हरि विलास झा
पटना

⊙ मैंने अगस्त अंक में **विश्वामित्र प्रणीत हेरम्ब साधना** को पढ़ा और सम्पन्न किया और मुझे साधना के मध्य में हीं तीव्र ज्वर हो आया लेकिन मैंने निर्देशों के अनुसार साधना छोड़ी नहीं और इसके प्रारम्भिक परिणाम भी मुझे आभासित होने लगे, आपने यह नहीं स्पष्ट किया कि साधना के उपरान्त यंत्र एवं मूंगे के तीन टुकड़ों का क्या किया जाय।

शरद शर्मा
इंदौर

⊙ यह प्रसन्नता का विषय है कि आपको साधना में सफलता मिली, आप उन तीनों मूंगों के टुकड़ों को किसी पीपल के वृक्ष के जड़ में समर्पित कर दें एवं यंत्र को पूजा स्थान में स्थापित कर दें

-- सम्पादक

⊙ पत्रिका में दिये जाने वाले सभी स्थाई स्तम्भ अपनी सत्यता के कारण सामान्य जन के मध्य लोकप्रिय हो रहे हैं, चाहे वह माह राशिफल हो या मूलांक के आधार पर भविष्य, अथवा राजनीतिक भविष्य एवं शेयर मार्किट। हम सभी पाठकों की अपेक्षा है हस्तरेखा से संबंधित ज्ञान का लाभ भी प्राप्त हो सके।

दामोदर दधीच
चुरु

⊙ आपकाअगस्त का अंक **'योग से सौन्दर्य'** देखा। पत्रिका के मुख पृष्ठ पर प्रकाशित चित्र ऐसी पत्रिका के विषय के साथ मेल नही खाती तथा अश्लील लगती है। पत्रिका में प्रकाशित कुछ लेखों की भाषा-शैली से भी मुझे घोर आपत्ति है। आशा है आप भविष्य मे ध्यान रखेंगे।

सुरेश गुप्ता
रायगढ़

संभवतः आपको सौन्दर्य को समझने की यथार्थ दृष्टि नहीं है अन्यथा आप को चित्र एवं विषय वस्तु इस प्रकार प्रतीत न होती, यह तो व्यक्ति की भावनाओं पर निर्भर करता है।

-- सम्पादक

⊙ **'सम्मोहन योग'** से संबंधित लेख पढ़ा। मैंने तो इसके पूर्व कभी भी ऐसे किसी योग का नाम नहीं सुना था। ऐसा लगता है कि एक ही विषय को आप बार - बार घुमा फिरा कर व तोड़- मोड़ कर प्रस्तुत कर रहे हैं जिसमें दोहराव खटकता है। क्या आप इसे स्पष्ट करेंगे?

राकेश मित्तल, नई दिल्ली

एक विषय के आंतरिक पक्ष को स्पर्श करने पर उसकेही विविध आयाम संभव हेतेहैंऔर अपनी विषय वस्तु में समान हेने के कारण दोहराव भी लग सकता है किंतु यह त्रुटि नहीं।

सम्पादक

त्राटक विविध स्वरूपों में

त्राटक के सफल अभ्यास के बाद आप यदि किसी जड़ पदार्थ पर भी एकटक देखकर भावना दे दें कि इसे देखने वाला वश में हो जाय तो वैसा ही होगा। त्राटक के कितने भेद हैं? त्राटक कितने प्रकार से किया जा सकता है। त्राटक द्वारा हम सम्मोहन के अतिरिक्त अन्य क्या-क्या लाभ अर्जित कर सकते हैं? त्राटक के सांगोपांग अध्ययन को प्रस्तुत करता यह लेख. . .

साधक को शक्ति चक्र पर अभ्यास करके ही इतिश्री नहीं मान लेनी चाहिए। त्राटक का क्षेत्र तो अत्यंत विस्तृत है। त्राटक न केवल भौतिक उपलब्धियों को वरन् उस से भी आगे बढ़कर उन आध्यात्मिक आयामों को स्पर्श कराने में समर्थ है जो कि मानव जीवन की अनुपमेयता कहे जा सकते हैं। त्राटक की विकसित रूपों की साधना कर तो व्यक्ति बुझे दीपक को जला सकता है, नेत्रों की शक्ति के माध्यम से इस्पात तक पिघला सकता है, चलती हुई गाड़ी या उड़ते हुये वायुयान को रोक सकता है। आज भी हमारे देश में ऐसे योगी विद्यमान हैं, जो इन सब कलाओं में निष्णांत हैं। जिन की आंखों में अग्नि स्फुलिंग है और वे उसके माध्यम से कोई भी असम्भव कार्य करके दिखा सकते हैं।

त्राटक के मुख्यतः तीन भेद हैं निकट त्राटक, दूर त्राटक एवं अन्तर त्राटक।

निकट त्राटक :-

निकट त्राटक में साधक सुखासन में बैठकर सामने किसी सफेद गोल पत्थर पर निरंतर अपलक देखता रहे, जब तक उसकी आंखों में आंसू न आ जाये। उसके बाद मूर्ति पर तदुपरांत दीपक की लौ पर और इसमें भी सफलता मिलने पर नाक की नोंक पर दृष्टि जमाकर अभ्यास किया जाता है। नाक की नोंक पर भी सफलता मिलने के बाद अपेक्षाकृत कठिन क्रिया दोनों भौंहों के मध्य दृष्टि जमानी पड़ती है, जिसे त्रिकुटि अभ्यास कहा जाता है। यह एक कठिन क्रिया है, जिसमें सफलता प्राप्त करने में कई महीने लग सकते हैं, **किंतु इस प्रकार का अभ्यास बत्तीस मिनट तक का हो जाने पर साधक को निश्चित रूप से 'दिव्य दृष्टि' मिल ही जाती है।**

दूर दृष्टि त्राटक :-

दूर दृष्टि त्राटक में साधक प्रथमतः किसी पेड़ की फुनगी, पहाड़ की चोटी, मंदिर के गुम्बद पर दृष्टि जमाता है और आगे के क्रमों में किसी तारे पर या चन्द्रमा पर दृष्टि स्थिर करता है, उसे भूलकर एकाएक सूर्य पर त्राटक करने का प्रयत्न नही करना चाहिए। इसका भी प्रभाव निकट त्राटक के समान ही होता है अर्थात् साधक को दिव्य दृष्टि प्राप्त होती है।

वास्तव में **त्राटक का यह प्रकार कालांतर में सूर्य त्राटक करने की तैयारी है।**

अंतर त्राटक :-

अंतर त्राटक जो कि त्राटक का तीसरा प्रकार है,उसमें साधक को दोनों आंखों को बन्द कर भौंहों के मध्य ध्यान केन्द्रित करना होता है। इसमें साधक को विभिन्न प्रकार के अनुभव होते हैं। **अन्तर त्राटक की दशा साधक के लिए साधना के उच्च स्तर में बहु उपयोगी होती है, क्योंकि इस प्रकार से वह दूरस्थ व्यक्ति को आंख बन्द कर, उसका चित्र मानस में ला, आज्ञा दे सकता है।** विकसित अवस्था में वह आंख बंद कर दूर स्थित किसी भी स्थिति की जानकारी प्राप्त कर सकता है आदि। यह तो एक प्रकार से तृतीय नेत्र खोलने की ही साधना है।

त्राटक पद्धति

त्राटक के तीन प्रकार समझ लेने के बाद यह उपयोगी रहता है कि साधक को त्राटक की विभिन्न पद्धतियों का भी संक्षिप्त ज्ञान हो। त्राटक की नौ पद्धतियां हैं मूर्ति त्राटक, रक्तिम वस्त्र त्राटक, बिंदु त्राटक, प्रतिबिम्ब त्राटक, ज्योति त्राटक,अग्नि त्राटक एवं दृश्य त्राटक तथा सर्वोच्च रूप में सूर्य त्राटक।

मूर्ति त्राटक :-

मूर्ति त्राटक में किसी तीन चार इंच लम्बी मूर्ति को सामने रख कर उसकी आंखों पर त्राटक किया जाता है। यदि उचित मूर्ति उपलब्ध न हो तो किसी चित्र की आंखों पर भी त्राटक कर सकते हैं, किंतु चित्र रंगीन नहीं होना चाहिए । मूर्ति पर त्राटक करने की प्रक्रिया वही है जो निकट त्राटक में होती है।

रक्तिम वस्त्र त्राटक :-

रक्तिम वस्त्र त्राटक में सफेद वस्त्र के बीचों बीच छह इंच लम्बा व छह इंच चौड़ा लाल रंग का रेशमी वस्त्र लगा कर उसे समाने दीवार पर टांग कर लाल वस्त्र के बीचों-बीच में एक सफेद बिंदु लगा देना चाहिए। उस प्रक्रिया में मन को अत्यंत शांत रख कर गंभीरता पूर्वक त्राटक के करने से वह लाल वस्त्र नीला दिखने लगता है, पुनः सफेद बिंदु तीव्रता से चमकता दिखेगा। कभी-कभी वह सफेद बिंदु लुप्त भी हो सकता है। नीला रंग प्रकट होना साधक के आत्म प्रकाश का ही प्रतिबिम्ब है। इस पद्धति से साधक के अन्तर्मन व बाह्य मन का परस्पर सामंजस्य होता है।

बिंदु त्राटक :-

बिंदु त्राटक एक अत्यंत महत्वपूर्ण क्रिया है। इस प्रकार से त्राटक करने पर साधक का बाह्य मन सुप्त हो जाता है एवं अन्तर्मन पूर्ण जाग्रत हो जाता है, जिससे वह विश्व में कहीं भी घट रही कोई भी घटना ईथर के माध्यम से जान सकता है, समझ सकता है इसके बाद पुनः अन्तर्मन सुप्त करके तथा बाह्य जागृत करता है, जिससे वह स्थूल रूप में आकर सभी के समक्ष अपनी बात को स्पष्ट कर सकता है। प्रारम्भ में यह प्रक्रिया लम्बी लग सकती है, किंतु अभ्यास के बाद सम्पूर्ण प्रक्रिया कुछ ही क्षण में होने लगती है। इस त्राटक को तीव्र प्रकाश में नहीं करना चाहिए एवं अभ्यास समाप्त होने पर आंखों को ठण्डे पानी से अच्छी तरह धोना चाहिए।

प्रारम्भ में इस त्राटक को एक ड्राइंग शीट पर काला बिंदु बना कर करते हैं। दूसरी अवस्था में बिंदु के चारों ओर पहले एक दो वर्तुल बनाकर फिर सात वर्तुल बनाकर करते हैं। इन दशाओं में पर्याप्त अभ्यास हो जाने पर साधक को ड्राइंग शीट पर एक इंच लम्बा चौड़ा मिर्च के आकार का काला बिंदु बनाकर अभ्यास करना होता है। यह बिंदु अदृश्य होगा एवं प्रकट होगा जो इस बात का सूचक होगा कि व्यक्ति का अन्तर्मन सुप्त हो रहा है या जागृत हो रहा है।

प्रतिबिम्ब त्राटक :-

यह साधना ऐसी दशाओं के लिए सर्वोत्तम है, जहां व्यक्ति को प्रायः आमने - सामने की बातचीत में लोगों को प्रभावित करना होता हो। इस प्रकार की प्रक्रिया से जो व्यक्ति सम्मोहन सिद्ध कर लेता है, उसकी आंखों में इतनी लपक आ जाती है कि वह यदि किसी जड़ वस्तु पर निगाह डाल दे तो उसके प्रभाव से भी वह सम्मोहित हो सकता है। उदाहरण के लिए वह किसी रूमाल को देख कर भावना (नेत्रों के माध्यम से) दे कि अमुक इसको देखकर सम्मोहित हो जाय तो वह निश्चित रूप से सम्मोहित होगा ही। इसमें ध्यान यह रखना होता है कि वह रूमाल या वस्त्र धुले नहीं, तब ऐसा प्रभाव तीन माह तक पूर्ण प्रभावी रहता है।

इस विधि में आठ इंच लम्बा व छः इंच चौड़ा दर्पण रखकर तीन फीट की दूरी से मध्यम प्रकाश में अपने ही प्रतिबिम्ब के भौंहों के मध्य दृष्टि स्थिर करनी होती है। इस अवस्था में श्वास - प्रश्वास जितनी मंद रखेंगे उतनी ही तीव्रता से सफलता प्राप्त कर सकेंगे। शीघ्र ही प्रतिबिम्ब

अदृश्य हो जाता है और विभिन्न दृश्य दृष्टिगोचर होते हैं। इस साधना में प्रयुक्त दर्पण को साधना के पश्चात किसी महीन मलमल के कपड़े में लपेट एक ओर रख देना चाहिए तथा साधना के अतिरिक्त प्रयुक्त नहीं करना चाहिए। **यह साधना एक और विशिष्टता अपने में समेटे है कि इसके द्वारा हम पशु - पक्षियों को भी केवल नेत्रों के माध्यम से सम्मोहित कर सकते हैं।** इस साधना को करने पर काल का भान नहीं होता, तीन घंटे भी साधना करें तो लगता है कि पन्द्रह या बीस मिनट ही बीते होंगे। इसी से **इसको कालजयी साधना भी कहा गया है।**

ज्योति त्राटक :-

इस प्रकार के त्राटक में साधक को मोमबत्ती की लौ पर त्राटक करना होता है। इसके लिए अंधेरे एकांत कमरे में जहां लौ डगमगाये नहीं, साधक को त्राटक करना होता है। यह एक प्रकार से आगे किये जाने वाले **अग्नि त्राटक का पूर्वाभ्यास** है, इस प्रक्रम में साधक को मोमबत्ती की लौ में विभिन्न व्यक्तियों के चेहरे दिखाई दे सकते हैं।

अग्नि त्राटक :-

यह मूलतः सन्यासियों की साधना है क्योंकि इस साधना में प्रविष्ट होने से पूर्व व्यक्ति को अपनी कामवासना समाप्त करनी पड़ती है। इस साधना में जंगल में जाकर लकड़ी के लट्ठे को जलाकर, उस ज्वाला पर एक घंटे तक त्राटक करना पड़ता है। विशेष दशाओं में गृहस्थ साधक भी गुरु निर्देशन में यदि उचित समझें तो यह साधना संपन्न कर सकते हैं, इस साधना से व्यक्ति की आंखों में ऐसा अग्नि स्फुलिंग आ जाता है, जिससे व्यक्ति जो कुछ भी चाहे जलाकर एक क्षण में भस्म कर सकता है। कहते हैं जिसको यह त्राटक सिद्ध हो जाता है, उसके चारों ओर हर क्षण सिद्ध पुरुष अदृश्य रूप से विद्यमान रहते हैं, जो साधक की रक्षा करते हैं और यथा संभव मदद भी करते हैं।

तारा त्राटक :-

यह दूर त्राटक का ही एक प्रकार है, जिसमें किसी तारे विशेष पर त्राटक किया जाता है। इस त्राटक की विशेषता यह है कि उसके **सिद्ध होने पर, व्यक्ति दूरस्थ जिस किसी भी विषय का चिंतन करता है, वह उसकी आंखों के सामने तुरंत स्पष्ट हो उठता है,** भले ही उसे उसके विषय में पहले से कोई ज्ञान न हो। इसी को शास्त्रों में दूरदर्शन सिद्धि कहा गया है।

दृश्य त्राटक :-

इसका अभ्यास तारा त्राटक के बाद ही किया जाता है। इसमें साधक को सूर्योदय के पूर्व शांत जंगल आदि स्थान पर जाकर किसी वृक्ष की फुनगी को देखने का अभ्यास करना चाहिए। कुछ समय बाद वह वृक्ष की फुनगी दिखाई देनी बंद हो जायेगी और ऐसा लगेगा कि चारों ओर आकाश ही आकाश है तथा आपकी देह अत्यंत हल्की होकर तैर रही है। इस प्रकार की सिद्धि प्राप्त हो जाने के बाद साधक मनोवांछित दृश्य देख सकता है।

सूर्य त्राटक :-

यह त्राटक की सर्वोच्च स्थिति है। व्यक्ति जब अग्नि त्राटक में दक्षता प्राप्त कर ले, तभी उसे सूर्य त्राटक का अभ्यास प्रारम्भ करना चाहिए। सूर्य त्राटक में पहले पानी मे पड़ते हुए सूर्य के प्रतिबिम्ब पर फिर दर्पण में पड़ते प्रतिबिम्ब पर एवं अंत में सीधे सूर्य पर त्राटक करना चाहिए। इसी प्रकार पहले उगते सूर्य पर त्राटक किया जाता है। यदि यह दस सेकेण्ड भी हो जाय तो श्रेष्ठ स्थिति है। सूर्य त्राटक बहुत सोच समझ कर करने का विषय है अन्यथा आंखों की रोशनी भी जा सकती है। **सूर्य त्राटक जिस व्यक्ति का सिद्ध हो जाता है, उसकी आंखों में देखने की किसी की हिम्मत नहीं पड़ सकती।**

इस प्रकार त्राटक के मुख्य प्रकारों का जो वर्णन है, उससे स्पष्ट है कि हमारे योग शास्त्र में एक छोटी सी विद्या ही अपने आप में कितनी सशक्त है। **इस हेतु आवश्यक है कि व्यक्ति अपने अभ्यास की क्रम बद्धता को भंग न होने दे**, क्योंकि एक बार के अभ्यास आरम्भ करने से तंरगों की जो आवृत्ति बनना आरम्भ हो जाती है, वह अभ्यास छोड़ देने पर पुनः प्रारम्भिक स्थिति में चली जाती हैं। ■

जब डूबता जहाज बचा

७ नवम्बर सन् १९५३ की बात है जब एक स्टीमर पर सवार कुछ पर्यटक बम्बई तट से घूमने निकले उन्हे बार -बार ऐसा लग रहा था कि कोई उनके स्टेयरिंग को एक खास दिशा में मोड़ने पर घूमने नहीं दे रहा है और उन्हें ऐसा लग रहा था कि कोई पैरों से थपकी भी दे रहा है, थोड़ी ही देर बाद वे परेशान होकर वापस लौट आये। बाद में उन्हें पता चला कि उस खास दिशा में एक चट्टान से टकरा कर कई स्टीमर दुर्घटना ग्रस्त हुए थे।

तीन वर्ष पूर्व उसी चट्टान से टकरा कर मरे एक स्टीमर ड्राइवर की आदत थी कि वह स्टीमर चलाते समय पैरों से थपकी देता रहता था।

तो क्या . . . . ■

योग से रोग मुक्ति

योगासनों से संबंधित शोध की जानकारी हमने पत्रिका के पिछले अंकों में देने के साथ ही साथ, अगस्त माह का पूरा अंक योग से संबंधित कर विशेषांक के रूप में प्रस्तुत किया, क्योंकि इस युग के अनुरूप है कि व्यक्ति बाह्य रूप से किसी अन्य साधन पर निर्भर रहने की अपेक्षा अपने इस शरीर में निहित ऊर्जा का सदुपयोग कर अपने जीवन को सही रूप से संचालित करे। **योगासनों का केवल यही महत्व नहीं कि उनको करने से शरीर में लचक और सौन्दर्य आता है वरन योगासनों के नियमित प्रयोग से व्यक्ति के स्नायु मंडल एवं तंत्रिका तंत्र में ऐसे परिवर्तन होते हैं, जिससे वह प्रायः कई एक असाध्य रोगों से पूर्णतया मुक्त होते हुए भी देखा गया है ।**

(प्रथम विधि)

योगासनों के वर्णन करते समय प्रायः यही होता है कि कुछ एक प्रचलित आसन जो आज से २०-२५ वर्ष पूर्व की पुस्तकों में दिये गये थे उनको ही ज्यों का त्यों प्रस्तुत किया जाता है, जबकि उनमें भी नित नूतन खोज, उनका परिमार्जन व शोधन होना भी अति आवश्यक है, जिस प्रकार विज्ञान के क्षेत्र में नित नवीन खोज होती रहती है और किसी भी यंत्र का सूक्ष्म रूप प्रस्तुत करने के लिए वैज्ञानिक सतत् सचेष्ट रहते हैं, उसी प्रकार ज्ञान के क्षेत्र में विशिष्ट योगी सदैव सचेष्ट रहकर सूक्ष्म व उन्नत तकनीक प्रस्तुत करते रहते हैं, जिससे अल्प समय में ही समुचित लाभ प्राप्त किया जा सके।

इस बार हमने अपना विषय - वस्तु सौन्दर्य अथवा स्वास्थ्य के स्थान पर रोग विषय से संबंधित की है और यह रोग है-- आज का बहुव्यापी रोग मधुमेह। मधुमेह का अभी तक जो कुछ भी उपचार संभव हो सका है वह है इंसुलीन। । इंसुलीन तो इस रोग के रोग थाम की एक विधि मात्र है। पूर्ण व स्थायी लाभ तो केवल शरीर की सक्रियता और क्रियाशीलता से हो सकता है। इसी बात को ध्यान में रखकर हम यहां दो परिष्कृत एवं पूर्ण लाभ दायक योगासनों को प्रस्तुत कर रहें हैं।

प्रथम विधि :-

सर्वप्रथम सीधे खड़े हो जाइये, अपनी श्वास-प्रश्वास को तेजी से संचालित कर समस्त शरीर को चैतन्य करने की क्रिया करें। इसके पश्चात पहले दांये पैर को यथा संभव आगे की ओर बढ़ाइये एवं उसे संबंधित चित्र में प्रदर्शित रूप से घुटने से मोड़ते हुए बांये हाथ को आगे की ओर सीधा फैलाइये। इसी स्थिति में अपने को स्थिर रखते हुए बांये हाथ की उंगलियों की पोरों से दांये पैर के अंगूठे को स्पर्श कीजिये। इस क्रिया से आपके बांये पैर में खिंचाव आयेगा और वह केवल पंजों पर स्थिर

हो जायेगा। इस स्थिति में तीन मिनट तक रहने का प्रयास कीजिये एवं सीधे खड़े होने के पश्चात कुछ सेकण्ड सामान्य होकर इसी क्रिया को बांये पैर के साथ कीजिये। दोनों ही पांवों से अदल - बदल कर इसी आसन को पांच बार तक ले जाइये, ध्यान रहे कि शरीर पर अधिक दबाव नहीं डालना है। बाद में आसन सिद्ध हो जाने पर इस स्थिति को आप चार मिनट तक बढ़ा सकते हैं।

(द्वितीय विधि)

यह आसन सारे शरीर में एक अपूर्व खिंचाव लाकर जहां एक ओर रक्त में ग्लूकोज की मात्रा का संतुलन बनाये रखता है, वहीं शरीर के अंग-प्रत्यंग में चैतन्यता लाकर, उसमें ग्लूकोज का प्रवेश सहज व सामान्य रूप से देने की क्रिया करता है। घुटने मोड़ने की दशा में जब पैर का भाग घुटनों से दबाव पाता है तो स्वतः ही पैंक्रियास ग्रंथि व पाचक संस्थान में चैतन्यता आती है। जिससे इंसुलीन के नियमन व उत्सर्जन में महत्वपूर्ण लाभ होता है, यदि संक्षेप में कहा जाय तो यह आसन मधुमेह के पुराने व नये रोगियों के लिए और विशेष कर ऐसे रोगियों के लिए जो स्थूल शरीर के हैं, जो कठिन व्यायाम नहीं कर सकते उनके लिये वरदान जैसा ही है। यदि गंभीरता से देखा जाय तो मधुमेह के रोगी के लिए व्यायाम का निर्धारण करना अत्यंत जटिल बात है क्योंकि उसका उपयोग केवल उसी सीमा तक करने को कहा जा सकता है, जहां तक कि उसके रक्त में व्यर्थ बन रही और मूत्र मार्ग के द्वारा शरीर से व्यय हो रही शर्करा का संतुलन हो सके। इसके आगे बढ़कर उसे भारी व कठिन आसन को करने के लिए कहना अव्यवहारिक व अनुचित है। यह आसन मधुमेह के किसी भी रोगी के लिए, चाहे वह किसी भी आयु वर्ग का हो, स्त्री हो या पुरुष हो समान रूप से उपयोगी है। ऐसे व्यक्ति जिन्होंने जीवन में कभी भी व्यायाम न किया हो वे भी इस आसन को सुगमता पूर्वक कर सकते हैं।

द्वितीय विधि :-

मधुमेह के रोगियों के साथ इन्सुलीन की कमी के साथ ही साथ जो दूसरी महत्वपूर्ण बात जुड़ी होती है, वह यह कि उनके शरीर में पाचन की क्रिया सामान्य नहीं होती है, जिससे शरीर को खाद्य पदार्थों में निहित ऊर्जा भली भांति नहीं मिल पाती है। उनकी जठराग्नि भी मंद पड़ जाती है। वे अपच तथा मेद बहुरिका के रोगी भी हो जाते हैं, जबकि मधुमेह रोग के साथ स्थूलता अत्यन्त घातक सिद्ध होती है। मधुमेह का आरम्भ ही शरीर में वजन बढ़ने के साथ-साथ होता है, मधुमेह के रोगी को तो सप्रयास अपनी स्थूलता पर नियंत्रण रखना चाहिए। मधुमेह के रोगी को आहार नियंत्रण की सलाह तो दी ही जाती है। उसके लिए, आहार के साथ ही साथ व्यायाम के द्वारा भी वजन को नियंत्रण में रखना चाहिए। प्रस्तुत विधि इस बात को ध्यान में रख कर विकसित की गयी है।

इस आसन को करने के लिए सीधे खड़े हो जाइये आपके दोनों पैर परस्पर जुड़े हों और प्रथम विधि की ही भांति कुछ देर श्वास प्रश्वास तेजी से लेकर अपने आप को चैतन्य कीजिये। इसके बाद यथा संभव एक झटके के साथ नीचे झुक कर अपने बांये हाथ से दांये टखने को पकड़िये तथा (चित्रानुसार) दांये हाथ को हवा में ऊपर उठाइये,इस दशा में आपका सिर चित्र में दर्शायी स्थिति के समान ही लटका होना चाहिए। इस आसन को प्रारम्भ में दो मिनट तक करने के बाद बढ़ाकर चार मिनट तक किया जा सकता है। इस क्रम को तीन से पांच बार तक दोहरायें।

इस आसन की विशेषता यह है कि इसमें एक झटके से सारे शरीर में रक्त का प्रवाह तेजी से गतिशील हो जाता है। कटिप्रदेश व पेढू पर उचित ढंग से बल पड़ने से आमाशय, पैंक्रियास ग्रंथि, यकृत आदि को स्वाभाविक उत्तेजना मिलती है, जिससे पाचन क्रिया तथा इंसुलीन का निःस्त्राव भली-भांति होने लगता है और रक्त स्थित शर्करा की मात्रा घट जाती है।

उपरोक्त दोनों आसनों को नियमित रूप से करते रहने पर एक माह के अंदर ही अंदर अनुकूल परिणाम सामने आने लगते हैं। व्यक्ति अपनी दशा में खुद ही अंतर पाकर प्रसन्नचित्त रहने लगता है। यह दोनों आसन मधुमेह के रोगियों को ध्यान में लेकर विकसित करने के उपरांत, योगासन में सामान्य रुचि रखने वाले प्रत्येक अभ्यासी के लिए भी समान रूप से उपयोगी हैं। किसी भी आसन को यदि कोई स्वस्थ साधक करता है तो वह उसके लिए सुरक्षा चक्र की भांति उपयोगी सिद्ध होता है।

इस माह के व्रत - पर्व एवं त्यौहार

०९.९.९३	भाद्रपद कृष्ण अष्टमी	कालाष्टमी
१२.९.९३	भाद्रपद कृष्ण एकादशी	कमला दिवस
१४.९.९३	भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी	माह प्रदोष व्रत
१६.९.९३	भाद्रपद कृष्ण अमावस्या	कुहू अमावस्या
१७.९.९३	भाद्रपद शुक्ल द्वितीया	विश्वकर्मा पूजन
१८.९.९३	भाद्रपद शुक्ल तृतीया	हरितालिका तीज
२०.९.९३	भाद्रपद शुक्ल पंचमी	ऋषि पंचमी
२३.९.९३	भाद्रपद शुक्ल अष्टमी	रोग निवारिणी दुर्गा दिवस
२६.९.९३	भाद्रपद शुक्ल एकादशी	पद्मावती सिद्धि दिवस
२७.९.९३	भाद्रपद शुक्ल द्वादशी	भुवनेश्वरी, जयन्ती
२८.९.९३	भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी	अनन्त चतुर्दशी
३०.९.९३	भाद्रपद पूर्णिमा	गुरु चैतन्य दिवस

अष्ट भैरव मंगलम्

आद्यो भैरव भीषणो निगदितः श्री कालराजः क्रमाद् , श्री संहारक भैरवोऽप्यथ रु रुश्चोन्मत्तको भैरव : ।
क्रोधश्चण्ड - कपाल - भैरववरः श्री भूतनाथस्ततो, ह्यष्टौ भैरव मूर्तयः प्रतिदिनं दद्युः सदा मंगलम् ।।

श्री शंकरा चार्य

(पृष्ठ १२ का शेष भाग)

पूज्य गुरुदेव ने इस पत्रिका के प्रकाशन के माध्यम से आप सभी को सम्पूर्ण जीवन की चेतना दी है, नये स्वप्न और आशायें दी हैं, नया व्यक्तित्व दिया है, समाज में धर्म और अध्यात्म को लेकर व्याप्त रुढ़ियों से अलग हटकर जीवन को नई धारणा दी है। जो गुरु गोरखनाथ की परम्परा का ही भाग है।

गुरुवाणी

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका केवल एक मासिक पत्रिका ही नहीं, अपने आप में युग का अंकन है, साहित्य और इतिहास का लेखन है, नव निर्माण की गाथा है। भगवान श्री कृष्ण ने जिस प्रकार से अपने युग में श्रीमद्भागवद गीता लिखकर, समाज को नयी चेतना दी और जिसकी पूर्णता पांच हजार वर्ष बाद आद्यशंकराचार्य के युग में पूर्ण आध्यात्मिकता से आई उसी का क्रम इस पत्रिका में है। भगवान श्रीकृष्ण ने तो मुख्य रूप से गीता में अर्जुन को ही प्रतिबद्ध किया और आद्यशंकराचार्य ने अद्वैत तत्व का ही विवेचन किया, किंतु पूज्यपाद गुरुदेव ने जीवन के सभी पक्षों को एक साथ संजोया है, चाहे वह अध्यात्म की विषय वस्तु हो या साधना पद्धति की, स्वास्थ्य,दर्शन,चिंतन,सौन्दर्य, जीवन की सरसता -- सभी पक्षों को एक साथ संजोया है, क्योंकि जीवन किसी एक पक्ष का ही नाम तो नहीं, यह तो पूज्य गुरुदेव द्वारा रचा गया एक ग्रंथ है। श्री कृष्ण ने जिस प्रकार अर्जुन को सन्नद्ध होने के लिए कहा था उसका व्यवहारिक व सरल मार्ग पूज्य गुरुदेव ने इस पत्रिका के माध्यम से स्पष्ट किया है। यह पत्रिका हमारे मूल स्वर का दर्प और अहंमन्यता है। भारत का स्वर कभी भी दैन्य से भरा नहीं रहा। उदात्त ऋषि परम्परा के गौरव से स्वयं को 'ब्रह्म' घोषित कर पूर्णता से जीवन जिया। यह रो-झींक कर, गिड़गड़ा कर ईश्वराधना तो कालांतर में पनपी।

सिर्फ मैं ही नहीं सिद्धाश्रम के सभी योगी जब उन्हें आप लोगों के हित चिंतन के लिए नितांत अकेले और तिल-तिल कर जलते देखते हैं तो छटपटा उठते हैं। **हमें अपना सिद्धाश्रम में रहना व्यर्थ लगने लगता है -- उस सिद्धाश्रम में, जहां प्रवेश पाने के लिए देवता भी लालायित रहते हैं, क्योंकि हमारे लिये तो जहां हमारे गुरुदेव हैं, जहां निखिलेश्वरा नंद जी हैं -- वहीं सिद्धाश्रम है।** बहुत कुछ है मेरे पास कहने को, अनगिनत स्मरण, अनगिनत स्पर्श, अनगिनत शिक्षाएं और उससे भी ऊपर उठकर उनके मौन सम्भाषण, उनके भ्रूविलास से रचे काव्य, उनके उंगलियों की गति से मिली शिक्षाएं, उनके श्री चरणों को निहार कर मिली आध्यात्मिकता और उनकी फटकारों में छिपा मातृत्व, उनके पदाघातों में मिला पितृत्व, एकान्त के क्षणों में उनकी विशाल -- शून्य में स्थिर आंखों को देखने से जीवन में उतरा गुरुत्व, क्या कुछ नहीं है, हम लोगों की झोली में। हम लोग, आप गृहस्थों से अधिक पूंजीवान हैं, भले ही आप के मापदण्ड दूसरे हों, कभी ऐसा होगा अवश्य कि आप उनके संग बीते क्षणों को याद करेंगे, पुलकित होंगे किंतु तब आपको जीवित जाग्रत गुरु नहीं उपलब्ध होंगे। भारत में कई सम्प्रदाय हैं, जिसमें गुरु ही आधार हैं, वर्षों पूर्व उनकी देह शांत हो गयी है, फिर भी उनके अनुयायी आज भी गर्व से अपने आप को उनका शिष्य बताकर गौरवान्वित होते हैं। आज आप के समक्ष जीवित जाग्रत गुरु हैं किन्तु आप उनकी अभ्यर्थना तो दूर उनको कष्ट ही दे रहे हैं, केवल चीख-चीख कर जय-जयकारा लगाना और दण्डवत प्रणाम कर देना ही विनम्रता नहीं होती। हमें खेद है कि हमारे मध्य गुरुदेव इतने दिन अनुपस्थित रहे। काश! हमें उनकी इतनी सामीप्यता मिली होती तो हम उनसे लुप्त ज्ञान-विज्ञान के अनेक पक्ष समझ सकते, पूर्ण रूप से गुरुमय और ब्रह्ममय हो सकते। अपने आप को पवित्र और उदात्त बनाकर अपने "स्व" को पूर्ण विकसित कर सकते। ये क्षण हमारे साधनात्मक जीवन को सवांर जाते। यह तो भगवान बुद्ध के पश्चात टूटी कड़ी का अगला भाग था कि पूज्यपाद गुरुदेव आपके बीच आये, आपको ज्ञान की क्रमबद्धता बताने और युग के अनुरूप ज्ञान को व्यवस्थित करने। गुरु कभी भी लौकिक अर्थों में अवतरित होते ही नहीं, वह तो केवल जनसामान्य के समक्ष उन्हीं के अनुरूप दिखने के लिए एक गृहस्थ का आवरण मात्र रखते हैं किंतु आपने इस पक्ष की उपेक्षा कर दी

विदा !

हमें आप सभी से कोई घृणा या शिकायत नहीं है, लेकिन खिन्नता अवश्य है कि आप ने उनका सम्मान न कर, उनकी आज्ञा का पालन न कर हमारा क्षण हमसे छीन लिया है, फिर भी आज हम आह्लादित हैं, क्योंकि अब हम सभी सन्यासी शिष्यों के निरन्तर आग्रह से **पूज्यपाद प्रातः स्मरणीय परम हंस स्वामी सच्चिदानन्द जी, जो पूज्यपाद गुरुदेव के गुरुवर एवं सिद्धाश्रम के प्राण व अधिष्ठाता हैं, उन्हें वापस बुलाने के लिए सहमत हो गये हैं। संभवतः कुछ एक माह ही आपके विषमय संसार में व्यतीत करने के बाद.वे पुनः हम सभी के मध्य होंगे।** हम सब पुनः उनके प्राणों में रच-पच कर अपने जीवन को तरंगित कर सकेंगें, ज्ञान व साधना की ऊंचाइयों को प्राप्त कर सकेंगे और जीवन का जो मूल उत्स है, उस तक स्वयं को ले जा सकेंगे। आप सभी के सुखद भविष्य के लिए हम सभी सिद्धाश्रम स्थित योगी जन प्रार्थना करते हैं। आप लोग पता नहीं इस तथ्य को समझेंगे कि नहीं, आप सभी की देह और रोम -रोम से "प्रेम" और "गुरु" शब्द ध्वनित नहीं होता, आपके केवल होंठ बोलते हैं और गुरुदेव को तो रोम-रोम की भाषा ही भाती है। गुरु आपको बहुत मिल जायेंगे। शायद मुक्ति दिलाने वाले सद्गुरु भी मिल जायेंगे लेकिन इतना आग्रह कर अपने पास बिठाने वाले केवल निखिलेश्वरा नंद जी ही मिलेंगे, इतना अधिक प्रेम करने वाले केवल निखिलेश्वरा नंद जी ही मिलेगें, दूसरा कोई नहीं इतना निश्चित जान लीजिए।

-- **किंकर स्वामी** ◆

ऋण मोचन दीक्षा

एक पुरुष के जीवन में सम्भवतः जो सबसे कटु और अपमान जनक शब्द हो सकता है वह है ऋण, और उसे ऋणी कहना ठीक उसी प्रकार है जैसे किसी पुरुष को सबके सामने **'नपुंसक'** कह दिया जाय, कि जब व्यक्ति तिलमिलाकर रह जाता है, किंतु उसके पास कोई उपाय नहीं होता कि वह अपनी श्रेष्ठता, अपना पौरुष और अपने बल को प्रदर्शित कर सके। **वास्तव में ऋणी होना उस क्षण से ही मृत बन जाने की स्थिति है जब कोई व्यक्ति चाहे वह कैसी भी परिस्थितियां हो उनसे बाध्य हो कर ऋण लेने का विचार करता है,** और क्या उसे इस चक्रव्यूह में फंस जाने के बाद सहज ही छुटकारा मिल जाता है? कदापि नहीं। वह तो इसके भेदन के उपाय में एक-एक चक्र करके और अधिक भीतर धंसता जाता है और अन्त में जो उपाय शेष रह जाता है वह होता है पलायन। इस चक्रव्यूह के भेदन का ज्ञान कोई भी नहीं जानता। इस चक्रव्यूह में जो भी अभिमन्यु फंस गया उसकी सारी कर्मठता, सारा शौर्य एक ओर रह जाता है और उसकी नियति चारों ओर से घिर कर लड़ते-लड़ते मर जाना ही शेष होती है, क्योंकि जीवन के इस महाभारत में, इस चक्रव्यूह में भी कई भेद हैं, कई स्तर हैं, गुरु ऋण, मातृ ऋण, पितृ ऋण, पूर्व जन्म कृत कृत्यों ,और धन सम्बन्धी ऋण का होना तो इसका एक बाह्य और लौकिक चक्र मात्र है, जिसे व्यक्ति सम्भवतः अपने बाहुबल से एक बार फिर भी भेद ले, लेकिन जो सूक्ष्म भेद हैं उनका तो उसे ज्ञान ही नहीं ।

कभी इस चक्रव्यूह भेदन के रहस्य समाज में व्याप्त थे, जब गुरु परम्परा ने इस समाज रूपी मां को भेदन के उपाय बताये और वह अपनी गोद में पल रही भावी पीढ़ी को यह ज्ञान देने के पूर्व ही तन्द्रा में चली गयी, और गुरु परम्परा से निःसृत ज्ञान व्यर्थ चला गया, जिसका परिणाम यह रहा कि आगामी पीढ़ियों को मुक्त होने के उपाय,चक्रव्यूह में फंस जाने के बाद निकल आने के उपाय ज्ञात नहीं रहे और व्यक्ति किसी न किसी स्तर पर घिर कर, छटपटा कर मृत्यु को प्राप्त हो गया। देह की मृत्यु ही मृत्यु नहीं होती, अपमान से मिली पीड़ा भी मृत्यु ही है, लज्जा और भय से मुंह छुपा कर जीना भी जीते जी मर जाने के समान है, और नित्य प्रति मृत्यु की पीड़ा भोगना ही है, जबकि दैहिक मृत्यु में तो असह्य पीड़ा बस एक बार ही भोगनी पड़ती है। इस चक्रव्यूह में एक-एक चक्र के साथ कहीं अपमान जुड़ा है तो कहीं तिरस्कार,भय, पीड़ा, निर्धन ता, दरिद्रता, और सैकड़ों पीड़ादायक कौरव इस महाभारत में खड़े ही हैं।

यह हमारे युग का सौभाग्य है, प्रकृति का कृपा कटाक्ष है कि आज हमारे मध्य फिर कोई अलौकिक व्यक्तित्व उपस्थित है, वह लुप्त ज्ञान की परम्परा पुनः प्रस्तुत है, वह मुक्ति का मार्ग और उस पर चलने का साहस देने के लिये कोई युग पुरुष पुनः अवतरित हुआ है, जिनकी एक कृपा से हम जीवन को पुनः संवार सकते हैं और वे हैं 'पूज्यपाद गुरुदेव डा. नारायणदत्त श्रीमाली जी।' जिनके कंठ में ज्ञान की वह लुप्त गंगा पुनः अवतरित हुई है और जिसकी एक धारा है, उनके द्वारा प्रदान की जाने वाली दुर्लभ **'ऋण मुक्ति दीक्षा'** ज्ञान की इस दीक्षा रूपी गंगा में अवगाहन करके बहुत कुछ धोया जा सकता है। मलिनता, खिन्नता, दैन्य, विषाद की कई-कई परतें जो हमारे चेहरों पर चढ़ कर उसे कुरुप और मटमैला बना गई हैं उसे फिर पहले की ज्योत्सना से आभामण्डित किया जा सकता है, **फिर से इस समाज में गर्व पूर्वक, तनाव रहित बन कर सम्मान पूर्वक जीवन जिया जा सकता है — केवल ऋण मुक्ति दीक्षा प्राप्त कर।** अपने आप को निर्भीक, निश्चिंत और चैतन्य बनाकर, जो कभी इस दल-दल में जा फंसने से पूर्व हमारा स्वरूप था। पुनः स्वाभिमान युक्त जीवन जीने का आनन्द लिया जा सकता है। पुनः गर्व से सिर उठाकर और आंखों में आंखें डाल कर बात की जा सकती है। रातों को निश्चिंत होकर नींद ली जा सकती है, और समस्त तनाव व विषाद को एक झटके में समाप्त किया जा सकता है।

यह कोई विज्ञापन नहीं है, यह कोई प्रचार भी नहीं है, यह तो एक चेतना प्रदान करने की क्रिया मात्र है, कि जो कुछ अपने प्रयासों से अपने जीवन में संवार नहीं पा रहे हों, सहजता से नहीं प्राप्त किया जा रहा हो, उसे संवार लिया जाय -- सर्वाधिक सरल और सहज मार्ग दीक्षा प्राप्ति के द्वारा, जिसको ऋण मुक्ति दीक्षा कहा गया है, और जिसके विषय में अनेक विद्वान एक मत से कहने के लिये बाध्य हुए हैं कि वास्तव में यदि **यह दीक्षा सौभाग्य से पूज्य गुरुदेव किसी को प्रदान कर देते हैं तो वह, दूसरे शब्दों में उसके न केवल इस जन्म के वरन जन्म जन्मान्तरों के ऋण, पाप, ताप, अपनी तेजस्विता से नष्ट कर देते हैं।** यह तो सात चरणों मे प्रदान की जाने वाली ऐसी दीक्षा है जो वास्तव में व्यक्ति के जीवन में व्याप्त सात चक्रों के चक्रव्यूह को भेदने की कला प्रदान करती है और व्यक्ति को इस जीवन में पग-पग पर व्याप्त महाभारत में विजय श्री प्रदान करती है।
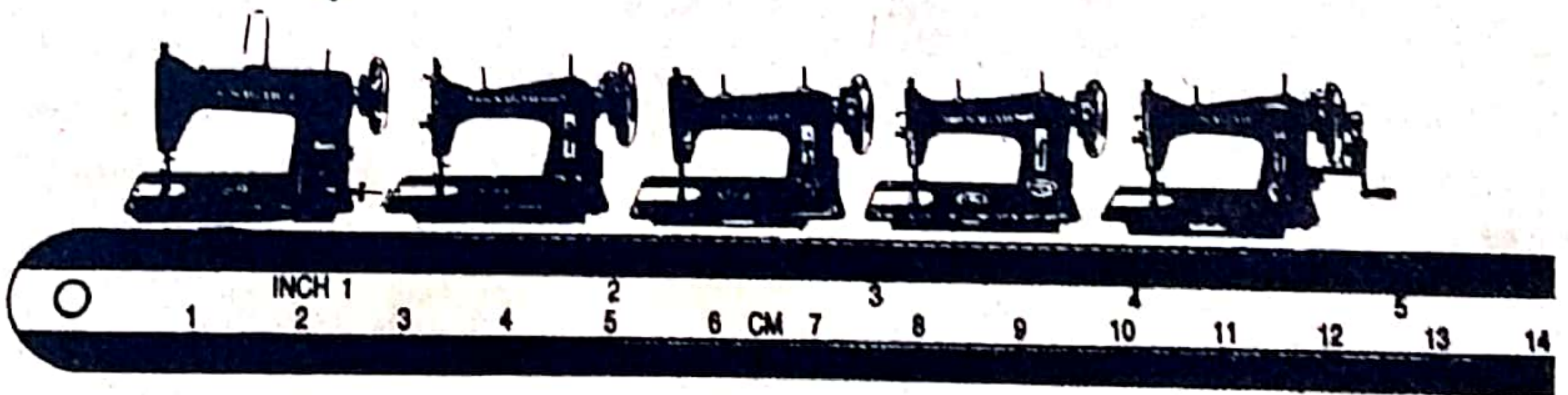
(पृष्ठ ३६ का शेष भाग)

किंतु मूल रूप से सभी एक ही बात का वर्णन करते आये हैं। ऐसे इन सभी व्यक्तियों ने सामान्य रूप से एक जैसी ही स्थितियां बताई हैं कि वे एकाएक हल्के होकर हवा में तैर गये, उन्होंने अपने शरीर को अलग हटकर देखा, उन्होंने अपने संबंधियों से बातचीत करनी चाही, किंतु उनकी आवाज किसी ने नहीं सुनी, उन्होंने सभी को स्पर्श करना चाहा किंतु उनके स्पर्श को कोई समझ नहीं सका। एक प्रकार से वे वायु सदृश्य हो उठे जिससे कि वे किसी को दिखाई पड़ने में अथवा सामान्य व्यक्ति की तरह अनुभव होने में असंभव से हो गये। इस विषय में कुछ ऐसी घटनायें प्रस्तुत हैं, जिसमें व्यक्तियों ने अपनी उस देहातीत दशा का वर्णन किया है- -

जमशेद पुर की बहिन सुभद्रा शर्मा के प्रसव का काल था, प्रसव में अत्यधिक रक्तस्त्राव से वे अचेत हो गईं। पीड़ा से अचेतावस्था में पहुंचने पर उन्हें एकाएक अत्यन्त सुखद अनुभूति का आभास हुआ कि अभी तक वह जिस पीड़ा को सह रहीं थीं उससे उन्हें मुक्ति मिल गई है। इसी स्थिति में वह निरन्तर हल्की होकर उठती जा रहीं थी, और उन्हें स्वच्छ, तेज किंतु चमक रहित, सफेद प्रकाश अपने सामने दिखाई पड़ रहा था, आनन्द से उनकी आंखें मुंद गयी थीं और उन्हें कुछ भी याद नहीं रह गया था कि वह कहां से आ रही हैं, उनका क्या नाम आदि है, और वे किस दशा में थी, अचानक उनके कानों में किसी शिशु के रुदन की आवाज पड़ी और उस तेज स्वच्छ प्रकाश से परे हटकर उन्होंने देखा कि उनकी स्वयं की देह सामने पड़ी है, डॉक्टर चिन्तित मुद्रा में उनकी जांच कर रहे हैं और उनके चेहरे उतरे हुये हैं। एकाएक सुभद्रा बहन को जैसे किसी ने बलात भौतिक शरीर में ढकेल दिया हो, और उन्होंने अपनी देह से एक कोमल शिशु का स्पर्श पाया। एकदम से उनके अन्दर मातृत्व उमड़ पड़ा और चारों ओर से हर्ष मिश्रित ध्वनियां उनके कानों में पड़ने लगीं।

बाद में एक साक्षात्कार में उन्होंने बताया कि जिस क्षण वह देह से अलग हो गई थीं और जैसा कि उन्हें बाद में पता लगा कि मुख्य डॉक्टर ने उन्हें मृत घोषित कर दिया था, उस क्षण उनके अन्दर कोई भी मोह-ममता नहीं रह गई और वह अपनी उस आत्म - स्थिति में परम प्रसन्न थीं, किंतु जिस क्षण उन्हें पुनः देह में प्रवेश मिला, उन्हें पुनः अपने नवजात शिशु के प्रति प्रेम उमड़ आया और वह उसे सम्भालने का उपक्रम करने लगीं। यह पूछे जाने पर कि दोनों में से कौन सी स्थिति श्रेष्ठ है, उनके चेहरे पर असमन्जस भरी मुस्कान आ गई, अपने पुत्र के प्रति मोह को तो शायद ही कोई मां त्याग सके, फिर भी वह बोलीं, ***"वह स्थिति इससे श्रेष्ठ थी।"***

दूसरी मुख्य घटना **अम्बाला के श्री कृष्ण स्वरूप जी** के साथ की है, जो एक व्यवसायी हैं, और दिल्ली आते समय उनकी कार एक ट्रक से जा टकराई थी। कार का इतना बुरा हाल हो गया कि उसे आरी से काट-काट कर उन्हें निकाला गया, उन्हें अस्पताल ले जाया गया और तब तक उनकी सांसें हल्की-हल्की चल रहीं थी। बीच में एक ऐसा समय आया जब इलेक्ट्रोकॉर्डियोग्राम में हृदय की धड़कनों की स्थिति बताने वाला पर्दा सीधी सपाट रेखा देने लग गया था, यह स्थिति प्रायः चार से पांच मिनट के मध्य रही और उसके उपरान्त पुनः स्थिति सामान्य हो गई। लगभग छः महीने इन्टेंसिव केयर यूनिट में रहने के बाद जब श्री कृष्ण स्वरूप पूर्ण रूप से स्वस्थ होकर घर आये, तब उनके आचार -विचार में आश्चर्यजनक परिवर्तन आ चुका था। पहले की शराबनोशी, पार्टियों में आना जाना, रास-रंग सब छूट गया और देर - देर तक अपने कमरे में वे चुपचाप ध्यान मग्न बैठे रहने लग गये। उनके पारिवारिक सदस्य उनके अन्दर आये इस परिवर्तन से हैरान थे। उन्होंने बाद में अपने घनिष्ठ मित्र को यह रहस्य बताया कि दुर्घटना के पश्चात् उन्होंने अनुभव कर लिया कि मृत्यु क्या होती है। उन्होंने जो वर्णन बताया उसके अनुसार उन्हें ऐसा अनुभव हुआ था कि अचानक उनकी देह, उनका अस्तित्व किसी अंधकार में खो गया है, जहां से निकलने के लिये उन्हें बहुत अधिक छटपटाहट और वेदना हो रही है, अचानक उन्हें ऐसा लगा कि जैसे कोई उन्हें अपनी बांह के स्पर्श से किसी खुले स्थान पर तैरा कर ले गया हो / ***सामने उन्होंने नीली आभा देखी और नीली आभा से परे हट कर उन्हें एक विचित्र और काली आकृति दिखाई दी, जिसने अपनी मुख मुद्रा को अमरीकन आदिवासी -- रेड इन्डियन की तरह रंगों और पंखों से सजा रखा है, वह हाथ में भाला तान कर अन्जानी और अस्पष्ट सी भाषा में कुछ कह रही है और धमका रही हो या वापिस भेजने के संकेत दे रही हो।*** श्री कृष्ण स्वरूप ने इसके बाद पुनः अपने आप को उसी गहरे काले आवृत्त में घिरा पाया। इसी उहापोह में कब उन्हें एक-दम से अपनी वायु के समान हल्की देह में पुनः गुरुत्वाकर्षण का

आभास हुआ, यह उन्हें ठीक से याद नहीं। उन्होंने उसी अवस्था में अपने कानों में कई एक व्यक्तियों की भुनभुनाहट सुनी।

मृत्योपरान्त स्थितियों की दशा में शोध कर रहे शोधकर्ताओं का अनुमान है कि श्री कृष्ण स्वरूप ने देहातीत अवस्था में जिस आकृति को देखा, वह उनके अन्दर की विषमताओं को दर्शाने वाली थी। अपने अन्दर के दुर्गुणों और छल को उन्होंने जिस रूप में देखा वह एक मानवाकृति में था। उसका उनके सूक्ष्म मन पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि फिर भविष्य में वे अपने अन्दर गुणकारी परिवर्तन कर बैठे।

तीसरी घटना उत्तर-प्रदेश के जिला सुल्तानपुर के कादीपुर क्षेत्र की है। एक सामान्य ईश्वर भक्त गृहस्थ जो कि पेशे से कृषक था और जिसके पीछे भरापूरा परिवार था, उसकी एक दिन लगभग साठ वर्ष की आयु में सामान्य रूप से मृत्यु हो गई। सामान्य घटना समझ कर परिवार वालों ने अंत्येष्टि का प्रबंध किया और थोड़ी दूर स्थित श्मशान स्थल की ओर प्रस्थान किया। श्मशान स्थल पहुंच कर जब तक लकड़ी आदि का प्रबन्ध हो, तब तक शव को एक पेड़ के नीचे रख कर, सगे-सम्बन्धी भी विश्राम करने को बैठ गये। अचानक वृद्ध के सबसे छोटे पुत्र की निगाह अपने मृत पिता के चेहरे की ओर गई जिस पर मक्खियां आ रही थीं। उसने उन्हें उड़ाने के लिये अपने गमछे से हवा करनी आरम्भ की। हवा करते हुए वह शोक विह्वल होकर उनके चेहरे की ओर देख रहा था तभी उसने पाया कि उसके पिता के होंठ कुछ फड़क रहे हैं, उसे सहसा अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ और उनका फड़कना जारी ही रहा केवल होंठों का फड़कना ही नहीं उनकी पलकों में भी गति आनी आरम्भ हो गयी। यह देखकर उसने अपने बड़े भाइयों को आवाज दी, यह एक असामान्य घटना थी पर सब लोग इस तथ्य से परिचित थे कि वृद्ध मृतक एक अत्यन्त धार्मिक और सच्चरित्र व्यक्ति रहा है, अतः सब लोग उसके पास चले गये। तभी किसी रिश्तेदार ने सलाह दी कि इनके ऊपर पड़े बंधन मुक्त करके देखो और ऐसा करने के कुछ देर पश्चात उनके पूरे शरीर में हलचल आरम्भ हो गई। ***लगभग आधे घंटे के बाद वह वृद्ध यों उठ बैठा जैसे उसे कुछ हुआ ही नहीं हो। इस व्यक्ति ने अपने अनुभवों को इस प्रकार बताया कि जिस क्षण उसकी मृत्यु हुई, उसी क्षण उसने अपने शरीर से निकल कर और सूक्ष्म रूप में स्थित हो कर अपने आपको स्थूल शरीर के पास पाया।*** वह सभी लोगों को भलीभांति देख सुन रहा था जो उसकी मृत्यु पर शोक कर रहे थे। उसे अपने सभी संबंधी अभी भी प्रिय तो लग रहे थे लेकिन अपने इस नये शरीर से इतना प्रसन्न था कि उसे किसी के प्रति मोह-ममता नहीं रह गयी थी, उसे वहीं खड़े-खड़े सामने प्रकाश का अनन्त पुंज दिखाई दे रहा था और ऐसी शीतलता अनुभव हो रही थी जैसे उसने पूरे जीवन में अनुभव नहीं की थी। वह अपने शरीर में लौटना भी नहीं चाह रहा था। उसे ऐसी इच्छा हो रही थी कि वह ऊपर उड़ता चला जाय, इसी आनंन्द में उसे अचेतावस्था आ गई कि तभी उसे ध्वनि सुनाई दी कि उसका बहनोई कह रहा है कि इनकी रस्सियां तो ढीली करो! और तब भान हुआ कि वह पुनः अपनी देह में वापस आ गया है। जैसे उसका कुछ भोग शेष रह गया हो और ईश्वर ने उसे पुनः धरती पर भेज दिया हो।

आज भी यह वृद्ध पूर्ण रूप से स्वस्थ और चैतन्य है, उसकी धार्मिक आस्थायें पहले से भी अधिक गहरी हो गई हैं, अपनी मृत्यु के उपरान्त उसे जो दिव्य अनुभूतियां हुईं उससे प्रारम्भ में तो उसे पुनः सामाजिक और पारिवारिक तालमेल बैठाने में कठिनाईयां अनुभव हुईं, लेकिन धीरे-धीरे उसने समझौता कर दोनों जीवन एक साथ जीने आरम्भ कर दिये हैं।

ऐसे ही अनेक विवरणों से स्पष्ट होता है कि ***मृत्यु के उपरान्त व्यक्ति की जो स्थिति होती है, वह उसके लिये दुखद नहीं सुखद होती है।*** वह उसमें बना रहना चाहता है, लेकिन वह अधिक देर तक उसमें रह नहीं सकता। प्रकृति के चक्र के अन्तर्गत उसे शीघ्र ही नई देह धारण करनी पड़ती है। ***अपने संस्कारों और प्रवृत्तियों के अनुसार ही, यदि यह कहा जाय कि वह किसी गर्भ में जा गिरता है तो उचित रहेगा कि क्योंकि यह उसके हाथ में नहीं होता कि वह कहां जन्म लेगा।*** इसी से हमारी लोक मान्यताओं में सच्चरित्र और वासना रहित जीवन जीने पर बल दिया जाता है, जिससे मृत्यु के उपरान्त अगला जीवन भी तदनुकूल मिल सके।

ड्रेकुला

(१० जून ९३, पंजाब केसरी से साभार)

पेरू की राजधानी लीमा से २०० कि.मी. दूर पिस्को शहर में भयानक खौफ की लहर दौड़ गई जब अफवाह फैली कि शहर में दफनायी गई एक अंग्रेज औरत जो वीभत्स और भयानक ड्रेकुला की पत्नी है, वह कब्र से निकल कर भयानक कहर ढायेगी और दुनिया से बदला लेगी। शहर के दहशत- जदा बासिंदों ने उसके कहर से बचने के लिये अपने दरवाजे और खिड़कियों पर लहसुन की झालरें लटका दी।

Scanned by CamScanner

वर्तमान में जो आपकी पत्नी है उसका पूर्व जन्म में आपसे क्या संबंध था?

एक फ्रांसिसी दार्शनिक का यह कथन अपने आप में कितना अर्थ रखता है " यह महत्वहीन है कि आप किससे विवाह करने जा रहे हैं क्योंकि कल सुबह ही आपको एक दूसरी स्त्री जो मिलेगी!" यदि आज के परिवारों के संबंध में इस बात को सोचें तो यह बात किसी दार्शनिक की हास्यपूर्ण ढंग से की गई एक टिप्पणी मात्र नहीं लगती, बल्कि घर-घर की यही तो सच्चाई होती जा रही है। विवाह के काफी समय पूर्व से एक दूसरे को जान -समझ लेने और बस जान समझ लेने तक ही नहीं, **साल-दो साल प्रेम -प्रसंग चलने के बाद भी ऐसा क्यों होता है कि विवाह होते ही स्थितियां विषम हो जाती हैं? क्यों ऐसा होता है कि बस छः माह बीतते-बीतते परस्पर आकर्षण और माधुर्य समाप्त हो जाता है?** जहां कभी ऐसा लगता था कि एक दिन किसी को देखे बिना नहीं कटेगा, वहीं वह हर पल सामने रहता है या रहती है किंतु आकर्षण व सरसता सूख जाती है। वह परस्पर का आकर्षण ही सूख जाय तो सम्बंधों को ढोने वाली बात रह जाती है, फिर तो मुर्दा शरीर एक दूसरे को ढोते चलते हैं। हांलाकि गृहस्थ जीवन भी चलता रहता है और बच्चे भी पैदा हो जाते हैं लेकिन दिल पर हाथ रखकर देखें तो ये संबंध केवल और केवल दैहिक वासनाओं की पूर्ति करके रह जाते हैं। एक अलिखित समझौता मात्र रह जाता है, एक दूसरे की देह तक का।

आज के समय में यही बात बढ़ते तलाकों का प्रमुख कारण है। एक हालत ऐसी आ जाती है कि मन तो सूख ही जाता है, फिर तन का साथ भी नहीं चल पाता और एक दूसरे को देखने पर वितृष्णा होने लगती है, जिसका आखिरी उपाय होता है तलाक। समाजशास्त्री और विधिशास्त्री इन स्थितियों को लेकर आज हैरत में हैं। उन्हें इसका निश्चित कारण नहीं समझ में आ रहा है। कभी वह मशीनी युग को इसका जिम्मेदार मानते हैं, तो कभी नारी मुक्ति आंदोलन को, कभी पुरुषों के अन्दर बढ़ती नशाखोरी से उत्पन्न नपुंसकता को कारण मानते हैं तो कभी समाज में आ रहे खुलेपन को, उनके निर्धारण के ढंग अपने आप में सत्य हैं। यह सत्य है कि आज तलाकों की बढ़ती संख्या का प्रमुख कारण सामाजिक परिवर्तन है लेकिन यह स्थिति कोई नई नहीं है। फर्क बस इतना आया है कि जहां पहले समाज में सब कुछ दबा - ढका था और तलाक की बात कहा, सुना जाना सामाजिक अपराध माना जाता था, वहीं अब यह सहज और सुलभ हो गया है, लेकिन ऐसा नहीं है कि पहले समाज में पति-पत्नी के बीच बहुत अधिक मधुरता और प्रेम रहता हो।

दूसरी ओर यह भी होता है कि विवाह संबंधों को ढोते चलने के बीच में अचानक कोई अपरिचित स्त्री मिल जाती है और एक क्षण में ही उससे संबंध जुड़ गया लगता है, **ऐसा लगता है कि जरूर इसके पहले इसे कहीं न कहीं देखा है, जरूर इसका चेहरा मेरे मानस में बने किसी प्रतिबिम्ब से मिलता जुलता है या इसकी बोली परिचित लगती है। कोई भूली याद आने-आने को होकर रह जाती है।** सारा तन-मन ठिठक कर खड़ा हो जाता है और सोचने लगता है कि आखिर ऐसा क्यों लग रहा है? इसके पास मुझे ऐसी तृप्ति क्यों मिल रही है, जो दो या चार साल में अपनी पत्नी के साथ प्रगाढ़ संबंध होने पर भी नहीं मिल पायी और फिर सामाजिक बंधन व्यक्ति को आगे बढ़ने नहीं देते लेकिन मन में कसक, और कुछ जानने की इच्छा शेष रह जाती है।

जीवन में जब कभी किसी को ऐसे पल मिलते हैं तब पहली बार वह निरुद्देश्य सी भागती जीवन - यात्रा में ठिठक कर सोचता है कि मैंने जीवन में अब तक क्या पाया है? जब उसे कभी ऐसी तृप्ति का क्षण मिल जाता है, तब वह सोचता है

-- काश! यही तृप्ति अब से ही मेरे जीवन में हो। आम तौर पर तो आदमी के जीवन में ऐसे क्षण आ जाने पर वह कुछ क्षण रुक कर सोचता है, फिर कोई दूसरी लहर आकर इन लहरों को भी अपने साथ समेट, उसे जीवन के उस गहरे समुद्र के बीचों - बीच में पटक देती है और वह उन क्षणों को भूल जाता है। कोई- कोई जो जीवन में कुछ ढूंढ रहे होते हैं, वह रुक कर सोचते हैं कि ऐसा मेरे साथ क्यों हुआ कि उम्र के इतने वर्ष बीत जाने पर, आज पहली बार किसी की एक झलक ने मुझे इतना भर दिया, जो तृप्ति पत्नी के साथ गहन एकान्त के क्षणों में नहीं मिली, वह किसी की एक झलक से ही क्यों मिल गयी।

इसका उत्तर है – अब तक जो सुख जीवन में रहा, वह देह का सुख था। एक ज्वार आया और कुछ घोंघे- सीपी जैसे वृथा वस्तु छोड़कर चला गया हो, लेकिन अब जो पाया वह तो दैव योग से हाथ आ गया कोई मोती है, जिसकी आभा से मन प्राण दोनों स्निग्ध हो उठे हैं। इसमें देह तो कहीं है ही नहीं, क्योंकि इस देह से नीचे जो मन है यह उसकी बात है। **प्रेम व्यक्ति के मन की बात होती है, जबकि काम देह की। काम से देह तक की यात्रा संभव होती है – शरीर से मन तक उतर जाने पर,** और तब पहली बार सोचने की इच्छा होती है कि यह जो मेरी पत्नी है, जिसके साथ मुझे एक छत के नीचे रहते आज आठ - दस वर्ष हो गये और जिससे मेरी दो या तीन संतानें हैं, क्यों नहीं मेरे दिल तक जाकर मुझको छू पाई। व्यक्ति की यही खोज उसे तलाश करने को बाध्य कर देती है, कि उसका दूसरा छोर कहां से जुड़ रहा है। तब उसके लिए समाज के बनाये हुए नियम कोई मायने नहीं रखते, क्योंकि समाज ने नियम बनाये हैं देह के लिए, देह के नीचे मन के लिए और आत्मा के लिए कोई नियम नहीं है, भले ही सामाजिक नियमों में बंधकर उसे खुल कर कह न पायें या जी न पायें। हम जी पायें या न जी पायें, यह एक अलग पक्ष हुआ लेकिन जो **कोई जीवन में कुछ निर्मित करने की आकांक्षा रखते हों, अपने आप को अपने सही व आत्मिक संबंधों से जोड़ कर देखना चाहते हैं, जीवन की वास्तविक तृप्ति का आस्वादन लेना चाहते हैं, वे ऐसे संबंधों को ढूंढ ही लेते हैं,** क्योंकि इन संबंधों में कोई लालसा या व्यापार नहीं है, इनमें कोई लेन - देन नहीं हैं। इनमें तो बस एक दूसरे के होने का अहसास है और यही अहसास ही सही मायने में प्रेम है। प्रेम और ऐसा प्रेम जो व्यक्ति के जीवन को सुगंध से भर दे। वहां फिर कुछ कहने को रहता ही नहीं। जब कभी आंखों के सामने पूर्व जीवन स्पष्ट हो उठे तो फिर कुछ कहने को शेष ही क्या रह गया? कहना - सुनना तो सब पिछले जन्मों में ही हो चुका रहता है। वीणा के बजने के बाद जो मौन शेष रह जाता है, क्या उसमें भी कोई संगीत नहीं होता ? आत्मगत संबंधों की पहचान हो जाने पर ऐसा ही मौन संगीत शेष रह जाता है, इसको सुनने की कला आनी चाहिए।

ऐसा नहीं है कि आम व्यक्ति अपने जीवन में ऐसी स्थिति प्राप्त नहीं कर सकता। एक सामान्य व्यक्ति भी अपने जीवन में ऐसा कुछ ढूंढ सकता है, और लोगों ने ढूंढा भी है। **पूर्व जन्म साधनाओं से व्यक्ति इस तथ्य को पहचान सकता है कि कौन मेरी पत्नी रही है और वर्त- मान जीवन में जो मेरी पत्नी है, उससे मेरा क्या संबंध रहा है? यह सच है कि कोई भी संबंध अनायास नहीं बनते।** कोई भी दो व्यक्ति जीवन में अनायास नहीं मिलते, कहीं न कहीं कोई सूत्र होता ही है, इन्हीं सूत्रों में से एक सूत्र है -- अपने जीवन के इस विशेष पक्ष को पहचानना।

चेतावनी

पत्रिका कार्यालय को लगभग सौ शिष्यों एवं पाठकों के पत्र प्राप्त हुए हैं कि किसी धोखे बाज व्यक्ति ने अपने आप को हिमालय का योगी बताकर एक २० पेज की पत्रिका छापी है, जिसमें वही लेख हैं जो हमारी प्रतिष्ठित पत्रिका **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान** में प्रकाशित हुए हैं। इसमें एक जगह लिखा है कि गिरीश्वरानंद जी हिमालय में रहते हैं और उसने अपने आप को गिरीश्वरानंद बता कर आशीर्वाद छापा है तथा पत्रिका में प्रकाशित यंत्रों के लिए निम्न पते पर धनराशि भेजने का आग्रह किया है

श्री महर्षि वैदिक संस्थान ,गौतम नगर, नई दिल्ली ११००४६

इस प्रकार का प्रकाशन घटियापन है और मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका के लेखों के कापी राइट का उल्लंघन है। पत्रिका अपने सभी पाठकों और शिष्यों को यह कार्य सौंपती है कि इस ओछे कार्य का पर्दाफाश कर हमें बतायें कि ये गिरीश्वरानंद कौन है तथा इस पते पर जो धनराशि भेजी जाती है उसे कौन प्राप्त करता है? **जिससे कि हम उस व्यक्ति पर कानूनी कार्यवाही कर बता सकें कि इस प्रकार की नकल और गलत कार्य के क्या परिणाम हो सकते हैं।** इसी प्रकार बम्बई, शाहदरा, दिल्ली, मेरठ तथा काठमांडू में कई व्यक्ति अपने आप को गुरुदेव श्रीमाली जी का शिष्य बताकर कई लोगों को दीक्षा दे रहे हैं और उनसे दीक्षा शुल्क प्राप्त कर रहे हैं, कि यह गुरुदेव की आज्ञा है।

जबकि गुरुदेव ने पूरे भारत और विदेश में किसी को भी इस कार्य के लिये अधिकृत नहीं किया है यह दीक्षा लेने वालों के साथ धोखा है, इस प्रकार के लोगों को भी पाठक और साधक उचित निर्णय लेते हुए तिरस्कृत कर दण्ड दें और पत्रिका कार्यालय को भी इस प्रकार के लोगों के बारे में सूचित करें।

ध्यान रखें कि दीक्षा तो सद्गुरुदेव द्वारा ही दी जा सकती है।

सम्पादक

रहस्य - रोमांच विशेषांक : दीक्षा व सामग्री परिशिष्ट

पत्रिका- पाठकों की विशेष सुविधा को ध्यान में रखते हुए, पत्रिका में प्रकाशित प्रत्येक साधना में संबंधित सामग्री की व्यवस्था करने का अथक प्रयास किया जाता है, दुर्लभ एवं कठिनाई से प्राप्त होने वाली सामग्री को उचित न्यौछावर पर उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जाती है, तथा साधना से संबंधित दीक्षा की विशेष व्यवस्था भी की जाती है।

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
सिद्ध चण्डी यंत्र	२४	३३०/-
अघोर सदाशिव त्रिपुरारीयंत्र	२७	१५००/-
इन्द्राणी कृत प्रिय दृश्य यंत्र	२६	३३०/-
पूर्व जन्म दृश्य माला	२६	१५०/-
हनुमान गुटिका	३०	१५०/-
भूत डामर यंत्र	३३	३००/-
काली हकीक माला	३३	२४०/-
शुभांगी रंजिनी यंत्र	४२	३००/-
रति माला	४२	२४०/-
महा गणपति यंत्र	४४	२४०/-
श्री फल	४४	३०/-
मूंगे की माला	४४	१५०/-
गणेश गुटिका	४४	१००/-
लक्ष्मी फल	४६	१००/-
सिद्धिप्रद रुद्राक्ष	४८	१००/-
भूतभृर्त यंत्र	६३	२४०/-

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
मधुरूपेण रुद्राक्ष	६३	१००/-
पितृेश्वर माला	६३	२४०/-
दीक्षा		
मनोवांछित गर्भ चयन दीक्षा	२२	२१००/-
ऋण मोचन दीक्षा	३१	२१००/-
अघोर दीक्षा	३४	१५००/-
भविष्य जन्म दीक्षा	३६	२१००/
ऋण मोचन दीक्षा के सात चरण	७२	
प्रथम चरण		५०००/-
द्वितीय चरण		१००००/-
तृतीय चरण		१५०००/-
चतुर्थ चरण		२००००/-
पंचम चरण		२५०००/-
षष्टम चरण		३००००/-
सप्तम चरण		३५०००/-

चेक स्वीकार्य नहीं होंगे।

ड्राफ्ट किसी भी बैंक का हो, वह **''मंत्र शक्ति केन्द्र''** के नाम से बना हो, जो जोधपुर में देय हो।

मनिऑर्डर या ड्राफ्ट भेजने का पताः-

मंत्र शक्ति केन्द्र, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी,जोधपुर-३४२००१(राज.),टेलीफोन : ०२९१-३२२०६

दीक्षा के लिए पहले से ही समय एवं स्थान तय कर अनुमति लेकर ही आवें

३०६,कोहाट इन्क्लेव,नई दिल्ली, टेलीफोन : ०११-७१८२२४८

सम्पादक मण्डल

मुख्य सम्पादक - श्री नन्द किशोर श्रीमाली

सह संपादक - डॉ. श्यामलकुमार बनर्जी,कृष्ण मुरारीश्रीवास्तव,गुरुसेवक

प्रकाशन स्थान :- ३०६,कोहाट इन्क्लेव,नई दिल्ली, टेलीफोन : ०११-७१८२२४८

मुद्रक एवं मुद्रण स्थान - नवशक्ति प्रिंटर्स, J.३६, उद्योग नगर, दिल्ली-४१

स्वामित्व, प्रकाशक , मुद्रक - श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली , द्वारा - नवशक्ति प्रिंटर्स, जे-३६,उद्योग नगर, दिल्ली - ११००४१ से मुद्रित